हिंदी

जोतिराव फुले

गुलामगिरी

अनुवाद गगनदीप सिंह

PUBLISHERS

गुलामगिरी

गुलामगिरी

ज्योतिराव गोविंदराव फुले

अनुवाद
गगनदीप सिंह

यूनिक्रिएशन पब्लिशर्स
चंडीगढ़ | कुरुक्षेत्र | दिल्ली

SLAVERY.

(IN THS CIVILISED BRITISH GOVERNMENT
UNDER THE CLOAK OF BRAHMANISM)

EXPOSED BY

JOTIRAO GOVINDRAW FULE

(ब्राह्मणी धर्माच्या आडपडद्यांत)

गुलामगिरी.

(सुधारल्या इंग्लिश राज्यांत.)

हें लहानसें पुस्तक

जोतीराव गोविंदराव फुले

यांनीं

लोक हितार्थ केलें

तें

पुणें वेथें "पुना सिटी प्रेस" छापखान्यांत छापले.

किमत १२ आणे

गरीब शूद्रादिअतिशूद्रांस ६ आणे

(All Rights Reserved.)

[१८७३ सालीं प्रकाशित झालेल्या प्रथमावृत्तीतील मुखपृष्ठाची छायाप्रत]

	गुलामगिरी
लेखक अनुवादक	जोतिराव गोविंदराव फुले गगनदीप सिंह
©	अनुवादक
ISBN	978-81-968383-8-6
संस्करण	प्रथम 2024, (3 जनवरी 2024, सावित्री बाई फुले जंयति)
मूल मराठी रचना स्रोत	महात्मा फुले समग्र वाङ्मय, सातवां संस्करण, नवंबर 2006
प्रकाशक लेआउट व कवर	यूनिक्रिएशन पब्लिशर्स सेक्टर 7 कुरूक्षेत्र, हरियाणा 136188 सोनी सिंह
मुद्रक	21st century Patiala
सहयोग राशि	175 रु.

GULAMGIRI by Jotiba Phule, Translation by Gagandeep Singh

विषय सूची

PREFACE
प्रस्तावना
जोतिबा और धोंडीराव का संवाद
अध्याय 1
(ब्रह्म, उत्पत्ति, सरस्वती, ईरानी यानी आर्य लोगों के बारे में)
अध्याय 2
मत्स्य और शंखासुर के बारे में

अध्याय 3
कच्छ, भूदेव यानी भूपति, क्षत्रिय, द्विज और कश्यप राजा के बारे में
अध्याय 4
वराह और हिरण्यगर्भ के बारे में
अध्याय 5
नरसिंह, हिरण्यकश्यप, प्रल्हाद, विप्र, विरोचन आदि के बारे में...
अध्याय 6
बलीराजा, जोतिबा, मराठे, खंडोबा, महासुभा, नौ खंडों का न्यायी, भैरोबा, भराडी, सात आश्रय, डेरा डालना, रविवार को पवित्र मानना, वामन, पक्ष लेना, विंध्यापर्वत, घट रखना, बलीराजा की मृत्यु, सती होना, आराधी लोग, शिलंगण, चावल का बली, दूसरे बली राजा की भविष्यवाणी, बाणसुर, कुजागरी, वामन की मृत्यु, उपाध्ये, होली, वीर योद्धा, बली-प्रतिपदा, भैयादूज आदि के बारे में
अध्याय 7
ब्रह्मा, ताड़पत्र पर लिखने की शुरुआत, जादू मंत्र, संस्कृत का मूल, अटक नदी के पार जाने पर पाबंदी, घोड़े आदि जानवरों को पहले ब्राह्मण खाते थे, भट, राक्षस, यज्ञ, बाणासुर की मृत्यु, अछूत, धागे के निशान, बीज मंत्र, महार, शूद्र, कुलकर्णी, कुलंबी कुणबी, शूद्रों के देश में सोंवळे (मांगलिक) धर्मशास्त्र , मनु, भट्ट आचार्य शिक्षा, अति भयंकर परिणाम, प्रजापति की मृत्यु, ब्राह्मण आदि के बारे में...
अध्याय 8
परशुराम, मां की हत्या, इक्कीस हमले, दैत्य, रावण की आश्रय में खंडेराव, नौ खंडों की जणाई, सात देवियां, महारों को गले में काला धागा, अति शूद्र, अछूत, मतांग, चंडाल, महारों रौंदना, ब्राह्मणों का गंधर्व विवाह के लिये निषेध, क्षत्रिय बच्चों की हत्या, प्रभु, रामोशी, जिनगर आदि लोग, परशुराम की हार और उसका जान देना, चिरंजीवी परशुराम को निमंत्रण आदि के बारे में.
अध्याय 9
वेद मंत्र, जादू का प्रभाव, वशीकरण, देवता आना, जप, चार वेद, ब्रह्मजाल, नारद मुनि, नए ग्रंथ, शूद्रों के ज्ञान लेने पर बंदीश, भागवत और मनु संहिता में असमानता आदि के बारे में...
अध्याय 10
दूसरा बलीराजा, ब्राह्मण धर्म की फजीहत, शंकराचार्य की बनावटी बातें, नास्तिक मत, निर्दयीता, प्राकृत ग्रंथकार, कर्म और ज्ञान मार्ग, बाजीराव, मुसलमानों से द्वेष और अमेरिकी, स्काच उपदेशकों द्वारा ब्राह्मणों के बनावटीपन का भंडाफोड़ आदि विषय।
अध्याय 11
पुराण सुनाने, झगड़ों के परिणाम, शूद्र संस्थानिक, कुलकर्णी, सरस्वती प्रार्थना, जप, अनुष्ठान, देवस्थान, दक्षिणा, बड़े कुलनामों की सभाएं आदि
अध्याय 12
[पटवारी भट कुलकर्णी, यूरोपीय लोगों के उपनिवेशों की जरूरतें, शिक्षा विभाग के मुंह पर काला

दाग, यूरोपीय कर्मचारियों की अकल गूंगी क्यों होते हैं, आदि के बारे में...।]
अध्याय – 13
[तहसीलदार, कलेक्टर, राजस्व, न्याय और इंजीनियरिंग विभाग के भट कर्मचारी आदि के बारे में।]
अध्याय 14
[युरोपीय कर्मचारियों की निष्क्रियता, ब्राह्मण जमींदारों (खोत व्यवस्था) का वर्चस्व, पेंशन भोगी रिटायर्ड यूरोपीय कर्मचारियों द्वारा गांव की हकिकत जमा कर सरकार को बताने की जरूरत, धर्म और जाति घमंड आदि के विषय में।]
अध्याय 15
सरकारी स्कूल, म्युनिसिपलिटी, दक्षणा प्राईज कमेटी व भट, वर्तमान समाचार पत्रों वालों एकता, शूद्रों के बच्चों को विद्या ग्रहण करने जरूरत नहीं और भटों द्वारा रचे गये षड्यंत्रों के बारे में।
अध्याय 16
शूद्रों को ब्रह्मरक्षासों की गुलामी से इस तरह से मुक्त होना चाहिए

दो शब्द

अंग्रेजों के आने के बाद गैर-ब्राह्मण जातियों के बीच नये-नये वर्गों का विकास हो रहा था। कुछ मध्यम स्तर की जातियों को अंग्रेजों द्वारा खोले गए स्कूलों और ईसाई मिशनरियों के कारण स्कूली शिक्षा प्राप्त होने लगी थी। दरअसल वह उस समय उनके साम्राज्य की जरूरत भी थी। लेकिन इसका असर यह हुआ कि भारतीय नौजवान वर्ग में जनवादी चेतना का प्रसार हुआ। उन्होंने अंग्रेजी स्कूलों में विश्व के विभिन्न देशों के इतिहास, विज्ञान और धर्म के बारे में पढ़ा। उन्होंने भारत में ब्राह्मणवादी सामंतवाद के चलते जातियों में बंटे समाज और यूरोपीय समाज का परस्पर अध्ययन किया। उस समय तक यूरोप पूंजीवादी क्रांति से गुजर चुका था। वहां पर आधुनिक विज्ञान की नींव पड़ चुकी थी। डार्विन, मोरगेन जैसे वैज्ञानिकों के चलते प्राकृतिक और मानव विज्ञान में काफी प्रगति हासिल हो चुकी थी। इसका असर उस समय के पढ़े-लिखे तबकों और सामाजिक सुधार के लिए खड़े हुए महापुरुषों में दिखाई देता है।

18वीं में ईसाई मिशनरी स्कूलों ने प्रभावशाली प्रचार अभियान चलाया। पश्चिम भारत के शहरी केंद्रों में मौजूद सरकारी स्कूलों और मिशन ने उस समय की युवा और छात्र पीढ़ी के विचारों को बहुत शक्तिशाली तरीके से प्रभावित किया था। 1840 में जोतिबा फुले ऐसे ही एक स्कूल में छात्र थे जो कि पुणे में फ्री ऑफ स्कॉटलैंड द्वारा चलाया जा रहा था। इस में विभिन्न जातियों के लोग थे कुछ महार और मांग भी थे लेकिन ज्यादातर पारंपरिक रूप से शिक्षित जाति जैसे किसान, दस्तकार और व्यापारी जातियों के बच्चे थे। जोतिबा की जाति माली थी जो कि एक मध्यम जाति थी और शूद्र श्रेणी में आती थी। उनका पारंपरिक पेशा सब्जी, बगीचा और फूलों की खेती था।[1]

उस समय अपने स्कूल में अपने सहपाठियों के बीच होने वाली बातें और स्कूल व अखबारों के जरिए मिलने वाली शिक्षा फुले की चेतना का स्रोत थे। स्कूल में एक तरह की लीक खिंच चुकी थी। कुछ बच्चे थे जो अपने परिवार में होने वाली रूढ़िवादी, जातिवादी, ब्राह्मणवादी विचारों को सही मानते थे और कुछ शूद्र जातियों से थे जिसने अंग्रेजी किताबें पढ़ ली थी वह इनका विरोध करने लगे थे। - फुले और उनके साथियों के अपने स्कूली दिनों में जो कार्यक्रम किये और जिनमें उन्होंने भाग लिया उनके अंदर शुरू से व्यक्तिगत रूप से सामाजिक सुधार और धार्मिक कट्टरता के समूह बन गए थे. उसके साथियों का समूह एक महत्वपूर्ण समूह के रूप में उभर, जिसका मानना था कि युवा हिंदुओं के अंदर धार्मिक बदलाव अलगाव में रहकर नहीं बल्कि कॉलेजों सोसाइटी, अपने दोस्तों व सहपाठियों के अंदर ग्रुप बनाकर नए दृष्टिकोण पर चर्चा करके आएगा। नए दृष्टिकोण को लागू करने और जातिय नियमों को तोड़ने के लिए अर्ध गुप्त संघ बनाने होंगे। [2] उनका ये आइडिया उनके स्कूल, कॉलेज के दिन या फिर बाद में अपने सामाजिक सुधार के कार्यों में भी दिखाई देता है। वह विशेष तौर पर खास संस्थान को चुनते हैं और अपने विचारों को फैलाते हैं। उनका आंदोलन 1973 में सत्यशोधक समाज की स्थापना के बाद एक व्यापक और खुले आंदोलन का रूप लेता है। अंत में वह महाराष्ट्र के लड़ाकू आंदोलनों में से एक बनता है।

दक्षिणी और पश्चिमी भारत में ब्राह्मणवादी सामन्ती वर्चस्व एवं शोषण के विरुद्ध शूद्र तथा अतिशूद्र जातियों को गोलबन्द करते हुए 19वीं सदी के अन्त में गैर-ब्राह्मण आन्दोलन विकसित

हुए। प्रमुखता से ये आन्दोलन जाति उत्पीड़िन के विभिन्न पहलुओं, अन्धविश्वास, जातिगत-सामन्ती विशेषाधिकारों एवं अधिकारों, अनुवांशिक स्वरूप के पदों, संस्कृत पर आधारित शिक्षा आदि के सवालों पर केन्द्रित रहे। इन आन्दोलनों ने जातिगत उत्पीड़न को जाति की उत्पत्ति के नस्ल-आधारित सिद्धान्त का प्रयोग कर ब्राह्मणों की व्याख्या द्रविड़ नस्ल पर कब्जा करने वाले आर्य आक्रान्ताओं के रूप में की।

उस समय दो सबसे ज्यादा शक्तिशाली गैर-ब्राह्मण आंदोलन महाराष्ट्र में फुले और तमिलनाडु में पेरियार के आंदोलन रहे। दोनों ही आन्दोलन सामन्ती, उच्च जाति के अभिजातों के विरुद्ध थे पर अंग्रेज-विरोधी नहीं थे। फुले और पेरियार दोनों ही पश्चिम के उदारपंथी विचारों से प्रभावित रहे। लगभग 20 सालों तक समाज सुधारक के तौर पर कार्य करने के बाद जोतिबा फुले ने 1873 में सत्यशोधक समाज स्थापना की। इसका मुख्य कार्य ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले शोषण के विरुद्ध गैर ब्राह्मण जातियों में चेतना का प्रसार करना था। फुले खुद मध्य जाति से थे और मिशनरी स्कूल में शिक्षित हुए थे। लेकिन उन्होंने अपनी गतिविधियां केवल अपनी जाति तक सीमित नहीं रखी बल्कि बहुत सारी गैर-ब्राह्मण जातियों में अपने आंदोलन का प्रसार किया।[3]

फुले ने अपने प्रयास मुम्बई की जनता के उत्पीड़ित तबकों मजदूर वर्ग पर और पुणे तथा आसपास के किसानों एवं अछूत तबकों के बीच केन्द्रित किये। लोकप्रिय, तीखा प्रयास करने वाली शैली और भाषा का प्रयोग करते हुए अपने गीतों, पुस्तिकाओं तथा नाटकों के जरिये फुले ने 'शेटजी-भटजी' वर्ग (सूदखोर-व्यापारी और पुजारी वर्ग) के उन तौर-तरीकों का पर्दाफाश किया जिनसे वे सर्वसाधारण लोगों, खास कर किसानों को ठगते थे।

उनके सत्यशोधक समाज ने ब्राह्मण पुजारियों को बुलाकर आयोजित किये जाने वाले परम्परागत विवाह समारोहों को नकार दिया, ऐसे नाइयों की हड़ताल का नेतृत्व किया जिन्होंने विधवाओं के सिर के बाल छीलने से इन्कार किया था, स्त्रियों के लिए स्कूल, परित्यक्ता स्त्रियों के लिए आश्रय-स्थल, अछूतों के लिए स्कूल शुरू किये और पीने के पानी के कुँओं को अछूतों के लिए खुला कर दिया। फुले के मार्गदर्शन में 1890 में एनएम लोखण्डे ने मुम्बई के सूती कपड़ा मिल मजदूरों का पहला सुधारवादी संगठन खड़ा किया जिसे 'मिल हैण्ड्स एसोसियेशन' (मिल में काम करने वालों की सभा) कहा गया। फुले ने किसानों के बीच आधुनिक कृषि को प्रोत्साहन दिया, नहरों का पानी इस्तेमाल न करने के अन्धविश्वास के विरुद्ध संघर्ष किया, इसका प्रयोग करने के लिए खुद जमीन खरीदी और उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने सहकारिता गठित करने की पहल का दिलोजान से समर्थन किया और दरअसल सत्यशोधक समाज के कार्यक्रम में यह सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में शामिल रहा। मराठी शूद्र किसानों के पुनर्जागरण के प्रतीक के तौर पर शिवाजी का प्रयोग करने वालों में फुले पहले व्यक्ति रहे। उन्होंने मराठी में शिक्षा देने और प्रशासन में अनुवांशिक पदों का खात्मा करने के लिए संघर्ष किया। फुले का जनवादी नजरीया और राष्ट्रीयतावादी भावना रही, जिसके कारण किसानों के प्रति उनका झुकाव सुसंगत रहा। लेकिन उत्पीड़न के स्रोत को अँग्रेजों की औपनिवेशिक नीतियों और उनके द्वारा स्थापित अर्द्ध-सामन्ती उत्पादन प्रणाली में भी न देख पाने के कारण उनका यह कार्यक्रम ब्राह्मणवाद और शेटजी-भटजी वर्ग (व्यापारी-पुजारी वर्ग) द्वारा शोषण के खिलाफ लड़ने तक सीमित रहा। सत्यशोधक समाज का कार्यक्रम उभरते किसानों के हित को दर्शाता रहा।

फुले के देहान्त के बाद सत्यशोधक समाज अहमदनगर, सातारा, कोल्हापुर जिलों में कायम

रहा और बेरार क्षेत्रके अमराबती में भी फैला। सत्यशोधक समाज की 'तमाशा' टोलियों के प्रचार के परिणामस्वरूप 1921-22 में सातारा में और 1930 के दशक में बुल्ढ़ाना में जमींदारों के खिलाफ किसानों के विद्रोह हुए। अपने ओजस्वी नेता आनन्द स्वामी के नेतृत्व में किसानों ने लगान में कटौती की मांग की, ब्राह्मणों एवं उनके भगवानों को लांछित किया, सूदखोरों तथा व्यापारियों पर हमला बोला, अँग्रेजों के कोषागार लूट लिये और पुलिस थानों पर हमले किये। वास्तव में उन्होंने देहाती इलाकों में सामन्ती प्राधिकार पर तथा अँग्रेजों पर भी हमला किया। इस प्रकार उन्होंने सामन्तवाद-विरोधी तथा साम्राज्यवाद-विरोध चेतना जगायी। गैर-ब्राह्मणों के जमींदार तबकों ने इन गतिविधियों का कोई समर्थन नहीं किया, बल्कि इनकी निन्दा की। इन आन्दोलनों के फलस्वरूप पश्चिम महाराष्ट्रा के गाँवों से जमींदारों का व्यापक पैमाने पर पलायन हुआ। इसके अलावा ये आन्दोलन 1940 के दशक के उस आन्दोलन का अग्रदूत भी बने जिसमें विख्यात नाना पाटिल ने 'पत्री सरकार' के नाम से जमींदारों-सूदखोरों के गठजोड़ और बरतानवीं हुकूमत के विरुद्ध जनता की समानान्तर सरकार कायम की थी। बाद में गैर-ब्राह्मण का यह रुझान 'शेतकरी कामगार पक्ष' (किसान-मजदूर पार्टी) और 'लाल निशान पार्टी' में विलीन हुआ और इसके नेता जावलकर तथा नाना पाटिल भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए।

गुलामगिरी...

जून 1873 में जोतीराव फुले ने गुलामगिरी लिखी , जिसमें ब्राह्मण ग्रंथों और शेटजी-भटजी गठजोड़ की तीखी आलोचना की गई थी, जिसने शूद्रों और अति-शूद्रों के दिमाग और शरीर को गुलाम बना लिया था। कुछ महीने बाद, 24 सितंबर को, एक सम्मेलन आयोजित किया गया जहां फुले ने दलित जनता के हितों के लिए समर्पित एक साझा मंच बनाने का प्रस्ताव रखा। गंभीर विचार-विमर्श के बाद, सम्मेलन का समापन एक ऐसे संगठन की स्थापना पर हुआ जिसने आने वाले दशकों में महाराष्ट्रीयन समाज में क्रांति ला दी, उसका नाम था - सत्यशोधक समाज। इसमें पिछड़ी और "अछूत" जातियों और कुछ अन्य धर्मों के व्यक्ति भी शामिल थे। इसके सदस्य ज्यादातर पहली पीढ़ी के पेशेवर, क्लर्क और किसान थे जो गरीबी और जाति-आधारित व्यवसायों से बाहर निकलने में कामयाब रहे थे। सावित्रीबाई फुले, कृष्णराव भालेकर, नारायण मेघाजी लोखंडे, भाऊ कोंडाजी पाटिल, जया कराडी लिंगु, ज्ञानबा कृष्णाजी सासाने और राजू बाबाजी वंजारी कुछ प्रमुख सत्यशोधक थे।[4]

गुलामगिरी में 16 अध्याय हैं और यह किताब संवादात्मक शैली में लिखी गयी है। पुस्तक में धोंडीराव और जोतिबा एक दूसरे से बात चीत करते हैं। सवाल जवाब करते हैं और भारत के इतिहास में जा घुसते हैं।

आज के समय में, संविधान के होते हुए भी कोई इस तरह की बात करने की हिम्मत नहीं कर सकता जो बातें जोतिबा ने इस पुस्तक में की है। वह अपने तर्कों के जरिए ब्राह्मणवाद की धज्जियां उड़ा देते हैं।

सामंतवाद पर आधारित ब्राह्मणवादी जातिवाद ने आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक रूप से गुलाम बनाने के लिए जहां एक तरह भयंकर दमन, हिंसा का सहारा लिया वहीं पर इस को टिकाए रखने के लिए, जातिवाद का वैचारिक और मानसिक आधार कायम करने के लिए,

उसके जनमानस में अंदर तक बैठा देने के लिए धार्मिक रीति-रिवाजों, कर्मकांडों, संहिताओं, वेद और पुराणों का सहारा लिया है। मनुष्य के दिमाग में बिठा दिया गया है कि वह गुलामी ढोने के लिए ही पैदा हुए हैं। ब्राह्मवादी दर्शनशास्त्र पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत के बल पर मानसिक गुलामी को थोपे हुए है। इसी की और जोतिबा फुले इशारा करते हुए कहते हैं कि इन झूठे, कृत्रिम ग्रंथों के कारण ही शूद्रों-अतिशूद्रों को गुलाम बनाया गया है।

जिस तरह से हिंसा और धार्मिक ग्रंथों के दम पर गुलामी थोपी गयी है उसी तरह से उन ग्रंथों का भंडाफोड़ आवश्यक है। अगर इन को धार्मिक ग्रंथ, अंधविश्वास कहकर छोड़ दिया जाए तो बात नहीं बनने वाली। आम जन मानस को कथाओं, कहानियों, अब सिरियलों, फिल्मों के जरिए मानसिक गुलाम बनाया जा रहा है। उसी पुरातन पंथी सोच को नये ढंग से पेस किया जा रहा है, अगर बदलाव के लिए लड़ने वाले, जनता को दासता से मुक्ति दिलाने वालों के पास इन ग्रंथों की काट नहीं होगी, तर्क नहीं होंगे तो वह डगमगा जाएंगे। इस लिए बार बार जोतिबा की पुस्तक ब्राह्मणवाद की आड़ में गुलामगिरी प्रासांगिक बनी हुई है और बनी रहेगी।

इस पुस्तक ने दक्षिण, पश्चिम भारत में अपने समय में क्रांतिकारी भूमिका निभाई और कई जातिविरोधी आंदोलनों का आधार बनी है। आज हिंदी पट्टी को भी ऐसे साहित्य की जरूरत रही है। हिंदी पट्टी में भक्तिकाल के बाद कोई ऐसा साहित्य नहीं रचा गया जो जातिवाद के खिलाफ किसी आंदोलन का आधार बन सके। हमें देश की विभिन्न भाषाओं में मौजूद जातिवाद विरोधी साहित्य के हिंदी अनुवाद की बेहद जरूरत है।

गगनदीप सिंह
3 जनवरी 2024
(सावित्री बाई फुले जन्मदिवस)

---

[1] Caste, Conflict and Ideology Mahatma Jotirao Phule and Low Caste Protest in Nineteenth-Century Western India by Rosalind O'Hanlon pp. 105
[2] Ibd 106-07
[3] Scripting the change, page 36
[4] https://thesatyashodhak.com/satyashodhak-samaj-modern-indias-first-organised-challenge-to-brahmanism

PREFACE

"The day that reduces a man to slavery takes from him the half of his virtue,"

Homer.

"Our system of Government in India is not calculated to raise the character of those subject to it, nor is the present system of education one to do more than over -educate the few, leaving the mass of the people as ignorant as ever and still mere at the mercy of the few learned ; in fact, it is an extension of the demoralizing Brahmin - ridden policy, which perhaps, has more retarded the progress of civilization and improvement in India generally than anything else."

Col. G.J. Haly — On Fisheries in India

"Many ages have elapsed since peculiar resources were afforded to the Brahmins; but the most considerate cosmopolite would hesitate to enroll them amongst the benefactors of the world. They boast of vast stores of ancient learning. They have amassed great riches, and been invested with unbounded power, but to what good end? They have cherished the most degrading superstitions and practiced the most shameless impostures. They have arrogated to themselves the possession and enjoyment of the rarest gifts of fortune and perpetuated the most revolting system known to the world. It is only from a diminution of their abused power that we can hope to accomplish the great work of national regeneration."

Mead s Sepoy Revolt.

Recent researches have demonstrated beyond a shadow of doubt that the Brahmins were not the aborigines of India — At some remote period of antiquity, probably more than 3000 years ago, the Aryan progenitors of the present Brahmin Race descended upon the plains of Hindoostan from regions lying beyond the Indus, the Hindoo Koosh and other adjoining tracts. According to Dr. Pritchard, the Ethnologist they were an off - shoot of the Great Indo -European race, from whom the Persians, Medes, and other Iranian nations in Asia and the principal nations in Europe like -wise are descended. The Affinity existing between the Zend, the Persian and Sanskrit languages, as also between all the European languages, unmistakably points

to a common source of origin. It appears also more than probable that the original cradle of this race being an arid, sandy and mountainous region, and one ill calculated to afford them the sustenance which their growing wants required, they branched off into colonies, East and West. the extreme fertility of the soil in India, Its rich productions, the proverbial wealth of its people, and the other innumerable gifts which this favored land enjoys, and which have more recently tempted the cupidity of the Western nations, no doubt, attracted the Aryans, who came to India not as simple emigrants with peaceful intentions of colonization, but as conquerors. They appear to have been a race imbued with very high notions of self, extremely cunning arrogant and bigoted. Such self - gratulatory, pride - flattering epithets as आर्य, भूदेव etc., with which they designated themselves, confirm us in our opinion of their primitive character, which they have preserved up to the present time, with perhaps, little change for the better. The aborigines whom the Aryans subjugated, or displaced, appear to have been a hardy and brave people from the determined front which they offered to these interlopers. Such opprobrious terms as (शूद्र) Sudra 'insignificant' महारी the great foe अन्तज्य चंडाल etc. with which they designated them, undoubtedly show that originally they offered the greatest resistance in their power to their establishing themselves in the country, and hence the great aversion and hatred in which they are held. From many customs* traditionally handed down to us as well as from the mythological legends contained in the sacred books of the Brahmins, it is evident that there had been a hard struggle for ascendancy between the two races. The wars of Dev and Daitya, or the Rakshas, about which so many fictions are found scattered over the sacred books of the Brahmins, have certainly a reference to this primeval struggle. The original inhabitants with whom these earthborn Gods, the Brahmins, fought, were not inappropriately termed Rakshas, that is the protectors of the land. The incredible and foolish legends regarding their form and shape are no doubt mere chimeras, the fact being that these people were of superior stature and hardy make. Under such leaders as Brahma, Parshuram and others the Brahmins waged very protected wars against the original inhabitants. They eventually succeeded in establishing their supremacy and subjugating the aborigines to their entire control. Accounts of these conquests, enveloped with a mass of incredible fiction, are found in the books of the Brahmins. In some instances they were compelled to emigrate, and in others wholesale

extermination was resorted to. The cruelties which the European settlers practiced on the American Indians on their first settlement in the new world, had certainly their parallel in India on the advent of the Aryans and their subjugation of the aborigines. The cruelties and inhuman atrocities which Parshuram committed on the Kshetrias, the people of this land, if we are to believe even one tenth of what the legends say regarding him, surpass our belief and show that he was more a fiend than a God. Perhaps in the whole range of history it is scarcely possible to meet with such another character as that of Parshuram, so selfish, infamous, cruel and inhuman. The deeds of Nero, Alaric or Machiavelli sink in to insignificance before the ferocity of Parshuram. The myriads of men and defenseless children whom he butchered simply with a view to the establishment of his coreligionists on a secure and permanent basis in this land, is a fact for which generations ought to execrate his name, rather than deify it.

This, in short, is the history of Brahmin domination in India. They originally settled on the banks of the Ganges whence they gradually spread over the whole of India. In order, however, to keep a better hold on the people they devised that weird system of mythology, the ordination of caste, and the code of cruel and inhuman laws, to which we can find no parallel amongst other nations. They founded system of priest craft so galling in its tendency and operation, the like of which we can hardly find anywhere since the times of the Druids. The institution of Caste, which has been the main object of their laws, had no existence among them originally. That it was an after creation of their deep cunning is evident from their own writings. The highest rights, the highest privileges and gifts, and everything that would make the life of a Brahmin easy, smooth going and happy everything that would conserve or flatter their self -pride, were specially inculcated and enjoined, whereas the Sudras and Atisudras were regarded with supreme hatred and contempt, and the commonest rights of humanity were denied them. Their touch, nay, even their shadow, is deemed a pollution. They are considered as mere chattels, and their life of no more value than that of meanest reptile; for it is enjoined that if a Brahmin, kill a cat or an ichneumon, the bird chasha, or a frog or a dog, a lizard, an owl, a crow or a Sudra" he is absolved of his sin by performing the चंद्रायण प्रायश्चित, a fasting penance, perhaps for a few hours or a day and requiring not much labour or trouble. While for a Sudra to kill a Brahmin is considered the most heinous

offence he could commit, and the forfeiture of his life is the only punishment his crime is considered to merit. Happily for our Sudra brethren of the present day our enlightened British Rulers have not recognized these preposterous, inhuman and unjust penal enactments of the Brahmin legislators. They no doubt regard them more as ridiculous fooleries than as equitable laws. Indeed, no man possessing even a grain of common sense would regard them as otherwise. Any one, who feels disposed to look a little more into the laws and ordinances as embodied in the Manava Dharma Shastra and other works of the same class, would undoubtedly be impressed with the deep cunning underlying them all. It may not, perhaps, be out of place to cite here a few more instances in which the superiority or excellence of the Brahmins in held and enjoined on pain of Divine displeasure.

The Brahmin is styled the Lord of the Universe, even equal to the God himself. He is to be worshipped, served and respected by all.

A Brahmin can do no wrong.

Never shall the King slay a Brahmin, though he has committed all possible crimes.

To save the life of a Brahmin any falsehood may be told. There is no sin in it.

No one is to take away anything belonging to a Brahmin.

A king, though dying with want, must not receive any tax from a Brahmin, nor suffer him to be afflicted with hunger or the whole kingdom will be afflicted with famine.

The feet of a Brahmin are holy. In his left foot reside all the तीर्थ (holy pilgrimages) and by dipping which into water the makes it as holy as the waters at the holiest of shrines.

A Brahmin may compel a man of the servile class to perform servile duty, because such a man was created by the almighty only for the purpose of serving Brahmins.

A Sudra, thought emancipated by his master, is not released from state of servitude; for, being born in a state which is natural to him by whom can he be divested of his natural attributes ?

Let a Brahmin not give temporal advice nor spiritual consel to a Sudra.

No superfluous accumulation of wealth shall be made by a Sudra, even though he has the power to make it, since a servile man who has amassed riches becomes proud and by his insolence or neglect he gives pain even to

Brahmins.

If a Sudra cohabit with a Brahminee adultrees, his life is to be taken. But if a Brahmin goes even unto the lawful wife of a Sudra he is exempted from all corporal punishment.

It would be needless to go on multiplying instances such as these. Hundreds of similar ordinances including many more of a worse character than these can be found scattered over their books. But what can have been the motives and objects of such cruel and inhuman Laws? They are, I believe, apparent to all but to the infatuated, the blind and the self - interested. Anyone who runs may even read them. Their main object in fabricating these falsehoods was to dupe the minds of the ignorant and to rivet firmly on them the chains of perpetual bondage and slavery which their selfishness and cunning had forged. The severity of laws as affecting the shudras, and the intense hatred with which they were regarded by the Brahmins can be explained on no other supposition but that there was, originally between the two, a deadly feud, arising as we have shown above, from the advent of the latter into this land. It is surprising to think what a mass of specious fiction the interlopers invented with a view to hold the original occupiers of the soil fast in their clutches, and rule securely for ages yet to come through the means of their credulity. Anyone who will consider well the whole history of Brahmin domination in India, and the thralldom under which it has retained the people even up to the present day, will agree with us in thinking that no language could be too harsh by which to characterise the selfish heartlessness and the consummates cunning of the Brahmin tyranny by which India has been so long governed. How far the Brahmins have succeed in their endeavors to enslave the minds of the Sudras and Atisudras, those of them who have come to know the true state of matters know well to their cost. For generations past they have born these chains of slavery and bondage. Innumerable Bhut writers, with the selfsame objects as those of Menu and others of his class, added from time to time to the existing mass of legends, the idle phantasies of their own brains, and palmed them off upon the ignorant masses as of Divine inspiration, or as the acts of the Deity himself. The most immoral, inhuman, unjust actions and deeds have been attributed to that Being who is our Creator, Governor and Protector and who is all Holiness himself.

These blasphemous writings, the products of the distempered brains of

these interlopers, were received as gospel truths, for to doubt them was considered as the most unpardonable of sins. This system of slavery, to which the Brahmins reduced the lower classes is in no respects inferior to that which obtained a few years ago in America. In the days of rigid Brahmin dominancy, so lately as that of the time of the Peshwa, my Sudra brethern had even greater hardships and oppression practiced upon them than what even the slaves in America had to suffer. To this system of selfish superstition and bigotry, we are to attribute the stagnation and all the evils under which India has been groaning for many centuries past. It will, indeed, be difficult to name a single advantage which accrued to the aborigines from the advent of this intensely selfish and tyrannical sect. The Indian Ryot (the Sudra and Atisudra) has been in fact a proverbial Milch cow. He has passed from hand to hand. Those who successively held sway over him cared only to fatten themselves on the sweat of his brow, without caring for his welfare or condition. It was sufficient for their purposes that they held him safe in their clutches for squeezing out of him as much as they possibly could. The Brahmin had as last so contrived to entwine himself round the Sudra in every large or small undertaking, in every domestic or public business that the latter is by custom quite unable to transact any concern of moment without his aid.

This is even true at the present time. While the Sudra on the other hand is so far reconciled to the Brahmin yoke, that like the American slave he would resist any attempt that may be made for his deliverance and fight even against his benefactor. Under the guise of religion the Brahmin has his finger in everything, big or small, which the Sudra undertakes. Go to his house, to his field or to the court to which business may invite him, the Brahmin is there under some specious pretext or other, trying to squeeze out of him as much as his cunning and wily brain can manage.

The Brahmin despoils the Sudra not only in his capacity of a priest, but does so in a variety of other ways Having by his superior education and cunning monopolized all the higher places of emolument, the ingenuity of his ways is past finding out, as the reader will find on an attentive perusal of this book. In the most insignificant village as in the largest town, the Brahmin is the all in all ; the be all and the end all of the Ryot. He is the master the ruler. The Patel of a village, the headman is in fact a nonentity. The Koolkurnee the hereditary Brahmin village accountant, the notorious quarrel-monger, moulds the Patell accord in to his. He wishes is the temporal and spiritual adviser of

the ryots, the Soucar in his necessities and the general referee in all matters. In most instances he plans active mischief by advising opposite parties differently, so that he may feather his own nest well. If we go up higher, to the Court of a Mamlutdar, we find the same thing. The first anxiety of a Mamlutdar is to get round him, if not his own relatives, his castemen to fill the various offices under him. There actively foment quarrels and are the media of all corrupt practices prevailing generally round about these Courts.

If a Sudra or Atisudra repairs to his Courts the treatment which he receives is akin to what themeanest reptile gets. Instead of his case receiving a patient and careful hearing, a choice lot of abuse is showered on his devoted head, and his prayer is set aside on some pretext or other. Whereas if one of his own castemen were to repait to the Court on the self-same business, he is received with all courtesy, and their is hardly any time lost in getting the matter right. If we go up still higher to the Collector s and Revenue Commissioner s courts and to the other Departments of the Public Service, the Engineer, Educational etc., the same system is carried out on a smaller or greater scale.

The higher European officers generally view men and things through Brahmin spectacles, and hence the deplorable ignorance they often exhibit in forming a correct estimate of them. I have tried to place before my readers in the concluding portions of this book what expedients are employed by these Brahmin officials for fleecing the Coonbee in the various departments to which business or his necessities induce him to resort. Any one knowing intimately the workings of the different departments and the secret springs which are in motion, will unhesitatingly concur with me in saying that what, I have described in the following pages is not one hundredth part of the rogueries that are generally practiced on my poor, illiterate and ignorant Sudra brethren. Though the Brahmin of the old Peishwa school is not quite the same as the Brahmin of the present day, though the march of Western ideas and civilization is undoubtedly telling on his superstition and bigotry, he has not as yet abandoned his time cherished notions of superiority of the dishonesty of his ways. The Beef, the Mutton, the intoxicating beverages stronger and more fiery than the famed some juice, which their ancestors once relished, as the veriest dainties, are fast finding innumerable votaries among them.

The Brahmin of the present time finds to some extent, like Othello, that

his occupation is gone. but knowing full well this state of matters, is the Brahmin inclined to make atonement for his past selfishness ? Perhaps, it would have been useless to repine over what has been suffered and what has passed away, had the present state been all that is desirable. We know perfectly well that the Brahmin will not descend from his self- raised high pedestal and meet his Conbee and low caste brethren on an equal footing without a struggle. Even the educated Brahmin who knows his exact position and how he has come by it, will not condescend to acknowledge the errors of his forefathers and willingly forego the long cherished false notions of his own superiority. At present, not one has had the moral courage to do what only duty demands and as long as this state of matters continues, rect distrusting and degrading sect, the condition of the Sudras will remain unaltered and India will never advance in greatness or prosperity.

Perhaps a part of the blame in bringing matters to this crisis may be justly laid to the credit of the Government. Whatever may have been their motives in providing ampler funds and greater facilities for higher education and neglecting that of the masses. It will be acknowledged by all that in justice to the latter this is not as it should be. It is an admitted fact that the greater portion of the revenues of the Indian Empire are derived from the Ryot s labor- from the sweat of his brow. The higher and richer classes contribute little or nothing to the states exchequer. A well informed English writer states that - "Our income is derived, not from surplus profits, but from capital; not from luxuries but from the poorest necessaries. It is the product of sin and tears."

That Government should expend profusely a large portion of revenue thus raied, on the education of the higher classes, for it is these only who take advantage of it, is anything but just or equitable. Their object in patronising this virtual high class education appears to be to prepare scholars. "Who, it is thought, would in time vend learning without money and without price." "If we can inspire," say they "the love of knowledge in the minds of the superior classes, the result will be a higher standard of morals in the cases of the individuals, a large amount of affection for the British government, and an unconquerable desire to spread among their own countrymen the intellectual blessings which they have received."

Regarding these objects of Government the writer, above alluded to, states that,

"We have never heard of philosophy more benevolent and more utopian. It is proposed by men who witness the wondrous changes brought about in the Western world, purely by the agency of popular knowledge, to redress the defects of the two hundred millions of India, by giving superior education to the superior classes and to them only."

"We ask the friends of Indian Universities to favors us with a single example of the truth of their theory from the instances which have already fallen within the scope of their experience. They have educated many children of wealthy men, and have been the means of advancing very materially the worldly prospects of some of their pupils ; but what contribution have these made to the great work of regenerating their fellowmen ? How have they begun to act upon the masses? Have any of them formed classes at their own homes or elsewhere, for the instruction of their less fortunate or less wise countrymen? Or have they kept their knowledge to themselves, as a personal gift, not to be soiled by contact with the ignorant vulger? Have they in any way shown themselves anxious to advance the general interests and repay philanthropy with patriotism ? Upon what grounds is it asserted that the best way to advance the moral and intellectual welfares of the people is to raise the standard of instruction among the higher classes? A glorious argument this for aristocracy were it only tenable. To show the growth of the national happiness, it would only be necessary to refer to the number of pupils at the colleges and the lists of the academic degree. Each wrangler would be accounted a national benefactor; and the existence of Deans and Proctors would be associated, like the game laws and the ten pound franchise, with the best interests of the Constitution."

Perhaps the most glaring tendency of the Government system of high class education has been the virtual monopoly of all the higher offices under them by the Brahmins. If the welfare of the Ryot is at heart, if it is the duty of government to check a host of abuse, it behoves them to narrow this monopoly, day by day, or as to allow a sprinkling of the other castes to get in to the public service. Perhapas some might be inclineb to say that it is not feasible in the present state of education. Our only reply is that if government look a little less after higher education and more towards the education of the masses, the former being able to take care of itself, there would be no difficulty in training up a body of men every way qualified and perhaps far better in morals and manners.

My object in writing the present volume is not only to tell my Sudra brethern how they have been duped by the Brahmins, but also to open the eyes of Government to that pernicious system of high class education which has hitherto been so persistenly followed and which statesmen like Sir George Campbell, the present Lieutenant Governor of Bengal, with broad and universal sympathies, are findings to be highly mischievous and pernicious to the interests of Government. I sincerely hope that Government will ere long see the error of their ways, trust less to writers or men who look through high class spectactacles and take the glory in to their own hands of emancipating my Sudra brethern from the trammels of bondage which the Brahminas have woven round them like the coils of a serpent. It is no less the duty of such of my Sudra brethern as have received any education to place before government the true state of their fellowmen and endeavor to the best of their power to emancipate themselves from Brahmin thralldom. Let their be schools for the Sudras in every village ; but away with all Brahmin school masters! The Sudras are the life and sinews of the country, and it is to them alone and not to the Brahmins that the Government must ever look to tide them over their difficulties, financial as well as political. If the hearts and minds of the Sudras are made happy and contented the British Government need have no fear for their loyalty in the future.

- Joteerao Phooley

** A most remarkable and striking corroboration of these views is to be found in the religious rites observed on some of the grand festivals which have a reference to Bali Raja, the great king who appears to have regined once in the hearts and affections of the Sudras and whom the Brahmin rulers displaced. On the day of Dushara, the wife and sisters of a Sudra, when he returns from his worship of the Shumi Tree and after the distribution of its leaves, which are regarded on that day as equivalent to gold, amongst his friends, relations and acquaintances, he is greeted, at home with a welcome अला बला जावे बली का राज आवे "Let all troubles and misery go, and the kingdom of Bali come." Whereas the wife and sisters of a Brahmin place on that day in the froeground of the house an image of Bali, made generally of wheaten or other flour, and when the Brahmin returns from his worship of the Shumi Tree he takes the stalk of it, pokes with it the belly of the image and then passes into the house. This contrariety, in the religious customs and usages obtaining amongst the Sudras and the Brahmins and of which many more examples might be adduced can be explained on no other supposition but that which I have tried to confirm and elucidate in these pages.*

प्रस्तावना

ब्राह्मणों का राज कायम होने से लेकर अब तक सैकड़ों सालों से शूद्र अतिशूद्र जनता दुखी और शोषित है, वह तरह-तरह की यातना और मुसिबत झेलते हुए दिन काट रही है, इस किताब का उद्देश्य है कि इस सब की तरफ ध्यान दिया जाए और इस पर विचार किया जाए कि किस तरह से भट-ब्राह्मणों के जुल्मों से आजादी हासिल की जा सकती है। अनुमान है कि हमारे देश में भट लोगों की सत्ता को लगभग तीन हजार साल से अधिक का समय बित चुका है। ये लोग दूसरे देशों से आए और हमारे देश में रहने वाले मूल निवासियों को जीत कर, उन सबको अपना गुलाम बना लिया और उन पर अनेक तरह से क्रूरता पूर्ण शासन लाद दिया। आगे जाकर जब लोगों को यह याद आने लगा कि दूसरे देशों से आकर इस देश के मूल निवासियों को जीत कर गुलाम बनाया गया है तो इन तथ्यों को मिटा दिया गया। लोगों पर अपना दबदबा कायम कर ही उनके हित पूरे हो सकते थे तो इसके लिए तरह-तरह उपाय खोजे गए और वह इस में सफल होते गए, क्योंकि उस समय वह उनकी सत्ता के पूरी तरह गुलाम बन चुके थे। आगे चलकर भटों ने यहां के लोगों को पूरी तरह से ज्ञानहीन बना डाला। इसलिए यहां के लोगों को भटों की चालबाजियां और उद्देश्य लोगों की समझ में नहीं आये। लोगों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए, अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए उन्होंने झूठे ग्रंथ लिखे कि उनको सब कुछ भगवान ने दिया है। इस बात को उन्होंने उस समय के अज्ञानी लोगों के दिमागों में बैठा दिया। उन ग्रंथों में लिखा गया कि भगवान (ब्रह्मा) ने शूद्रों को इसलिए पैदा किया है कि वह हमेशा भटों की सेवा के लिए तैयार रहें, उनकी रजा में ही मजा करें, तभी उनको भगवान मिलेगा, उनको मोक्ष मिलेगा और तभी उनका जीवन सार्थक होगा।

अगर इन ग्रंथों के ऊपर कोई थोड़ा सा भी ध्यान दे तो समझ आ जाएगा कि इनमें सच्चाई कितनी है और क्या ये भगवान द्वारा रचे गए हैं। ऐसे ग्रंथों के कारण ही सर्वशक्तिमान, सारे जग और सारी वस्तुओं के निर्माता परमेश्वर की समदृष्टि बहुत नीच बन गई है, ये जो हमारे समझदारी भट भाई हैं, जिनको भाई कहने में भी बहुत शर्म आती है, क्योंकि इन्होंने शूद्रों-अतिशूद्रों को बहुत दुख दिये हैं, इनको धर्म के कारण ही दुख और शोषण हैं और दुख देना, शोषण करना भाई का धर्म नहीं होता, लेकिन पैदा करने वाले के कारण हमें इनको भाई कहना पड़ता है, फिर भी ये खुले रूप से कहना नहीं छोड़ेंगे, केवल अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए नहीं सोचना चाहिए उनको न्याय अनुरूप भी विचार करना चाहिए। अगर ये ऐसा नहीं करेंगे तो ज्ञानवान अंग्रेज, फ्रेंच, जर्मन, अमेरिकन व अन्य विद्वान लोग इनको पढ़कर स्पष्ट रूप से कहेंगे कि ये पूरी तरह से स्वार्थी हैं, इनको लोगों पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए लिखा गया है और अपने आप को ईश्वर से भी ऊपर बताया गया है। इसके अलावा कई विद्वान अंग्रेजों ने लिखा भी है कि ये झूठे ग्रंथ ब्राह्मण लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए और शूद्र अति शूद्रों को गुलाम बनाने के लिए लिखे हुए हैं। इस प्रकार क्या ईश्वर की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाने का कार्य भटों ने नहीं किया है? जिन शूद्र, अति शूद्र लोगों सहित अन्य लोगों सहित ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया, हर तरह की वस्तुओं का निर्माण कर उसके उपभोग की छूट दी हो, भट लोगों ने उस ईश्वर के नाम पर झूठे ग्रंथ लिख

कर सभी के अधिकार समाप्त कर केवल अपने अधिकार कायम कर लिए हैं।

इस पर हमारा कोई भट भाई सवाल उठा सकता है कि अगर ये ग्रंथ झूठे थे तो तुम्हारे शूद्र अति शूद्र पुरखों ने क्यों इन पर भरोसा जताया, और आज भी क्यों इनको मानते हो? तो इसका उत्तर यह होगा कि आज के प्रगतिवादी दौर में कोई किसी पर जुल्म नहीं कर सकता, आज सभी को अपने विचार स्पष्ट रूप से लिखने, बोलने और प्रकट करने की आजादी है, जिस तरह से अगर किसी इज्जतदार आदमी के नाम से कोई ठग्ग आदमी चिट्ठी लेकर आ जाए तो उस पर विश्वास करना ही पड़ता है, लेकिन कुछ समय बाद सच्चाई सामने आ ही जाती है। इसी प्रकार पुराने समय में शूद्र अति शूद्रों ने एक बार भटों की जुल्म-ज्यादतियों, अज्ञानी बना दिए जाने के कारण, उनके सर्मथ रामदास (16वीं सदी का संत) के नाम पर झूठे ग्रंथ लिखने के कारण, उनके मनों में बैठा दिए जाने के कारण भटों ने उनको फंसा लिया। आज भी कितने ही भट उनको फंसा रहे हैं।

भट लोग अपना पेट भरने के लिए बार-बार अज्ञानी शूद्रों लोगों के पास इनका उपदेश देते हैं, इसकी वजह से वह ब्राह्मणों को पूजनीय दृष्टि से देखने लगते हैं और जो सम्मान वह ईश्वर को देते हैं वह ब्राह्मणों को देने लगते हैं। यह ब्राह्मणों का ऐसा अन्याय है जिसका जवाब उनको ईश्वर को देना होगा

उनके उपदेशों को सुन कर बहुत सारे अज्ञानी शूद्र लोगों के दिमाग इतने कुंद हो गये हैं कि अमेरिकी गुलामों की तरह कि जो लोग उनको गुलामी से छुटकारा दिलाना चाहते हैं वह गुलाम उन दुष्ट लोगों का साथ देने लगे जिन्होंने उनको गुलाम बनाकर रखा है और उनका विरोध करने लगे जो उनको छुड़ाना चाहते हैं। यह बहुत ही आश्चार्य की बात है कि हम अपने पर उपकार करने वालों के खिलाफ ही लड़ने के लिए तैयार रहते हैं और कहते हैं कि हम जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं, ऐसा कहकर भी हम शांति से नहीं बैठते बल्कि उनके साथ झगड़ा भी करते हैं। अरे, हमें गुलामी से मुक्त करवाने वाले लोगों का आखिर क्या स्वार्थ होगा, कुछ नहीं, बल्कि उनको तो अपने समाज के सैंकड़ों लोगों की बलि देनी पड़ती है, बहुत सहास और बहादुरी के साथ अपने जीवन की बाजी लगाने के लिये तैयार रहना पड़ता है। भला ऐसा परोपकार करने का उद्देश्य क्या हो सकता है, इस विषय पर थोड़ा विचार करने से पता लग जाएगा कि मनुष्य के लिए सबसे जरूरी चीज आजादी है। जैसे ही मनुष्य आजाद होता है तब ही वह अपने मन में उठने वाले विचार स्पष्ट रूप से अन्य लोगों के सामने रख सकता है या लिख के व्यक्त कर सकता है। अगर मनुष्य आजाद न हो तो, सर्वसाधारण के हित के लिए महत्वपूर्ण विचार भी वह व्यक्त नहीं कर सकता, समय के साथ उसके वह विचार भी नष्ट हो जाते हैं। इस लिए मनुष्य के आजाद होना चाहिए। मनुष्य के सार्वजनिक अधिकार, जो उसको उसके परमेश्वर ने दिये हैं, सृष्टिकर्ता ने दिए हैं वह स्वार्थी पूर्ति के लिए बनावटी लोगों ने हड़प लिए हैं। वह केवल मांगने भर से अधिकार नहीं देंगे, जब हमें अपने हक मिलेंगे हम तभी सुखी हो सकते हैं। जुल्मी लोगों के अन्यायी जुल्मों से पीछा छुड़वाने को परपकोर का जय हो। ऐसे अच्छे उद्देश्य के लिए जहां व जाएं उनको सफल करे, ऐसे कार्यों को लिए उनको हर जगह सफलता मिले, हम इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

पृथ्वी के दो बड़े हिस्सों अमेरिका और अफ्रीका में सैंकड़ों साल पहले दूसरे देशों से इंसानों को पकड़-पकड़ कर गुलाम बनाने की प्रथा शुरू हुई थी। इस कारण युरोपीय महाद्वीप व दुनिया के अन्य प्रगतिशील राष्ट्रों को इससे बहुत लज्जा महसूस हुई। इसको खत्म करने के लिए उदार

अंग्रेज, अमेरिकी लोगों ने बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी, चाहे उसमें उनका नुकसान हुआ हो लेकिन अपनी जिंदगी का प्रवाह न करते हुए लंबे समय से चल रही इस क्रूर प्रथा को खत्म कर उन्होंने उन गुलामों को अपने प्यारे माता-पिता, भाई-बहनों, अपने बच्चों और दोस्तों से मिला दिया। ये सब एक दूसरे से अलग-अलग हो भारी दुख भोग रहे थे। उनको मिला कर उन्होंने कितना बड़ा कार्य किया,आह! अमेरिकी सदाचारी लोगों ने कितना बढ़िया कार्य किया! अगर उन गुलामों की दुर्दशा के को देख उनको दया नहीं आती तो ये गरीब बेचारे अपने प्यारों से दूर मिलने की इच्छा मन में लिए मर खप जाते।

लेकिन, उनको पकड़ कर गुलाम बनाने वाले लोग क्या उनको अच्छे से रखते थे, नहीं, बिल्कुल नहीं। अगर उन लोगों के दुखों को देखा जाए तो पत्थर दिल इंसान भी दांत भींच कर रो पड़ेगा। वह उनको पशु समझकर उनसे काम करवाते थे। भरी दोपहरी में वह उनसे पशुओं की तरह उनको हल में जोड़ कर खेत जोतने के लिए कहते, अगर कोई आना-कानी करता तो बैल की तरह कौड़े से उनको पीटा जाता। इतना होने के बावजूद वह उनको खाने के लिए तो ठीक से देते होंगे? नहीं. बिल्कुल नहीं। दिन में केवल एक बार भोजन नसीब होता वह भी भरपेट नहीं। शाम को जब तक छीती से खून की उल्टी नहीं हो जाती, धरती पर बेहोश होकर गिर न पड़ते तब तक उनसे काम लिया जाता। रात को जानवरों के कोठों या ऐसी गंदी जगहों पर उनको सोने के लिए छोड़ दिया जाता। लेकिन बेचारों की आंख में नींद कहां आती? एक तो यह डर लगा रहता कि क्या पता मालिक कब उनको काम के लिए हांक मार ले, दूसरा पेट भर भोजन न मिलने से पेट की आंतें दर्द से कराह रही होती, तीसरा दिन भर शरीर पर बरसे चाबूकों से शरीर लहूलुहान हो दर्द से छटपटा रहा होता, चौथा परिवार वाले हमारे बारे में सोच कर दुखी हो रहे होंगे इसकी चिंता लगी रहती और आंखों से आंसुओं का समुद्र उमड़ रहा होता और वह ईश्वर प्रार्थना करते - हे भगवान, हमारे ऊपर आपको क्यों दया नहीं आती, हमें इस दुख से मुक्ति दे, हमसे अब यह और सहन नहीं होता, अब तो बस हमारे प्राण ले ही ले। इस प्रकार रोते-रोते रात बीत जाती। उनके द्वारा भोगी गई दुख, तकलीफों, मुसीबतों को अगर सुनाया जाए तो शायद भाषा संबंधी सारे शोक रस भी कम पड़ जाएंगे। इसलिए अमेरिकी जनता ने आज से सैकड़ों सालों से चली आ रही क्रूर प्रथा को बंद कर गरीब अनाथ लोगों को बेहद क्रूर लोगों से मुक्ति दिला कर उनको खुश कर दिया है। इस बात को अन्य लोगों की बजाए शूद्र और अति शूद्र अच्छे से महसूस कर सकते हैं। क्योंकि गुलामी की जिंदगी कितनी मुश्किल होती है इसका प्रत्यक्ष अनुभव अन्य लोगों की बजाए उनको ही होता है।

उन गुलामों में और इन गुलामों में इतना ही अंतर है कि यहां के गुलामों को भटों ने हमला कर जीत के गुलाम बनाया तो उन गुलामों को कहीं से अचानक पकड़-पकड़ कर गुलाम बनाया, बाकि सब उनके साथ मिलता जुलता है। इनकी स्थिति और गुलामों की स्थिति में तिल मात्र का फर्क नहीं है। इन को जो-जो दुख संकट भोगने पड़े वह शूद्र अति शूद्रों को भटों के कारण भोगने पड़े हैं, हो सकता है उनसे अधिक ही भोगने पड़े हों। इन्होंने जो दुख भोगे हैं इससे पत्थर दिल इंसान ही नहीं खुद पत्थर भी पीघल जाए और इससे जो आंसू निकले उनसे पृथ्वी जलमग्न हो जाए, जिनके पुरखों ने शूद्र अति शूद्रों को गुलाम बनाया था उनकी संताने भट बंधु अगर उनकी तरह पत्थर दिल नहीं है तो उनको भी लगेगा कि सच में धरती पर जल प्रलय आ गया है।

भटों द्वारा शूद्र अति शूद्र लोगों को क्या-क्या यातनाएं दी है, क्या-क्या दुख दिए हैं और आज

भी वही स्थिति है इस बारे में हमारी अंग्रेज दयालू सरकार को कोई जानकारी नहीं है। अगर वह इस विषय में शोध कर जानकारी जमा करेंगे तो उनको समझ में आ जाएगा कि हमारे द्वारा जो हिंदुस्तान का इतिहास लिखा गया है उसमें बहुत ही बड़ा और महत्वपूर्ण भाग छूट गया है। अगर एक बार उनको इनके दुखों का ज्ञान हो जाए तो सच्चाई सामने आ जाएगी, और इससे जरूर उनको बहुत दुख पहुंचेगा। दुनिया के सबसे दुखी लोगों की अगर कोई उपमा है तो वह शूद्र अति शूद्र लोगों की स्थिति है। वह कहेंगे आज तक कवियों ने श्रोताओं को सुनाई हुई कविताओं में शोक रस का जो प्रयोग किया था वह काल्पनिक उदाहरणों से रचा था। लेकिन अब उनको इसके लिए कल्पना की ऊंची उड़ान भरने की जरूरत नहीं होगी, अब उनके आगे भुगतभोगियों का जिंदा इतिहास होगा। अगर ऐसा है तो शूद्र अति शूद्रों के दिलों में अपने पुरखों की कहानियां सुनकर कितनी पीड़ा होती होगी, इस पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम उनकी ही संतानें हैं, उनसे हमारा खून का रिश्ता है, उनके दुख हमारे दुख हैं।

भटों के राज के समय हमारे पुरखों पर जो दुखों की लकीरें खुदी हुई हैं उनको देख कर, सुन कर हमारा दिल डर से दहल जाता है, दिल में हूक उठती है कि अगर हम सुन कर ही दहल जा रहे हैं तो उनके दिलों पर क्या बीतती होगी। इसके स्पष्ट उदाहरण हमारे भटों के ग्रंथों में भरे पड़े हैं।

इस देश के मूल निवासी क्षत्रियों के खिलाफ भट लोगों के मुखिया परशुराम ने जो क्रूरता बरती, उसको इस किताब में दिखाने का प्रयास किया गया है। उसकी क्रूरता के बारे में यहां यह समझ लेना जरूरी है कि उसने न केवल असंख्य क्षत्रियों को मौत के घाट उतार दिया था बल्कि उनकी महिलाओं को विधवा कर दिया, अनाथ हुए चार-चार, पांच-पांच साल तक के निर्देष बेचारे बच्चों तक को उनसे छीन कर मारते हुए उसका दिल नहीं पसीजा था, बहुत बेदर्दी के साथ उनको मारा गया। वह दुष्ट इतने तक से संतुष्ट नहीं होता, गर्भवति विधवा महिलाएं जब अपने बच्चों की रक्षा के लिए जंगल-पहाड़ों में छुप जाती, भाग जाती तो वह शिकारियों की तरह उनका पीछा करता, जब पता चलता कि पुत्र हुआ है तो वह जच्चा-बच्चा को मौत के घाट उतार देता था। ऐसी क्रूर सच्चाई भटों के धर्म ग्रंथों में जगह-जगह लिखी हुई है। लेकिन हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि क्षत्रियों के विरोधी ब्राह्मणों ने उन घटनाओं की पूरी सच्चाई लिखी होगी। इन भट लोगों ने कितनी ही बातों को छुपा लिया होगा इस पर संदेह नहीं होना चाहिए। क्योंकि कोई भी अपने मुंह से अपने कूकर्म क्यों बताएगा। उन्होंने अपने कूकर्म अपने ग्रंथों में क्यों लिखे यही बहुत आश्चार्य की बात लगती है। हमें लगता है कि इससे बहुत बड़ा पुरुषार्थ दिखाई देता होगा, इससे उनकी आने वाली पीढ़ियों का वह आदर्श बनता होगा क्योंकि परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का नरसंहार किया था, उनकी महिलाओं को मार डाला था, बच्चों को मार डाला था। जैसे सभी जानते हैं कि 'हथेली से सूरज नहीं ढका जा सकता' उसी प्रकार यह भी शर्मनाक सच्चाई है। उन्होंने कई तरह के पर्दे इस पर डालने की कोशिश की होगी, लेकिन फिर भी भटों को अपने धर्म ग्रंथों में लिखना पड़ा होगा। अगर उनके लिखे पर थोड़ा सा विचार किया जाए तो बहुत दुख होता है, क्योंकि जब परशुराम गर्भवती महिलाओं का पीछा कर रहा होगा उनको कितना दुख हुआ होगा, क्योंकि वह कुलीन महिलाएं थी, उनके नौकर-चाकर होते थे, उन्होंने घर का कोई काम नहीं करके देखा होगा, लेकिन जब उनको अपने पेट में पल रहे बच्चे के बोझ को लेकर शिखर दोपहर में भागना पड़ा होगा, तो क्या हुआ होगा। पेट के गर्भ में बच्चे के कारण जब वह भाग रही

होंगी तो उनेक पांव से पांव टकराते होंगे, कभी पत्थरों से, कभी पेड़ों से तो कभी कांटों से, तब उनके किसी के घुटने से, किसी के पांव से, किसी के सिर से तो किसी की कुहनियों से खून की धार बहती जाती होगी, परशुराम उन पीछा कर रहा होगा, उनके कोमल पांव में कांटू चुभे होंगे, झाड़ियों में फंस कर कपड़े फट गए होंगे, शरीर में चुभ कर लहू बह रहा होगा। उनका कमल सा शरीर मुरझा गया होगा, मुंह से झाग निकलने लगा होगा और पांव लहुलूहान हो चुके होंगे। गले को दो-दो दिन तक पानी नसीब नहीं हुआ होगा, पेट के अंदर बच्चा भूख से रो रहा होगा, उनको लगता होगा कि यह धरती फट क्यों नहीं जाती, कि हम इसमें समा क्यों नहीं जाते कि इस दुष्ट से मुक्ति मिल जाए। भरी आंखों से उन्होंने भगवान से प्रार्थना की होगी, भगवान यह कहर हमारे ऊपर क्यों बरपा, भगवान हम तो बलहीन अबला हैं, हमारे बलशाली पुरुष इस दरींदे ने खत्म कर दिए, अब तू निर्दयी और हमारी कितनी परीक्षा लेगा। अरे जिसने हमारे आदमियों को मार डाला, जो हमारे ऊपर हथियार उठाए हुए है, जो इसी को अपना बड़ा पुरुषार्थ समझता है, तू समर्थ होते हुए भी चुपचाप इसको पत्थर बना क्यों देख रहा है। इस प्रकार भगवान से निराश होकर प्रार्थना करती महिलाओं पर परशुराम ने आते ही भगा नहीं दिया होगा? तब उनके दुख की क्या सीमा रही होगी। उस समय कितनी ही महिलाओं ने क्रोध में अपने प्राण त्याग दिए होंगे, कितनी महिलाओं ने उस दरींदे से अपने को छोड़ने की मिन्नतें की होंगी, ओ परशुराम, हम केवल तुम से इतनी प्रार्थना करती हैं कि हमारे गर्भ में पल रहे बच्चों को मत मारो, हम सब तुम से दया की भिख मांगते हैं, हमें छोड़ दो। चाहे हमारी जान ले लो, होने वाले बच्चों को बख्श देना। तुम ने हमारे पति छीन लिये, हम अकेली विधवा है, हमारे सारे सुख छिन्न गए, हम आगे अब बच्चे भी नहीं पैदा कर सकते, हमारी सारी आशाएं बस इन आने वाले बच्चों से हैं। इनको खत्म कर हमें क्यों जिंदगी भर के लिए दुख देना चाहता है। हमे यह भीख दे दो, हम आपके ही धर्म की हैं, हम पर किसी भी तरह से दया करो। इतने करुणा और दुख से भरे शब्द सुन कर भी उस दरींदे का दया न आई। जैसे ही उनके बच्चो हुए उनको उन्हीं के सामने कसाई की तरह झटकने लगा। जब वह बच्चों को छीन रहा होगा तो माएं उनको बचाने के लिए उन पर लेट गई होंगी और कहती होंगी कि हे परशुराम, अगर तुमने इन नवजात बच्चों की बलि ही लेनी हो तो सबसे पहले तुम हमारे सिर काट लो, फिर चाहे जो कुछ कर लेना, कृपा हमारी आंखों के सामने हमारी नन्ही जानों को हम मरते हुए नहीं देख सकती। ऊफ! जब उनके सामने उनके बच्चो काटे गए होंगे, उनको जो दुख हुआ होगा तो यह लिखते हुए मेरे हाथों की कलम कांप उठी है। जब उस दरींदे ने उन बच्चों को मांओं के सामने मारा होगा, तब कई माओं अपनी छाती पीटी होगी, किसी ने अपने बाल नौंचे होंगे, किसी ने जमीन कुरेदी होगी, कितना रुदन हुआ होगा, हे बेटा, ओ बेटा.... कितनी भटकती फिरी होंगी पुत्र शोक में। अगर आप ये सोचते हैं कि ये सारी सच्चाई हमें भट बता देंगे तो यह हमारी मूर्खता है। इस प्रकार ब्राह्मणों के मुखिया परशुराम ने जिस तरह से सैकड़ों क्षत्रियों की, उनकी महिला और बच्चों की हत्या की, दुर्दशा की उसको आज भी ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों अति शूद्रों को कहा जाता है कि वह उसको सर्वशक्तिमान ईश्वर, जग को बनाने वाला मानें, यह कितने अचंभे की बात है। परशुराम के बाद वाले भटों द्वारा लोगों को कम छला गया हो ऐसी बात नहीं है, उन्होंने भी उनको जी भर के छला है। उन्होंने लोगों को जिंदा दिवारों में चिनवा दिया, ऐसी घटनाएं कितनी ही शास्त्रों में मिल जाएंगी। वह लोगों को बेहद नीच मानते हैं, अगर कोई शूद्र पहले नदी पर कपड़े धो रहा हो, और कोई ब्राह्मण नहाने के लिए आ जाए तो उसको नदी के

निचली तरफ इतनी दूर जाना पड़ता है जहां पर ब्राह्मण को कोई छींटा न लग पाए। अगर गलती से भी कोई पानी का छींटा उस पर लग जाए तो वह क्रोध से लाल हो जाते हैं, वह हाथ में जो आया उसको माथे पर ऐसा मारते हैं कि बंदा वहीं ढेर हो जाए। अगर वह उठ कर कहीं न्याय पाने के लिए राजा के पास चला भी जाए तो उलटा उसको ही सजा मिलेगी। हर हर परमेश्वरा, यह कैसा अन्याय है!

यह बहुत दुखी कर देने वाली बात है, इसलिए बताई, इससे भी अधिक दुखदायी घटनाएं शूद्र अति शूद्रों के साथ होती थी। ब्राह्मण राज में व्यापार या इस तरह का दूसरा कोई कामधंधा करना बहुत ही मुसीबतों भरा होता था। सुबह से ही मुश्कीलें खड़ी हो जाती। क्योंकि इस समय उसकी छाया किसी भी वस्तु पर पड़ सकती थी। अगर उस समय वह किसी कम से रास्ते से जा रहा हो और आगे से किसी भट की सवारी आ जाए, उसको रास्ते से काफी दूर हट कर खड़ा होना पड़ता था ताकि ब्राह्मण पर उसकी छाया न पड़े। जब ब्राह्मण वहां से गुजर चुका होता तो तब वह उस रास्ते से आगे जा सकता था। अगर गलती से कभी ब्राह्मण पर शूद्र की छाया पड़ जाती थी तो वह उसको तब तक मारते थे जब तक उसके प्राण पखेरू न उड़ जाए, फिर वह तुरंत भाग कर नदी की तरफ स्नान करने के लिए जाते थे। इतना ही नहीं, कई जातियों को ब्राह्मण बस्ती से गुजरते हुए थूकने तक की मनाही थी, जब उनको वहां से जाना होता तो अपने साथ थूकने का बर्तन लेकर चलना पड़ता था। अगर गलती से किसी ने उनकी बस्ती में थूक दिया और किसी ब्राह्मण ने देख लिया तो समझ लो उस शूद्र के दिन पूरे हो गए।

इस तरह बहुत तरह की दुख, मुसीबत झेलते हुए ये सोच रहे हैं आखिर इन सब से कैसे मुक्ति मिलेगी। वह इंतजार कर रहे हैं जैसे लंबे समय से कैद में बंद कैदी अपने सगे संबंधियों, बाल-बच्चों, भाई-बहनों से मिलने के लिए तड़प रहा हो, बहुत बेसब्री से अपनी कैद पूरी होने का इंतजार कर रहा हो। इसी समय ईश्वर को इन पर दया आई और इस देश में अंग्रेज लोगों को भेजा, जिससे वह ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त हुए। वह इसके लिए अंग्रेज सरकार का बार बार धन्यवाद करते हैं, उनके वह सदा कर्जदार रहेंगे। वह उनके उपकार को कभी भूलेंगे नहीं। उन्होंने ही सैंकड़ों सालों की ब्राह्मणशाही की कैद से उनको मुक्त करवा सुखी जीवन का रास्ता दिखाया है। नहीं तो ब्राह्मण लोगों ने उनको मिट्टी में मिला रखा था।

इस पर कोई सवाल उठा सकता है कि आज भी भटों की तुलना में शूद्र अतिशूद्र लोगों की जनसंख्या दस गुणा अधिक है फिर भी कैसे उन्होंने उनको मिट्टी में मिला रखा है? इसका उत्तर है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति दल मूर्ख लोगों को अपने हिसाब से चला सकता है। वहीं इसका उलट भी हो सकता है अगर दस मूर्ख आदमी एक मत हो जाएं तो एक बुद्धिमान की कुछ न चलने दें। वहीं अगर दस मूर्ख आदमी अपनी-अपनी चलाने लगेंगे तो एक बुद्धिमान आदमी सब को अपने जाल में फंसा सकता है। इसी प्रकार शूद्र अति शूद्रों के विचार एक दूसरे से न मिलें, वह एक जुट न हों इसके लिए पूर्वी भटों ने एक बहुत चालाकी भरी तरकीब खोज मारी। जैसे-जैसे शूद्र अति शूद्र समाज की संख्या बढ़ने लगी, वैसे-वैसे उनके अंदर डर बढ़ने लगा था, उनको एक मत न होने देने के लिए उन्होंने कई तरह की योजनाएं बनाई, अपने आप को यहां बनाए रखने के लिए, हमेशा अपनी वंश परंपरा जिंदा रखने और बिना कुछ काम किए, दूसरों की मेहनत पर मौज मस्ती करने के लिए उन्होंने जाति भेद की दीवार खड़ी करी और उसके लिए कई ग्रंथ लिखे, उनको यहां की अज्ञानी जनता के दिलो-दिमाग में घुसेड़ दिया गया।

वहीं जो लोग इन भटों के खिलाफ दृढ़ता के साथ लड़े उनको एक वर्ग के रूप में ही अलग-थलग निकाल दिया गया। उनसे बदला लेने के लिए उन्होंने ऐसे धर्म-नियम बनाए कि लोग इनके साथ लेन देन न करे, इनको अछूत समझें, इनके आज के माळी, कुणबी आदि थे। इस तरह उनके सारे काम धंधे बंद हो गए, उनको दाने-दाने के लिए तरसना पड़ा, जंगलों में जाना पड़ा, मरे हुए जानवरों का मांस खाना पड़ा। आज घमंड के साथ लोग अपने आप को माली, कुणबी, सोनार, शिपी, लोहार, सुतार आदि बड़े-बड़े नाम लगाते हैं, अलग-अलग काम करते हैं लेकिन उनको पता होना चाहिए कि उन सब के पुरखे एक ही थे, अपने देश के लिए उनके पुरखे भटों दृढ़ता के साथ लड़े थे, ब्राह्मण लोगों ने ही उनकी ऐसी दुर्दशा की है कि वह दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं, बहुत अफसोस की बात है कि भटों की बातों में आकर वह सब भूल गए हैं और आपस में लड़ने लगे हैं। हे भगवान, ये आपकी नजरों में कितने बड़े अपराधी हैं। ये सब जब कोई इनके दरवाजे बर बार-त्यौहार को खाना मांगने आता है तो वह उसको झिड़क देते हैं कहीं-कहीं उठ कर उनको मारने के लिए दौड़ते हैं। ब्राह्मण लोगों के खिलाफ जिसने जितनी लड़ाई लड़ी उनको उतना ही कठोर जाति बंधनों में बाध दिया गया, उसको सजा दी गई। जैसे-जैसे ब्राह्मणों ने शूद्र अति शूद्रों में जाति भेद पैदा किया तभी से उनके विचार भी अलग-अलग होते चले गए। उन्होंने इनके लिए अपनी मन मर्जी से व्यवस्था बना दी। इस बारे में एक कहावत प्रसिद्ध है कि 'बिल्लियों की लड़ाई में बंदर का फायदा' यानी शूद्र अति शूद्र आपस में लड़ने लगे और भट उनकी मेहनत पर ऐसो आराम करने लगे।

संक्षेप में कहें तो इस देश में अंग्रेज सरकार आने के बाद शूद्र आति शूद्रों को भटों की दासता से मुक्ति तो मिली है, लेकिन हमे यह कहते हुए बहुत दुख हो रहा है कि हमारी दयालु सरकार ने शूद्र अति शूद्रों को शिक्षित करने की तरफ ध्यान नहीं दिया है और वह अज्ञानी के अज्ञानी रहते हुए भटों के झूठे ग्रंथों को मानते हुए मानसिक गुलाम बने हुए हैं इसलिए वह सरकार से भी कोई मांग नहीं करते। भट ब्राह्ममण लोग हर तरह की तिकड़ाबाजी करते हुए सरकारी कामों में लूट मचा रहे हैं, हमारी यह बात सरकार तक नहीं पहुंच रही है, हमारी दयालु सरकार से बार बार प्रार्थना है कि वह इस बात पर ध्यान दे और लोगों को ब्राह्मणों की मानसिक गुलामी से मुक्त कराने की तरफ हर संभव ध्यान दे।

इस पुस्तक को लिखने में मेरे दोस्त रा. रा. विनायक राव बापूजी भंडारकर और रा. रा. सा. राजन्ना लिंगू ने मुझे बहुत प्रेरित किया इस के लिए उनका बार बार धन्यवाद करता हूं।

1 जून 1873

जोति गोविंद राव

अध्याय 1

(ब्रह्म, उत्पत्ति, सरस्वती, ईरानी यानी आर्य लोगों के बारे में)

धोंडीरावः युरोपीय महाद्वीप के अंग्रेज, फ्रांसीसी आदि दयालु सरकारों ने तो एकजुट होकर दास प्रथा पर पाबंदी लगा दी है, इस तरह तो उन्होंने भगवान ब्रह्म के नियमों को तोड़ डाला है, क्योंकि मनु संहिता में तो लिखा है कि भगवान ब्रह्मा ने अपने मुख से ब्राह्मण पैदा किए हैं और केवल उन ब्राह्मणों की सेवा करने के लिए हमारे जैसे शूद्रों को पांव से पैदा किया है।

जोतिबाः चलो इस बात का तो तुम्हें पता है कि अंग्रेजों जैसी सरकारों ने दास प्रथा पर पाबंदी लगा दी, ऐसा कर उन्होंने ब्रह्मा के नियमों को तोड़ डाला है। लेकिन इस दुनिया में अंग्रेजों की तरह और बहुत सारे लोग रहते हैं, क्या तुम्हें यह पता है कि ऐसे लोगों को ब्रह्मा ने अपने किस अंग से पैदा किया है या मनुसहिंता में इस बारे में भी कुछ लिखा है क्या?

धोंडीरावः इस बारे में तो सारे ब्राह्मण चाहे वह विद्वान और या मूर्ख सब कहते हैं कि अंग्रेज आदि लोग अधर्मी, दुराचारी हैं इनके बारे में मनुसहिंता में बिल्कुल भी कुछ नहीं लिखा है।

जोतिबाः क्या इससे तुम्हारा ये मतलब है कि ब्राह्मणों के अंदर कोई अधम, दुराचारी बिल्कुल भी नहीं हैं?

धोंडीरावः नहीं, नहीं, अनुभव तो यह बताता है कि आम लोगों की बजाय ब्राह्मणों के अंदर अधिक अधर्मी, दुराचारी लोग पाए जाते हैं।

जोतिबाः तो ऐसे दुराचारी और अधर्मी ब्राह्मणों के बारे में मनुसहिंता में क्या कुछ लिखा है?

धोंडीरावः इससे तो यह जान पड़ता है कि मनु ने जो संहिता लिखी है उसमें खोट है, क्योंकि वह सारे मनुष्यों पर लागू नहीं होती।

जोतिबाः इसका मतलब ये हुआ अंग्रेज आदि विद्वान लोगों ने ब्राह्मणों के ग्रंथों को झूठा बताते हुए दास प्रथा पर पाबंदी लगा दी। अरे ब्रह्मा ही अगर तमाम मनुष्यों की उत्पत्ति का कारण होता तो दास प्रथा पर पाबंदी लगती ही नहीं। मनु ने चार वर्णों की उत्पत्ति के बारे में लिखा है, इसको सृष्टिक्रम अनुसार देखा जाए तो सारे का सारा झूठ है।

धोंडीरावः ऐसा कैसे?

जोतिबाः जैसे ब्राह्मण तो ब्रह्मा के मुख से पैदा हो गए, लेकिन इन सारे ब्राह्मणों की मूल माता ब्राह्मणी ब्रह्मा के किस अंग से पैदा हुई थी, इस बारे में तो मनु ने कुछ कहीं लिखा ही नहीं, है ना?

धोंडीरावः क्योंकि वह तो विद्वान ब्राह्मणों की मानें तो अधम और दुराचारी होगी। उसको तो तुरंत म्लेच्छों की लाइन में बिठा दो।

जोतिबाः अपने आप को भूमि का देवता, सभी वर्गों में सर्वश्रेष्ठ जैसे बड़ी-बड़ी पदवी देने वालों की मूल माता ब्राह्मणी नहीं हैं? और तू उसको म्लेच्छों की लाइन में बिठा रहा है? वहां से

तुझे दारू, गाय के मांस की बदबू नहीं आ रही? आरे ये तो तू बहुत गलत बोल हा है बाबा!

धोंडीराव: आप ने ही कितनी बार अपने भाषणों में कहा है कि ब्राह्मणों के पुरखे ऋषि श्राद्धों के नाम से गाय को मार कर, उसके मांस से तरह-तरह के व्यंजन बनाकर खाते थे और अब कहते हो कि उनकी मूल माता को बदबू आएगी, ऐसा कहे हो सकता! बस तू अंग्रेजी राज को कुछ समय तक और चलने दे और फिर देखना किस तरह से ये मांगलिक ब्राह्मण, रेसिडेंट, गवर्नर आदि अधिकारियों की मेहरबानी पाने के लिए उनकी टेबल पर बचे पड़े मांस के टुकड़ों को उनके रसोइये तक को नहीं उठाने देंगे। क्या तुझे नहीं पता कि अब तो कई महार रसोइये अंदर ही अंदर इसके लिए ब्राह्मणों को कोसने भी लगे हैं। मनु ने ही ब्राह्मणी माता की उत्पत्ति के बारे में कुछ लिखा नहीं है, तो ये गलती उसी की है, इसका दोष मेरे माथे मत मढ़ना गलत है, चलो आगे बढ़ो ...

जोतिबा: चलो जैसे आपकी मर्जी, ऐसा ही हो। अच्छा ये बताओ ब्राह्मणों को जन्म देने वाले ब्रह्मा का मुख भी क्या हर महीने तीन-चार दिन के लिए आने वाली महावारी से तो अपवित्र हो जाता होगा या फिर लिंगायत ब्राह्मणियों की तरह वह भी उन दिनों तीन-चार दिन के लिए राख लगा कर अपना कामकाज करने लग जाता था, इस बारे में भी मनु ने कुछ लिखा है क्या?

धोंडीराव: नहीं, ब्राह्मणों की उत्पत्ति का मूल कारण तो ब्रह्मा ही है लेकिन यहां पर लिंगायतों के बारे में दिया उपदेश जच नहीं रहा। क्योंकि लिंगायत ब्राह्मण इस दौरान महिला को अछूत नहीं मानते इसलिए तो आज ब्राह्मण उनसे नफरत करते हैं।

जोतिबा: लेकिन यहां पर आप इस बात पर विचार करो कि, ब्रह्मा के मुख, बाहु, जांघ और पांव यहां पर चार योनियां होगी तो उसको हर महीने सोलह दिन तक बैठे रहना पड़ता होगा, तो उस दौरान उनके घरबार का काम कौन करता होगा? इस बारे में भी मनु ने कुछ लिखा तो नहीं?

धोंडीराव: नहीं ऐसा तो नहीं लिखा।

जोतिबा: और, अगर ब्रह्मा के मुख में नौ महीने गर्भ ठहरा रहता होगा तो पांव आदि के लिए कहां गर्भ की जगह बचती होगी, इस बारे में भी मनु ने कुछ लिखा हैं?

धोंडीराव: नहीं।

जोतिबा: और जन्म लेने के बाद ब्राह्मणों के बच्चों को मां के स्तनों का दूध भी चाहिए होता होगा, दूध पीकर तो ही वो मोटे-तगड़े बनेंगे, इस बारे में भी मनु ने कहीं लिखा है क्या?

धोंडीराव: नहीं।

जोतिबा: और सुन, सावित्री ब्रह्मा की घरवाली थी, अगर ब्रह्मा मुंह से बच्चे पैदा कर रहा था तो उसने अपने बच्चों को नौ महीने तक गर्भ में रखने, पालने पोसने का झंझट अपने सिर क्यों ले लिया? है ना बड़े आश्चर्य की बात।

धोंडीराव: ऐसा तो, उसके तीन सिर और थे या वह इस झंझट में नहीं पड़ते थे या वह भी ब्राह्मण पैदा करते थे? तो उस रंडवे को महिला को इस झमेले में घसीटने की क्यों जरूरत पड़ी?

जोतिबा: जिस को तू रंडवा समझता है, उसी ने अपनी लड़की सरस्वती का बलात्कार किया था इसलिए उसका नाम बेटीचोद पड़ा था। इन्ही कुकर्मों के चलते ही उसका कोई

आदरसत्कार यानी पुजापाठ नहीं करता।

धोंडीरावः अगर ब्रह्मा के पूरे के पूरे चार मुंह थे, तो इसका मतलब ये हुआ कि उसके आठ स्तन, चार नाभियां, चार योनियां, चार मलद्वार होने चाहिए, लेकिन इस बारे में लिखित में कहीं कोई सबूत नहीं मिलता। लेकिन ये समझ नहीं आ रहा की शेषनाग की सेज पर सोने वालों को, लक्ष्मी जैसी पत्नी होने पर भी, उसने अपनी नाभी से चार मुंह वाले बच्चे को कैसे पैदा किया होगा, इससे लगता है कि शेषनाग की मां की दशा भी ब्रह्मा की तरह हुई होगी।

जोतिबाः दरअसल बात ये है कि ब्राह्मण लोग समुद्र पार ईरान देश से आए हैं ये वहीं के मूलनिवासी हैं। पूर्व से ईरानी या कहें आर्य लोग आए थे। इस बारे में कितने ही अंग्रेजी लेखकों ने उन्हीं के ग्रंथों को आधार बना कर इसको सिद्ध किया है। शुरू में आर्य लोग बड़े-बड़े कबिले बनाकर इस देश में आए और बहुत सारे हमले किए, यहां के स्थानीय राजाओं के राज्यों पर बारबार हमले कर बहुत नुकसान पहुंचाया। आर्यों का प्रधान मुखिया पहले वामन था फिर ब्रह्मा नाम का प्रधान मुखिया बना। यह बहुत ही जिद्दी किस्म का आदमी था। उसने अपनी तीकड़मबाजी से ही हमारे मूल पुरखों को जीता और उनको अपना दास बनाया। उसने अपने लोगों और जीते हुए लोगों के बीच हमेशा भेद बनाए रखने के लिए कई तरह के नीति-नियम बनाए। इन सब कार्यों के चलते जब ब्रह्मा नहीं रहे तो उसके बाद उन सभी आर्यों मौलिक नाम अपने आप ही ब्राह्मण पड़ गया। इसके बाद मनु जैसे अधिकारी हुए। उनके द्वारा बनाए गए नीति-नियमों को कभी कोई बदल न दे, इस डर से उसने ब्रह्मा के बारे में अनेक तरह के काल्पनिक बातों को बनाई और कहा कि सब ईश्वर द्वारा किया गया है। ऐसी बातों को दासों के मन में बैठा दिया गया। उसने शेष नाग की बारे में अंधी कथाएं बनाई और समय के साथ उनके बारे में ग्रंथ तैयार कर दिए। शूद्र, दासों के अंदर उन ग्रंथों का प्रचार-प्रसार के लिए नारद मुनि जैसे लोगों को भेजा गया जिसके कारण ब्रह्मा का महत्व बढ़ना स्वाभाविक था। चलो, ब्रह्मा या शेष नाग आदि के बारे में ज्यादा खोजबीन करने से हमारा रत्ती भर भी फायदा नहीं होना, ऊपर से हमारा समय खराब होगा यह अलग। क्योंकि उसको सीधा लेटा देखकर उसने उसके पेट से चार मुंह वाला बच्चा पैदा कर दिया और गरीबी में औंधे मुंह पड़े आदमी पर एक और लात जमाने से क्या पुरूषार्थ मिलेगा?

अध्याय 2

मत्स्य और शंखासुर के बारे में

धोंडीरावः वामन से पहले इस देश में आर्य लोगों के कितने कबीले आए होंगे?

जोतिबाः इस देश में जल मार्ग से आर्य लोगों के बहुत सारे कबीले आए थे।

धोंडीराम – तो पहला कबीले जल मार्ग से क्या लड़ाकू जहाज के साथ आया था?

जोतिबाः नहीं लड़ाकू जहाज से नहीं आया था, उनके पास छोटी-छोटी नाव थी, मछली जैसी, पानी पर वह बहुत तेजी के साथ चलती थी। इसलिए उनके कबीले के मुखिया का नाम भी मत्स्य पड़ गया था।

धोंडीरावः लेकिन ब्राह्मण इतिहासकारों के भागवत आदि ग्रंथों में तो लिखा है कि कबीले का मुखिया मत्स्य मछली के गर्भ से पैदा हुआ था। ऐसा कैसे हो सकता हैं?

जोतिबाः इस बारे में तुझे खुद सोच कर देखना चाहिए, मनुष्य और मछी के शरीर में, खान-पान में, नींद और मैथुन में कितना अंतर है और उनकी उत्पत्ति में कितना अंतर हैं? इसी तरह उसके दिमाग में, कलेजे में, फेफेड़ों में, आंतों में, गर्भ के स्थान में और बच्चा पैदा होने के मार्ग में कितना बड़ा अंतर है। मनुष्य धरती पर रहने वाला प्राणी है, अगर वह पानी में गिर जाएगा तो उसके प्राण पखेरू उड़ जाएंगे। मछी अपने पूरे जीवन में पानी के अंदर रहती है अगर वह धरती पर रहने लगे तो उसके प्राण पखेरू उड़ जाएंगे। महिला सीधे बच्चे को जन्म देती है, लेकिन मछी पहले अंडे देती है फिर उनको फोड़ कर अपने बच्चों को बाहर निकालती है। अगर अंडे में मछी के बच्चे हैं तो उनको पानी से बाहर आकर फोड़ने से क्या उसके बच्चे नहीं मर जाएंगे। अगर मछली पानी के अंदर अंडे फोड़ कर आदमी जैसे मतस्य को बाहर निकालती तो वह क्या पानी में तभी नहीं मर चुका होता। या फिर ऐसा तो नहीं हुआ कि किसी आदमी ने पानी में डुबकी लगाई और अंडा धरती पर ले आया और अंडा फोड़ कर मतस्य बाहर निकाल दिया हो। लेकिन ऐसा हो नहीं सकता। क्योंकि ये बात सच है कि यूरोप व अमेरिका महाद्वीप में ऐसे प्रगतिशील नामी-गिरामी वैज्ञानिक डाक्टर हैं, लेकिन उनमें से एक ने भी अपनी छाती पर हाथ रख कर ये नहीं बोला है कि वह किसी मछली के अंडे से आदमी का जन्म करवा सकते हैं। और एक बड़े पते की बात यह है कि वह कौनसी अमर मछली थी जिसने पानी के बाहर खड़े गोताखोर को यह बताया होगा कि उस अंडे में मत्सय अवतार है, और उस गोताखोर को कैसे उन मछलियों की भाषा समझ आई होगी जिसने यह संदेश दिया होगा। इस तरह के कितनी ही तरह की शंकाए, सवाल है जिसका इतिहास ग्रंथों में कोई सही समाधान नहीं मिलता। इस सब से तो यही सिद्ध होता है कि बाद में झूठे-कपटी लोगों ने ही इन प्राचीन ग्रंथों में दंतकथाएं घुसा दी हैं।

धोंडीरावः तो अब सवाल ये उठता है कि मत्स्य मुखिया साहेब अपने लोगों के साथ पहले किस जगह पर उतरा होगा?

जोतिबाः पश्चिम समुद्र की एक बंदरगाह पर उतरा था।

धोंडीरावः मत्स्य ने बंदरगाह पर उतर कर क्या किया होगा?

जोतिबाः मत्स्य ने उतरते ही वहां के क्षेत्रपति शंखासुर का जान से मार डाला। फिर शंकासुर के राज्य में आर्य लोग मत्स्य के मरने तक बिना किसी खतरे के वास करते रहे। जैसे ही मत्स्य की मौत हुई शंकासुर राज्य के लोगों ने अपने राज्य को पुनः पाने के लिए ईरान से आए मत्स्य के कबीले पर बड़ा हमला बोल दिया।

धोंडीरावः तो इस हमले में किसकी जीत हुई?

जोतिबाः इस हमले के कारण मत्स्य लोगों का कबिला कमजोर पड़ गया, उसने मैदान छोड़कर भागना पड़ा। शंखासुर राज्य के लोगों से बचने के लिए वह अंत में एक पहाड़ पर जाकर छुप गए। इतने में ही ईरान से आर्यों का दूसरा बड़ा कबीला आया, वह कच्छवे पर बैठकर आई और बंदरगाह पर उतर गई, कच्छवा मछी से कहीं अधिक मोटा होता है और वह कच्छवे की तरह धीरे-धीरे चलते थे इसलिए उस कबीले के मुखिया का नाम कच्छप पड़ा।

अध्याय 3

कच्छ, भूदेव यानी भूपति, क्षत्रिय, द्विज और कश्यप राजा के बारे में

धोंडीरावः मछली और कच्छवे में तुलना करें तो कुछ-कुछ फर्क दिखाई देता है और कुछ-कुछ समानता भी दिखाई देती हैं। जैसे दोनों पानी में रहते हैं, अंडे देते हैं और उनको फोड़ कर बच्चे निकालते हैं। उन्होंने अपने भागवत ग्रंथों में यह भी लिखा है कि कच्छ का जन्म कच्छवे से हुआ था। अगर फिर मत्स्य की तरह उस पर विचार करने लगे तो हमारा समय ही खराब होगा, इसलिए मैं आप से सीधा पूछ लेता हूं कि कच्छवे ने बंदरगाह पर उतरते ही क्या किया होगा?

जोतिबाः उसने सबसे पहले पहाड़ी स्थानीय लोगों से घीरि मत्स्य कबीले के लोगों की तरफ कूच किया, स्थानीय लोगों को भगा कर उनको मुक्त करवाया और फिर वह उस पूरे क्षेत्र का भूदेव यानी भूपति बन गया।

धोंडीरावः अगर कच्छ ने उस क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया तो फिर उस क्षेत्र के क्षत्रिय कहां चले गए?

जोतिबाः समुद्र की तरफ से दूसरे ईरानी यानी आर्य लोगों का कबीला आ रहा है, यह सुनकर वह घबरा उठे और कहने लगे द्विज आ गए, द्विज आ गए, कहते हुए वह पर्वतों की तरफ कश्यप नाम के क्षेत्रपति के राज में चले गए, उनके पीछे-पीछे कच्छ अपनी भारी फौज लेकर पर्वतों की तरफ बढ़ा और उसको अपनी पीठ पर लाद कर, यानी उनको हरा कर उसने कब्जा कर लिया। जैसे-जैसे ईरान से और मदत आती गई वैसे वैसे कश्यप के राज्य के क्षत्रियों को वह सताने लगा। कश्यप ने अपना राज्य वापिस लेने के लिए युद्ध की तैयारी की, लेकिन जब तक कच्छ जिंदा रहा कश्यप अपना राज वापिस नहीं ले पाया। वह युद्ध भूमि को छोड़ कर एक कदम भी पीछे हटने के लिए तैयार नहीं था।

अध्याय 4

वराह और हिरण्यगर्भ के बारे में

धोंडीरावः कच्छ के मरने के बाद द्विजों का मुखिया कौन बना?

जोतिबाः वराह।

धोंडीरावः भागवत पुराणों में लिखा है कि वराह का जन्म सुअरी के पेट से हुआ था, इस बारे में आपकी क्या राय है?

जोतिबाः वास्तव में विचार किया जाए तो सच्चाई ये है कि सूअर और मनुष्य के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है। इस बात को अच्छे से समझने के लिए मैं यहां एक उदाहरण देता हूं कि अपना बच्चा पैदा करने के लिए कैसी-कैसी सावधानी बरतनी होती है। महिला अपने बच्चे को जन्म देते वक्त ध्यान रखती है कि उसको थोड़ी सी भी दिक्कत न हो और उसको अच्छे से लालन पालन करती है, लेकिन सुअरी कुत्तियों की तरह अपने पहले बच्चे को जन्म देते ही उसको खा जाती है फिर दूसरे बच्चों को जन्म देती है। इस प्रकार वराह की माता ने पहले तो अपने एक सूअर को खाया होगा फिर मानव सूअर को जन्म दिया होगा। लेकिन भागवत पुराणों में लिखे अनुसार तो वराह आदिनारायण का अवतार है, तो क्या इससे उनके सर्वज्ञानी और समदृष्टि होने पर तो लग गया ना बट्टा? क्योंकि जब उसको पता था उसकी मां सुअरी अपने पहले बच्चों को जन्मते ही खा जाएगी तो इसका बंदोबस्त उसको करना चाहिए था या नहीं? अरे, पदमा सुअरी ही तो वराह आदिनारायण यानी ब्रह्मा की माता है ना! तो उसने बालहत्या क्यों की! अब भई बाल हत्या तो बाल हत्या है, चाहे वह किसी का कैसा भी बालक हो, उसने अपने ही पेट से पैदा हुए बच्चों को मार डाला। और ऐसा भी किसी शब्दकोश में नहीं मिलता कि उसको उसको कभी अपराधबोध हुआ हो। उसको तो डायन भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि एक कथा के अनुसार डायन भी कभी अपने बच्चों को नहीं खाती। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि वराह की मां पद्मा ने इस अघोर कर्म के लिए, नर्क से छुटकारा पाने के लिए कहीं कोई प्रायश्चित तक नहीं किया।

धोंडीरावः वराह की मां का नाम अगर पदमा था, तो उसके सुअर पति का नाम भी कुछ होगा ही, तो उसका क्या नाम था?

जोतिबाः पद्मा सुअरी के पति का नाम था ब्रह्मा।

धोंडीरावः अच्छा ये बताओ, पहले जानवर भी आदमियों की तरह अपने आप को ब्रह्मा, नारद या मनु जैसे नाम रखते थे इस बात का इन गपोड़ ग्रंथियों को कैसे समझ में आया होगा? दूसरा पद्मा सुअरी ने वराह को छोटे होते हुए अपने स्तनों से दूध पिलाया था या नहीं, बड़े होने पर वराह गांव के खंडहरों में कोमल फूल-पत्तों को चरने जाता था या नहीं, ऐसे महत्वपूर्ण सवालों के जवाब आदिनारयण जाने या खुद वराह जाने, ग्रंथों में तो ऐसे सवालों के जवाब नहीं हैं। खैर मुझे तो वराह के सुअरी से पैदा होने की कहानी पूरी तरह

झूठ नजर आती हैं? ऐसा लिखते हुए उन ग्रंथों के लेखकों को क्या थोड़ी बहुत शर्म हया आयी या नहीं?

जोतिबाः वाह जी वाह! उन्हीं ग्रंथों के कारण तो तुम उनके पांव धो धो कर पीते हो। इसमें तुम्हें नहीं कुछ शर्म आती?

धोंडीरावः अच्छा, तो आपके मतानुसार उसका नाम वराह कैसे पड़ा होगा?

जोतिबाः क्योंकि भई उसका स्वभाव और आचरण बहुत गंदा था जहां भी जाता वह जंगली सुअर की तरह झपटे मार कर हमला करता, सब कुछ तहस नहस कर देता। इसलिए महाप्रतापी हिरण्याक्ष यानी हिरण्यकश्यप ने या उस देश के अन्य क्षत्रियों ने उनको धिक्कार ते हुए उसका नाम सूअर यानी वराह रख दिया होगा। इससे वह और अधिक आग बबूला हो गया और अपने पैने दांत लिये बार बार उनके देश पर हमला करने लगा और सारे क्षेत्रवासी लोगों को परेशान करने लगा। अंत में एक लड़ाई में उसने हिरण्यकश्यप को मार डाला। इसके बाद उनसे सारी पृथ्वी (हिंदुस्तान) के क्षेत्रपति भयभीत हो गए, उनका राज कमजोर हो गया। अंत में उस समय वराह की मर गया।

अध्याय 5

नरसिंह, हिरण्यकश्यप, प्रल्हाद, विप्र, विरोचन आदि के बारे में...

धोंडीराव: वराह मरने के बाद द्विज लोगों का मुखिया कौन बना?

जोतिबा: नृसिंह।

धोंडीराव: नृसिंह का स्वभाव कैसा था?

जोतिबा: नृसिंह बहुत ही लोभी, बनावटी, फितूरी, कपटी, घातक और निर्दयी और क्रूर स्वभाव का आदमी था। वहीं वह शारीरिक रूप से सुदृढ़ और बहुत बलवान था।

धोंडीराव: उसने क्या-क्या किया?

जोतिबा: पहले उसको यह समझ में आ गया कि हिरण्याकश्यप को मारे बिना वह उसको राज्य पर कब्जा नहीं कर सकता। अपने दुष्ट कार्य को पूरा करने के लिए उसने गुप्त रूप से बहुत दिनों तक लगातार प्रयास किए। उसने अपने एक द्विज आचार्य का लगा कर उसने हिरण्यकश्यप के छोटे से बेटे प्रल्हाद के अपने धर्म नियमों से कान भर दिए जिस कारण प्रल्हाद ने अपने हरहर नामक कुलदेवता की पूजा करने से मना कर दिया। हरिण्याकश्यप ने प्रल्हाद को भ्रष्ट मार्ग से दूर करने के लिए और अपने कुल देवता की पुनः पुजा पाठ करवाने के लिए तरह-तरह के प्रयास किए, लेकिन नृसिंह द्वारा प्रल्हद की मदद करने के कारण हिरण्याकश्यप के तमाम प्रयास नाकाम साबित हुए। इतना ही नहीं उसने अबोध बालक को बहकाते हुए उसके मन को इतना भ्रष्ट करना चाहा कि वह उसके पिता की हत्या कर दे, लेकिन इतना अघोर काम करने के लिए उसका मन नहीं मना। इसलिए नृसिंह ने ही फिर अपने आप को सिंह का रूप दिया, सारे बदन को शेर की तरह रंग लिया, मोटे-मोटे नकली दांत लगाए, बड़ी-बड़ी दाड़ी लगाई और एक भयांकर शेर की तरह दिखने लगा। अपने आप को छुपाने के लिए उसने लंबी रेश्म की साड़ी पहनी, घुंघट निकाला, महिला की तरह लहराते-बलखाते बच्चे की मदद से वह हरिण्याकश्यप के मंदिर में प्रवेश कर गया। मंदिर में बड़े-बड़े पिलर थे, वह उनके पीछे छुप गया। जब शाम को राजकाज के काम से थक हार कर हरिण्यकश्यप आराम के लिए मंदिर में पहुंचा और पलंग पर सो गया तो तुरंत नृसिंह बाहर निकला। उसने अपना चोला उतार फेंका, हाथ में वाघनखानी यंत्र लेकर सोए हुए हरिण्याकश्यप पर टूट पड़ा और उसके पेट को फाड़ डाला। वह राद दिन एक कर सारे द्विजों के साथ अपने राज्य की तरफ भाग गया। प्रल्हाद को फंसा कर इतना अघोर कार्य करने की बात सारे क्षत्रियों में फेल गई, उनको समझ आ गया कि आर्य लोग उनके बच्चों को द्विज बना रहे हैं इसलिए नृसिंह को विप्रिय (अप्रिय) करने लगे इसी शब्द से उसाक नाम आगे चल कर विप्र पड़ा। इतना ही नहीं नृसिंह को वह अब नार सिंह यानी सिंह की पत्नी कहने लगे। इसके बाद भी हरिण्याकश्यप के पुत्र को बैठा कर नारसिंह ने बहुत प्रयास किये कि वह राजकाज संभाल ले, लेकिन हिरण्याकश्यप के राज्य को हड़पने की सारी कोशिशें

नाकामयाब हुई। वह जिंदगी भर ऐसे प्रयास करते हुए अंत में मर गया।

धोंडीरावः नारसिंह के इन घटिया कामों की वजह से बाद में कोई उसके नाम पर छी-छी, थू-थू न करे इसलिए विप्र इतिहासकारों ने ये कहानियां बनाई होंगी कि वह तो खंभे से पैदा हुआ था आदि, इससे तो यह सिद्ध होता है कि यह सारा कोरी कल्पना से भरा इतिहास है।

जोतिबाः इसमें कोई शक नहीं होना चाहिए. अगर वह खंभे से पैदा हुआ था तो उसकी नाल किस आदमी ने काटी थी, वह बिना मां या किसी दाई का दूध पिए ऐसे कैसे इतना तगड़ा हो गया। क्या किसी ने कभी ऐसा होते हुए देखा है, यह तो बिल्कुल सृष्टि कर्म के उलट है। यह गप्पोड़ विप्र इतिहासकारों ने रचते हुए शर्म भी नहीं आई कि लकड़ी के खंभे से पैदा होते ही उसने अपने आप को लंबी-लंबी दाढ़ी-मूछें लगाई, और नासमझों की तरह तुरंत नाखूनों से हिरण्यकश्यप का पेट चीर दिया और उसको मार डाला। अरे, जो पिता अपने पिता धर्म को निभाने के लिए, ममता पूर्वक अपने अज्ञानी बालक को डांट-फटकार रहा था, अपने मूल धर्म की तरफ उसको लगा रहा था क्या सर्वज्ञानी ब्रह्मा के अवतार को उसको मार डालना चाहिए था! ऐसा तो किसी अज्ञानी मनुष्य का अवतार भी नहीं करता। अगर ब्रह्मा का अवतार हिरण्यकश्यप को दर्शन देकर यह समझाता कि मैं स्वयं ब्रह्मा हूं, पिता-पुत्र के बीच जारी खटपट खत्म कर समझौता कराने आया हूं, लेकिन उसने ते निर्दयीता के साथ उसको मौत के घाट उतार दिया। क्या यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है। अगर वह हिरण्यकश्यप को उपदेश देकर उसकी बुद्धि नहीं बदल सका तो वह सभी को बुद्धि देने वाला कैसे हुआ? इससे तो यही सिद्ध होता है कि नारसिंह के रूप में उसको किसी गोबर जमा करने वाली रांड से भी कम अक्ल थी। कारण साफ है, देखो एक बृहस्पति विरोधी एक विद्वान केवल अपनी मीठी-मीठी बातों से उनको गुलाम बनाना चाहता है। अभी तक हिंदुस्तान में कितने ही अमेरिकी और यूरोपीय मिशनरियों ने हमारे में से कितनों को ही ईसाई बना दिया है लेकिन यह बहुत आश्चर्य की बात है कि अभी तक किसी एक भी युवक ने अपने पिता की हत्या नहीं की है!

धोंडीरावः नारसिंह की इतनी फजहीत होने के बाद भी विप्रों ने प्रह्लाद के राज्य पर कब्जा करने के लिए कोई प्रयास किये या नहीं?

जोतिबाः प्रल्हाद के राज्य पर कब्जा जमाने के लिए विप्रों कई तरह के लुके-छिपे छल कपट किए। लेकिन वह सारे के सारे फेल हो गए। क्योंकि उस के बाद प्रल्हाद की आंखे खुल गई थी और उसको सारे छल कपट नजर आने लगे थे। इसके बाद प्रल्हाद को विप्रो पर रत्ती भर विश्वास नहीं रहा, वह उन पर दिखावे के लिए विश्वास करता रहा और वह अपने राज्य के लिए उचित व्यवस्था करके मारा। इसके बाद प्रल्हाद के पुत्र विरोचन ने राजभाग संभाला, उसने अपने राज्य को और बलवान बनाते हुए अंतिम सांस ली। इसके बाद विरोचन का लड़का बली बहुत ही बलशाली योद्धा बन कर उभरा। उसने सबसे पहले अपने अधीन छोटे-छोटे क्षेत्रपतियों का दंगाइयों के उत्पीड़न से बचाया और अपना वर्चस्व कायम किया। इसके बाद उसने अपने राज्य को क्रमशः बढ़ाना शुरू किया। उस समय विप्रों का मुखिया वामन होता था। उसको यह सब सहन नहीं हुआ। बली के साथ युद्ध

करने के लिए चोरी-चोरी वह बड़ी फौज तैयार कर अचानक बली की सरहदों पर आ धमका। वामन बहुत ही लोभी, घमंडी और हेकड़ीबाज था।

अध्याय 6

बलीराजा, जोतिबा, मराठे, खंडोबा, महासुभा, नौ खंडों का न्यायी, भैरोबा, भराडी, सात आश्रय, डेरा डालना, रविवार को पवित्र मानना, वामन, पक्ष लेना, विंध्यापर्वत, घट रखना, बलीराजा की मृत्यु, सती होना, आराधी लोग, शिलंगण, चावल का बली, दूसरे बली राजा की भविष्यवाणी, बाणसुर, कुजागरी, वामन की मृत्यु, उपाध्ये, होली, वीर योद्धा, बली-प्रतिपदा, भैयादूज आदि के बारे में

धोंडीरावः इसके बाद बली राजा ने क्या किया?

जोतिबाः बलीराजा ने तुरंत अपने राज्य के तमाम सरदारों के पास, उसके अंतर्गत रहने वाले क्षेत्रपतियों को संदेश भेजे और कहा कि सारे के सारे बिना किसी देरी के अपनी सारी फौज लेकर मदद के लिए पहुंच जाएं।

धोंडीरावः इस देश में बली के पास कितना बड़ा क्षेत्र होता थे?

जोतिबाः इस देश में बलीराजा के पास बहुत सारे राज्य और क्षेत्र होते था। इसके अलावा माना जाता हैं कि उसके पास सिंहलद्वीप (श्रीलंका) के भी द्वीप आते थे, क्योंकि वहां पर बली नाम का एक द्वीप मौजूद हैं। इस देश के दक्षिण में कोल्हापुर के पश्चिम में बली का राज कोंकण व मालवा क्षेत्र होता था, वहां जोतिबा नाम का मुखिया होता था। उसका मुख्य क्षेत्र कोल्हापुर के उतर में रत्नागिरी नाम का पर्वत होता था। इसके अलावा दक्षिण में दूसरे क्षेत्र में बली का राज्य महाराष्ट्र होता था इस क्षेत्र के तमाम लोग महाराष्ट्री कहलाते थे, बाद में इसका अपभ्रंश मराठे बन गया। महाराष्ट्र ज्यादा बड़ा होने के कारण उसने इसके नौ खंड बना दिए थे। इसलिए हरेक खंड के मुखिया को खंडोबा कहा जाता था, इसके अलावा उसकी योग्यता के अनुसार उसके नीचे एक-दो प्रधान भी होते थे। वहीं हरेक खंडोबा के नीचे बहुत सारे मल्ल (पहलवान) होते थे और उनको मलूखान कहा जाता था। एक जेजोरिचा नाम का खंडोबा होता था। उसने आस पास के क्षेत्रपतियों को मल्लों के जरिए अपने अंदर शामिल कर लिया था, इसलिए उसका नाम बाद में मल्लारी पड़ गया। इसका अपभ्रंश मल्हारी हो गया। उसको पूरे धर्म-नियम के साथ लड़ाई लड़ने पर बहुत घमंड था, उसने कभी भी अपने शत्रु की पीठ पर वार नहीं किया, इसलिए उसका नाम मारतोंड भी पड़ा। वह दीन-दुखियों का ख्याल रखता था। उसको गाने का भी बहुत शोक था, उसी ने मल्हार नाम का मशहुर राग बनाया था। यह इतना अधिक स्थापित हुआ कि मुगलकाल में अकबर के दरबारी गायक तानसेन ने भी ऐसा ही एक राग बनाया। बळीराजा ने महाराष्ट्र महासुभा यानी नौ खंडों के लिए न्याय और वसूली के लिए दो अधिकारी नियुक्त किए गए तो जो लगान वसूली और न्याय का कार्य करते थे। इसके नीचे कई तरह के कर्मचारी होते थे। आज महासुभा का अपभ्रंश म्हसोबा हो गया हैं। वह यथासंभव खेती-बाड़ी, सिंचाई व्यवस्था की जांच पड़ताल करते थे और जरूरी सुख-सुविधा, छूट देकर लोगों को संतुष्ट रखते थे। इसलिए आज भी मराठों में

एक भी परिवार या किसान ऐसा नहीं है जो अपने खेत में किसी पत्थर पर महासुभा के नाम से सिंदूर लगाए बिना किसी तरह की बुआई या कटाई करता हो। माना जाता है कि बलीराजा द्वारा राज्य में लागू की गई वसूली व्यवस्था को यवन लोगों ने भी अपनाया था। क्योंकि उस समय यवन ही नहीं मिश्र आदि देशों से भी अनेक विद्वान यहां ज्ञान लेने आते थे। इसके अलावा अयोध्या के आसपास काशीक्षेत्र में भी बली राजा के अधीन कई क्षेत्र आते थे, उसको दसवां खंड कहा जाता था। वहां के राज्य के मुखिया का नाम कालभैरी था। माना जाता है कि यह पहले बहुत समय तक काशी शहर का कोतवाल भी होता था और गायन में बेहद निपुण आदमी था, उसने भी एक स्वतंत्र राग की रचना की थी। इसको भैरव राग कहा जाता है जिसको तानसेन जैसे विश्व प्रसिद्ध गायक ने भी गाया है। उसने अपनी कल्पना से एक डौर नामक का वाद्य यंत्र भी बनाया था। इस डौर वाद्ययंत्र की रचना इतनी अद्भुत है कि इसके आगे तालसुर वाले मृदंग, तबला आदि वाद्य यंत्र भी फीके पड़ते हैं। हालांकि इसको जितनी मान्यता या प्रसिद्धी मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली। इनके अगली पीढ़ियों को भैरवाडी कहा जाता है, जिसका अपभ्रंश भराडी हो गया है।

इस तरह बलीराजा का राज्य अजपाल यानी दशराथ के बाप के राज्य से भी अधिक बड़ा होता था, यानी वह सबसे बड़ा क्षेत्रपति था, इतना ही नहीं उसके अंतर्गत सात क्षेत्रपति भी थे जो बली को कर देकर उसके अधीन रहते थे। इसलिए उनका नाम सात आश्रयी पड़ा। संक्षेप में कहा जाए तो बलीराजा का राज बहुत बड़ा था और वह बहुत बलशाली राजा था, इसलिए तभी से एक कहावत प्रसिद्ध है कि "बली तो कान पिळी" यानी (जिसकी लाठी उसकी भैंस)।

जब भी बलीराजा को अपने सरदारों को कोई महत्वपूर्ण काम सौंपना होता था वह भरे दरबार में एक थाली के अंदर नारियल और पान का बिड़ा रख देता था, और कहता था कि जिसमें यह काम करने की हिम्मत है वह इस बिड़ा को उठा ले। इस प्रकार जिसमें हिम्मत होती वह आगे आकर हर हर महावीर का जयघोष करते हुए थाली से नारियल और पान का बिड़ा उठा लेता था। उसको हल्दी का टीका लगाया जाता था। इस प्रथा से बलीराजा कोई जरूरी कार्य सौंपते थे। इसके बाद वह वीर बलीराजा की आज्ञा से पूरे दलबल सहित दुश्मन की तरफ कूच कर जाता था। इसी से इस प्रथा का नाम तळ उचलणें (बिड़ा उठना) पड़ा। इसका अपभ्रंश "तळी उचलणे" बन गया। बलीराजा के तमाम योद्धाओं सहित भैरोबा, जोतिबा और नौखंडोबा हमेशा अपनी जनता के सुख-दुख का ख्याल रखते थे। आज भी सभी मराठे कोई भी शुभ कार्य शुरू करते हैं तो पहले बिड़ा उठाने की प्रथा निभाते हैं। उन्होंने इस संस्कार को पूरा करने के लिए जोतिबा, बहिरोबा और खंडोबा को देवता के रूप में मान लिया है उसके नाम का जयघोष करते हैं। इसी तरह से हर हर (हर-हर, इस शब्द का अपभ्रंश 'हुर्रा-हुर्रा' भी है, ज्ञात होता है कि अंग्रेजों में भी ऐसा एक पुराना रिवाज है, वह हुर्रा-हुर्रा चिल्लाए बिना दुश्मन पर टूटने की आज्ञा नहीं देते। यह बात उनके इतिहास में भी - Hurrrah Boys ! Loose the saddle or win the horse!) महादेव, बहिरोबा या जोतिबा भला करे, सदानंद का उदय और मलुखान का अंहकार आदि, इतना ही नहीं बलीराजा अपनी तमाम जनता सहित हर हर महादेव

की जय करते हुए इतवार के दिन को सबसे शुभ मानते थे। इसलिए आज के सारे मराठे यानी मांग, महार, कुणबी व माली आदि लोग हर इतवार को अपने घरों में कुलदेवता की मूर्ति को नहला कर, दाल, बौकली का नैवेद्य बनाकर भोग लगाते हैं और इसके बाद ही खुद भोजन करते हैं।

धोंडीराव: वामन जब बलीराजा की सरहदों पर आ गया तो उसने क्या किया?

जोतिबा: वामन अपनी समस्त फौज के साथ बली राज्य की जनता का दमन करते हुए बली की मुख्य राजधानी के पास पहुंच गया। उस समय तक बली अन्य राज्यों से आने वाली अपनी फौजों का इतंजार कर रहा था। मजबूरी में उसे अपनी निजी सेना लेकर वामन के साथ जंग की शुरूआत करनी पड़ी। इस प्रकार - भाद्र महीने की एकादशी से लेकर आमवश्य तक हर रोज लड़ाई लड़ता और आराम करने के लिए शाम को महल में आ जाता। इस दौरान दोनों सेनाओं के जो-जो लोग इस पंद्रह दिनों में मारे गए उनकी याद में ही भाद्र महीने में श्राद्ध मनाने की परंपरा शुरू हुई होगी। इसके बाद अश्विन महीने की एकादशी से लेकर अष्टमी तक बलीराजा के खिलाफ हर रोज लड़ाई में इतना अधिक मग्न हो गया कि उसको आराम का ध्यान ही नहीं रहा। उसी दौरान बलीराजा की विंध्यावली रानी ने अपने हिजड़े पंडे सेवक से एक खड्डा खुदवाकर उसमें सुखी जलाऊ लकड़ियां डलवाई, अपने पति की जीत के लिए वह उस खड्डे के के पास आठ रात और आठ दिन तक बिना अन्न-पानी ग्रहण किए व्रत पर बैठी रही। उसने हर हर महावीर से प्रार्थना की। इतने में ही अश्विन की शुद्ध अष्टमी की रात को उसे खबर मिली की बलीराजा युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। उसे यह सहन नहीं हुआ और उसने अपने सेवकों से उस खड्डे में आग लगाने के लिए कहा और वह उसमें कूद गई। इससे लगता है कि तभी से सती प्रथा की शुरूआत हुई होगी। जब विंध्यावली सती अपने पति के बिछोह में आग में समा गई होगी तो तब उसकी सेविकाएं, हिजड़े पंडे छाती पीट-पीट कर विलाप कर रहे होंगे, उन्होंने अपने वस्त्रों को फाड़ डाला होगा, धरती में हाथ पटक रहे होंगे, वह रानी के गुणों का गान करते हुए बहुत शोकाकुल हुए होंगे। कहते होंगे हे हमारी दयालू राणी, हमेशा तेरा नाम गुंजता रहे आदि। ये दुख की गाथा और लोगों तक न फेले, इसको रोकने के लिए विप्रि लोगों के इतिहासकारों ने इस अग्नि कुंड को तरह-तरह के नाम दे, इस बारे में झूठी कथाएं लिखकर अपने ग्रंथ भरे होंगे। इसके बाद बली के मरने के बाद भी बाणासुर एक दिन तक और हर तरह की मुसीबतें झेलते हुए युद्ध लड़ता रहा, लेकिन कमजोर पड़ते हुए वह अश्वनि की नौवीं की रात को अपनी बची हुई फौजों को लेकर वह फरार हो गया। इससे वामन को खुली छूट मिल गई, उसको जब समझ में आया कि बली की मुख्य राजधानी में कोई पुरुष नहीं बचा तो वह अपनी सारी फौज को लेकर अश्विन की दसवीं की सुबह शहर पर टूट पड़ा। वहां से उसने वहां के तमाम आंगनों से सोना लूट लिया। तभी यह अपभ्रंश बना कि "शिलांगणाचे (आंगनों) सोने लूटे"। इसके बाद वह अपने घर लौट गया।

जब वह घर लोटा तो उसकी घरवाली ने मजाक में अपने द्वार पर चावल से बली का पुतला बनाकर रख दिया, और उसको प्रवेश करने से पहले कहा कि पहले बली से तू युद्ध कर फिर घर में प्रवेश करना। इस पर वामन ने पुतले को लात मारकर घर में प्रवेश किया।

उस दिन से लेकर आज तक विप्रों के कितने ही घरों में हर साल अश्विन माह की दशमी को विजयदशमी मनाई जाती है, इस दिन उन घरों की महिलाएं चावल या गेहूं के आटे से बली दरवाजे पर बली का चित्र बनाती हैं, उनके मर्द बाएं पांव को उसके पेट पर रखकर, उसमें कचनार की टहनी घुसाते हैं। इसके बाद ही घरों में प्रवेश करते हैं। इसी प्रकार बाणासुर को लोग भी इसी दिन रात को अपने घर पहुंचे होंगे, उनकी महिलाओं ने भी बली का चित्र बनाते हुए भगवान से ये प्रार्थना की होगी फिर दूसरा बली आएगा और भगावन का राज स्थापित करेगा तब उन्होंने कहा होगा "इडा पीडा (द्विजों का अधिकार) जावो और बळींचे राज येवो। (इडा पीडा जाए, बली का राज आए)" उस दिन के बाद आज तक सैंकड़ों सालों से हर साल बलीराज्य के कितने ही इलाकों में क्षत्रिय महिलाएं इस दिन इस परंपरा को निभाती हैं और बली का राज आने की कामना उन्होंने छोड़ी नहीं है। इससे पता चलता है कि बली का राज्य कितना उत्तम था। धन्य है बली राजा और धन्य ही राजनिष्ठा! नहीं तो आज कल के हिंदू लोग अंग्रेजों की मेहरबानी पाने के लिए रानी के जन्मदिन पर बड़े-बड़े भाषण और बधाई देते हैं लेकिन समाचारपत्रों व रोज की बातचीत में उसके खिलाफ बोलने का दिखावा करते हैं।

धोंडीरावः बलिराजा द्वारा बुलाए गए सरदारों ने क्या कोई मदद नहीं की, या वह पहुंचे ही नहीं?

जोतिबाः बहुत सारे छोटे-बड़े तमाम सरकार, क्षेत्रपति अपनी फौज लेकर अश्विन की चौदहवीं को बाणासुर से आ मिले। जैसे ही राज्य के अंदर यह खबर फैली राज्य के सारे ब्राह्मण विप्र अपने-अपने बाल बच्चों को लेकर वामन के पास पहुंच गए। इससे वामन बहुत मुश्किल में पड़ गया। इसका हल निकालने के लिए उसने पूर्णिमा की रात्रि को सारे विप्रों को जमा कर लिया और रात पर जगराता चलता रहा कि कैसे अपना बचाव किया जाए। उन्होंने अपने देवताओं का आह्वान किया, प्रसाद बांटा। इसके अगले दिन सब बाल-बच्चों और फौज सहित अपने राज्य की सीमा पर जमा हो गए और बाणासुर की बाट देखने लगे।

धोंडीरावः इसके बाद बाणासुर ने क्या किया?

जोतिबाः इसके बाद बाणसुर ने अचानक वामन सेना पर हमला बोल दिया, उनके पास जो कुछ भी था सारा का सारा लूट लिया। उसने उसको और उसके तमाम लोगों को हिमालय पर्वत पर खदेड़ दिया। उसने पर्वत की तलहटी में अपना डेरा जमा कर घेरा डाल दिया और वामन को दाने-दाने के लिए मोहताज कर दिया। बहुत सारे लोग भूख से मारे गए। इससे वामन का कलेजा छलनी हो गया यानी इस दुख में मर गया। इससे बाणसुर के लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गई, कहा जाता है कि वामन विप्रों के अंदर बहुत बड़ी उपाधी होती थी, उसका नाश होने से उनका दुख-दर्द दूर हो गया। विप्रों के अंदर भी तभी से उपाध्ये नाम की परंपरा पड़ी होगी। फिर तमाम उपाध्यायों ने मिलकर इस युद्ध में मारे गये तमाम लोगों की चिता जलाई, जिसको अभी होली कहा जाता है। उन सबका संस्कार किया, क्योंकि पहले भी उनके अंदर मनुष्य को जलाने की पंरपरा चली आ रही थी। उसी तरह बाणसुर सहित तमाम क्षत्रियों ने मिलकर युद्ध में मारे गए अपने वीर साथियों की याद में फालगुन वद्य मनाया, हाथों में नंगी तलवारें लेकर बहुत जोश और

आनंद के साथ उन्होंने नाचगाना किया और अपने वीरों का सम्मान किया। क्षत्रियों में बहुत लंबे समय से मृत आदमी को जमीन में दफनाने की लंबी परंपरा रही है। अंत में बाणासुर ने बचे हुए उपाध्ये की रक्षा के लिए कुछ लोगों को वहां पर रखा और बाकि सब सरदारों को लेकर वह वापिस अपने मुख्य राजधानी में पहुंच गया, जहां बड़ा उत्साव मनाया गया। अगर उसका यहां पर अधिक विस्तार से उल्लेख किया गया तो डर है कि यह किताब बहुत बड़ी हो जाएगी। इसके बाद उसने अपने सारे धन की गिनती करते अश्विन वद्य त्रोदशी को पुजा पाठ किया और वद्य चतुर्दशी और आमवश्य को अपने सारे सरदारों को बुलाकर उत्तम भोजन करवाया और मौज मनाई। इसके बात कार्तिक एकादशी को उसने सारे सरदारों को योग्यता के हिसाब से इनाम देकर अपने-अपने क्षेत्रों में भेज दिया और आदेश दिया कि काम के समय हाजिर हो जाना। इससे वहां की बच्ची-बुढ़ी तमाम महिलाओं को बहुत खुशी हुई। कार्तिक की द्विवादशी को बहनों ने युद्ध से आए अपने भाईयों को अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर खिलाए, उनको खुश किया और याद दिलाया कि अला बला जाए – बली का राज आए। उस दिन से आज तक हर साल दिवाली के दूसरे दिन क्षत्रियों में भैयादूज मनाने और बली के राज को याद करने का रिवाज है वहीं उपाध्यायों परिवारों में इस तरह का बिल्कुल भी कोई रिवाज नहीं है।

धोंडीरावः कहते हैं कि भगवान विष्णु ने खुद राजा बली को खत्म करने के लिए वामन अवतार लिया था। वामन ने भिखारी का ढोंग रचकर बली राजा को फंसाया था, इसके बाद उसने उसे भीख में तीन पग भूमि मांगी थी। जैसे ही राजा बली ने उसको भीख देना स्वीकार कर लिया तो तुरंत वामन ने उतना बड़ा शरीर बना लिया कि उसके एक पग में पृथ्वी और दूसरे पग में आकाश माप लिया, बली राजा को लगा कि तीसरा पग कहां रखवाऊं तो उसने कहा कि वह तीसरा पांव उसके सिर पर रख दे। इसके बाद उसने उसके सिर पर पांव रख कर उसको खत्म कर दिया, ऐसा उपाध्याय लोगों ने अपने भागवत पुराणों में लिखा है। यह तो आपने जो सच्चाई बताई उससे सारा झूठ नजर आता है। इस बारे में आपके क्या विचार हैं, इसको बताओ?

जोतिबाः इस पर तो आप ही विचार करो, जिस गेंडे ने अपने दो पगो में ही पूरी पृथ्वी और आकाश माप लिया हो, उस गेंडे के पहले कदम से ही कितने ही गांव चकनाचूर हो गए होंगे, या नहीं? दूसरा कदम जैसे ही उसने आकाश में डाला होगा तो कितने ही तारे टूट कर इधर-उधर हो गये होंगे या नहीं! तीसरा जब उसने अपना पांव आकाश में रख लिया होगा तो उसकी धड़ कहां पर होगी। तब बीच में तो केवल उसका ही सिर बचा होगा तो इसने अपने सिर पर तीसरा कदम क्यों नहीं रखा। केवल और केवल धोखेबाजी से ही उसने बलीराजा के माथे पर अपना पांव रखा और उसको खत्म कर दिया। ऐसा कैसे हुआ?

धोंडीरावः क्या सचमुच में यह गेंडा, विष्णु के अवतार था? तो उसने ऐसी घटिया दगाबाजी कैसे की? अगर ऐसा घटिया विष्णु का अवतार है तो इतिहासकारों को इसे धिक्कारना चाहिए था। क्योंकि उनके लेखन अनुसार वामन कपटी, घातक और हरामखोर साबित होता है, जिसने अपने पर उपकार करने वाले को ही खत्म कर दिया।

जोतिबाः चौथी बात यह भी है कि जब उस गेंडे का एक पांव जमीन पर तो दूसरा आकाश में था

तो वहां स्वर्ग से उसे धरती पर मौजूद बली से आवाज मारकर पूछा होगा अब तीसरा पांव कहां पर रखूं, कैसे तेरा कहा पूरा करूं? तब आकाश से पृथ्वी के बीच उन दोनों के बीच संवाद हुआ होगा तो इस धरती पर रहने वाले रूसियों, फ्रांसीसियों, अंग्रेजों और अमेरिकी आदि लोगों को तक यह बात क्यों नहीं सुनाई दी? चलो उसकी बात पहुंच गई होगी, लेकिन एक साधारण बली राजा इंसान की आवाज उस तक कैसे पहुंची कि चल अब तीसरा पांव मेरे सिर पर रख दे? ये भी बड़ी अजीब बात है। और पांचवी बात यह है कि इस इतने बड़े गेंडे के बोझ से क्या धरती का कुछ न बिगड़ा, ये भी कम आश्चर्य की बात नहीं है।

धोंडीरावः अरे अगर उस दिन धरती खत्म हो गई होती तो हम कहां से बचते? उस विशालकाय ने क्या क्या खाकर अपना गुजर बसर किया होगा? और जब वह मरा होगा तो चार व्यक्ति उसको कंधा देने के लिए कहां से मिले होंगे या फिर वहीं पड़ा रहा होगा और वह कुत्तों, सियारों का भोजन बन गाय होगा। या फिर उसको जलाने के लिए इतनी लकड़ियां कहां से लाए होंगे? कुल मिलाकर बात ये है कि जो कुछ भागवत आदि में लिखा है सारे के सारे ग्रंथ झूठ से भरे पड़े हैं, उनको इन सवालों का कोई जवाब नहीं है, यह सब बाद में उपाध्यायों ने उसमें घुसा दिया है बस वह केवल दंतकथाएं है। इससे तो यही सिद्ध होता है।

जोतिबाः बाबा - तू एक बार खुद भागवत आदि को पढ़ कर देख ले, तो तब तुम्हें बागवत की बजाए इसापनीती ही अच्छी लगने लगेगी।

अध्याय 7

ब्रह्मा, ताड़पत्र पर लिखने की शुरुआत, जादू मंत्र, संस्कृत का मूल, अटक नदी के पार जाने पर पाबंदी, घोड़े आदि जानवरों को पहले ब्राह्मण खाते थे, भट, राक्षस, यज्ञ, बाणासुर की मृत्यु, अछूत, धागे के निशान, बीज मंत्र, महार, शूद्र, कुलकर्णी, कुलंबी कुणबी, शूद्रों के देश में सोंवळे (मांगलिक) धर्मशास्त्र , मनु, भट्ट आचार्य शिक्षा, अति भयंकर परिणाम, प्रजापति की मृत्यु, ब्राह्मण आदि के बारे में...

धोंडीरावः वामन मरने के बाद उपाध्यायों का मुखिया कौन बना?

जोतिबाः इस घटना के बाद उनको अपना मुखिया चुनने का समय ही नहीं मिला। इसलिए उन्होंने केवल ब्रह्मा नाम का एक क्लर्क टाइप बंदा रख लिया, वही सारे राजकाज देखता था। वह बहुत ही गप्पोड़नाथ था और जैसे तैसे अपना मतलब पूरा करना जानता था। उसकी बातों पर कोई एक पैसे का विश्वास नहीं करता था। इसलिए उसको चार मुंह वाला ब्रह्मा कहा जाने लगा। कुल मिलाकर वह बहुत ही चतुर, हठीला, धूर्त और दुस्साहसी आदमी था।

धोंडीरावः सबसे पहले ब्रह्मा ने क्या किया?

जोतिबाः सबसे पहले ब्रह्मा ने ताड़पत्रों पर नुकिली चीजों से लिखने की तरकीब निकाली और उसको ईरान के समय के जो जादू मंत्र या जो कहानियां याद थी उनको उकेरा। यह उसने समय की चलताउ भाषा सर्वकृत (जिसका अपभ्रंश बना संस्कृत) में लिखा था, जैसे आज कल की पारसी भाषा हैं, इसमें उसने छोटी-छोटी बातें लिख मारी। इससे उसकी बहुत प्रशंसा हुई और तभी से कहा जाता है कि ब्रह्मा के मुख से ही कहानियां, जादुमंत्र विद्या (वेद) निकले हैं। इतने में हुआ ये कि यहां पर ईरानी लोग भूख से मरने लग गए थे। इसलिए यहां से आर्य वापिस ईरान की तरफ भागने लगे, तभी उन्होंने यह पाबंदी लगा दी कि कोई भी अटक नदी पार नहीं करेगा यानी कोई समुद्र पार न जा पाए इसका उन्होंने पूरा बंदोबस्त कर लिया था।

धोंडीरावः तो फिर उन्होंने जंगलों में क्या-क्या खाकर अपनी जिंदगी बचाई होगी?

जोतिबाः उन्होंने जंगलों में मिलने वाले कंद-मूल, फल-फूल, जंगल में मिलने वाले विभिन्न तरह के पशु-पक्षी यहां तक कि अपने घोड़े तक मार कर खाए और अपना जिंदगी बचाई। इसलिए उनको यहां के रक्षकों को तीव्र घृणा हो गई थी। बाद में रक्षक शब्द का अपभ्रंश राक्षस और भ्रष्ट शब्द का अपभ्रंश भट बन गया। बाद में भट यानी ब्राह्मण लोगों ने तब मुसीबत के समय विभिन्न जीव-जंतुओं का मांस खाया लेकिन बाद में उनको इससे बहुत शर्म आने लगी और उन्होंने मांस खाने पर पाबंदी लगा दी लेकिन जीभ का स्वाद कहां छूटता है। बाद में उन्होंने मौका देख कर अपने नीच कार्यों को छुपाने के लिए नियम बनाया कि पशुओं की बली देकर खाने से उससे बहुत पुण्य मिलता है और इस प्रकार उन्होंने पशु यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि की स्थापना की और इस बारे में मोटे-मोटे

ग्रंथ लिख मारे।

धोंडीराव: बाद में ब्रह्मा ने और क्या-क्या किया?

जोतिबा: बली राजा के पुत्र बाणासुर के मरने के बाद उस राज्य में कोई बड़ा मुखिया नहीं रहा, जो जहां थे वहां के राजा बन गए और ऐसो आराम में मस्त रहने लगे। ऐसा मौका देख कर ब्रह्मा ने अपने बराबर के सारे ब्राह्मण परिवारों को (जिसका अपभ्रंश बना परवारी) जमा कर यहां के रक्षकों यानी राक्षसों पर एक रात को अचानक हमला बोल दिया। बाणासुर के राज्य पर हमला बोलने से पहले उसके दिमाग में आया कि अगर हमले के बाद इधर-उधर हो गए तो एक दूसरे को कैसे पहचानेंगे। इसकी तरकीब यह निकाली कि ब्रह्मा ने अपने सारे पारिवारिक सदस्यों के गले में एक सफेद रंग के सूत का धागा बांध दिया जो कि उनकी जाति का सूचक था, इसको आज ब्रह्मसुत्र यानी जनेऊ कहा जाता है। इसके अलावा उसने हरेक को एक जातिबोधक बीज मंत्र प्रदान किया जिसको आज गायत्री मंत्र के नाम से जाना जाता है, इसको सिखाते हुए कहा गया था कि कोई भी संकट आ जाए, कुछ भी हो जाए लेकिन इस मंत्र को कोई क्षत्रियों को नहीं बताएगा। इस प्रकार भट अपने परिवार की पहचान करने में सक्षम हो सकते थे।

धोंडीराव: इसके बाद ब्रह्मा ने क्या किया?

जोतिबा: इसके बाद ब्रह्मा ने अपने सारे भट परिवारों को जमा कर बाणासुर के राज्य पर चढ़ाई कर दी, वहां उसने बहुत सारे छोटे-बड़े सरदारों को हरा बड़े इलाके को अपने अधीन कर लिया। इसके बाद रणभूमि में कमर कस के लड़ने वाले महाअरी (जिसका अभी अपभ्रंश है महार) क्षत्रियों सहित अन्य लोगों का सबकुछ छीन लिया और सत्ता के नशे में चूर हुए भटों ने उनको क्षुद्र (अपभ्रंश शूद्र) लोग कहते हुए उनको अपना दास बना लिया। उनमें से कितने ही लोगों को उन्होंने अपने घरों में नौकर रख लिया। बाकि बचे शूद्रों को उन्होंने गांव गांव में एक भट अधिकारी को भेजकर भूमि की कुळेवारी (नाप जोख) करवायी और उन सब को खेती के कामों में लगा दिया और उनको केवल पेट भरने लायक अन्न देने की प्रथा शुरू हुई। इसलिए उस अधिकारी का गांव में नाम कुळेकारणी पड़ा। (आज इसी को कुलकर्णी कहते हैं)। वहीं इस जमीन पर काम करने वाले शूद्रों को कुळवाड़ी कहा गया जिसको आज कुळंबी या कुणबी कहा जाता है। खेतों में काम करने वाली कुणबी महिलाओं को कभी-कभी भटों के घर सेवा करने के लिए भी जाना पड़ता था, इसलिए कुणबी और दासी इन दोनों शब्दों के अंदर तिल मात्र का भी भेद नहीं दिखाई देता। उक्त बातों को आधार बनाकर अगर लिखा जाए तो यह ग्रंथ बहुत बड़ा बन जाएगा। बाद में सत्ता के नशे में भट लगातार इतने अंधे होते गए कि शूद्रों को बेहद नीच मानने लगे।

लेकिन आज भट (चाहे झाड़ू लगाने वाले मांग महारों की तरह बिल्कुल अनपढ़ क्यों न हो) जब भूखे मरने लगे हैं तो वह न चाहते हुए भी नीच कर्म करने लगे हैं, अब उनके लिए पाप-पूण्य, विधि-विधान कोई मानये नहीं लगते, वह अज्ञानी शूद्रों को फंसाने का एक भी मौका नहीं छोड़ते। अब कोई पार न बसाई तो वह आजकल शूद्रों के घर-घर जाकर धर्म के नाम पर भीख मांग-मांग कर अपना पेट पाल रहे हैं, लेकिन वह शूद्रों के यहां कोई नौकरी नहीं करेंगे, उनके खेत में काम करने और उनके पशु चराने के लिए तैयार नहीं

होंगे, उनकी गउशालओं से गोबर उठने के लिए तैयार नहीं होंगे, हल, कुदाल चलाने, बैल-गाड़ी हांकने, खोदने, खुरपी उठाने, पानी देने, खेत से चारा काटकर कर, सिर पर ढोकर लाने के लिए तैयार नहीं होंगे, रात भर हाथ में लठ लेकर खेत की रखवाली के लिए तैयार नहीं होंगे, खेत से फसल या सब्जियों की गठरियां घर ढोने में उनकी बेइज्जती हो जाएगी। शूद्रों के घरों में नौकरी करने, उनके घोड़ों को साफ सुधरा रखने, उनके लिए दाना डालने, उनके जूते-चप्पलों को संभालने, उनके घरों की साफ-सफाई करने, उनके घरों की लालटेन को साफ कर जलाने में उनकी इज्जत चली जाती है। इसी तरह भटों की घरवाली भी अगर शूद्रों की महिलाओं को नहलाएंगी, धुलाएंगी, उनके कपड़े धोएंगी, उनकी चौंटियां बनाएंगी तो उनकी इज्जती चली जाएगी।

वहीं जब अगर महाआरी योद्धाओं ने अपने शूद्र भाइयों को भटों की गुलामी से मुक्त करवाने की कोशिश की तो उन्होंने उन पर हमले किए। सारे के सारे भट शूद्रों से इतना द्वेष करने लगे कि वह शूद्रों का छुआ अन्न तक खाने के लिए तैयार नहीं हुए और आज तक भट इसका पालन करते आ रहे हैं, और शूद्रों का छुआ पानी तक नहीं पीते।

इस प्रकार शूद्रों द्वारा छुई किसी भी चीज को अछूत मानने की प्रथा चल पड़ी। इसके बाद तो कितने ही शूद्रद्रोही भट लेखकों ने सारी लाज शर्म छोड़ कर छुआछूत को इतना बढ़ाचढ़ा कर लिखा कि अगर कोई भट किसी शूद्र को छू लो तो वह पूरी तरह से अपवित्र हो जाएगा, और धर्मशास्त्रों जैसी अनेक ऐसी नापाक किताबें लिख डाली, कि कहीं शूद्र अपने प्राचीन गौरशाली इतिहास को जान लेंगे तो उनको नोच-नोच कर मारने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। यही कारण था कि भटों ने शूद्रों के बच्चों के शिक्षा-दिक्षा ग्रहण करने पर पूरी पाबंदी लगा दी थी। इतना ही नहीं उन्होंने इस बात का पूरा प्रबंध किया कि अगर कोई ब्राह्मण भी धार्मिक ग्रंथ पढ़ता है तो शूद्रों के कानों तक सुनाई नहीं देना चाहिए। इस बारे में मनुसहिंता में दुनिया भर के उदाहरण भरे पड़े हैं। इसलिए आज भी भट ब्राह्मण इन अपवित्र किताबों को शूद्रों के सामने पढ़ते नहीं हैं। अब जब इसाई अंग्रेज सरकार का दबदबा बढ़ा है तब जाकर विद्या सब के लिए शुरू हुई और अब भट आचार्य यह कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं कि वह शूद्रों को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाएंगे, लेकिन फिर भी वह अपने पुरखों के लुच्चपने और हरामखोरी को सबके सामने समझाएंगे ऐसा भ्रम नहीं पालना चाहिए।

वह शूद्रों के बच्चों को केवल कामचलाऊ व्यवहारिक ज्ञान देते हैं और कई तरह से देश पर गर्व करने के झूठा दर्शन उनके अंदर भर कर पक्के अंग्रेज राजभक्त बना रहे हैं, इतना ही नहीं वह शिवाजी जैसे धर्म भोले, अज्ञानी, शूद्र राजा के बारे में यह बता रहे हैं कि उसने मुसलानों से अपना राज मुक्त करवा कर कैसे ब्राह्मणों के गाय दान की थीं, ऐसी-ऐसी बहुत सारे बातें सिखा कर वह उनको खोखले धार्मिक मूर्ख व्यक्ति बना कर छोड़ेंगे। इसलिए शूद्रों के अंदर ऐसे विद्वान पैदा नहीं हो रहे हैं जो इस तरह के सारे खतरे उठाने के लिए तैयार हों। भटों ने शूद्रों पर इतनी सफाई के साछ जुल्म-अत्याचार किए हैं अगर उन सब को लिखा जाए तो, अंग्रेज कलकता के नील किसानों पर जो जुल्म-अत्याचार कर रहे हैं वह इसकी तुलना में सागर में बूंद समान है। लेकिन जिस तरह से सत्ता में हर जगह भटों का हाथ घुस गया है उससे वह केवल गरीब व अज्ञानी शूद्रों जनता का ही

नहीं वह खुद अंग्रेज सरकार का भी अनिवार्य रूप से बहुत नुकसान करेंगे। इस बारे में हमारी स्याणी सरकार को भी जानकारी है लेकिन वह तो जागते भी सोई हुई है, और भटों के कंधे थपथपा रही है और उन्हीं की नीतियों पर चल रही है। इसका आने वाले समय में बहुत खतरनाक परिणाम होगा इस बारे में किसी तरह का शक नहीं होना चाहिए।

संक्षेप में, जब ब्रह्मा ने यहां के स्थानीय मूल निवासियों को अपना दास बना लिया तो वह गर्व से इतना फूल गया था कि उसने महाअरों का नाम प्रजापति रख दिया था। वहां ब्रह्मा के मरने के बाद आर्य लोगों का मूल नाम भट यानी ब्राह्मण पढ़ गया और उनका मूल नाम विलुप्त हो गया था.

अध्याय 8

परशुराम, मां की हत्या, इक्कीस हमले, दैत्य, रावण की आश्रय में खंडेराव, नौ खंडों की जणाई, सात देवियां, महारों को गले में काला धागा, अति शूद्र, अछूत, मतांग, चंडाल, महारों रौंदना, ब्राह्मणों का गंधर्व विवाह के लिये निषेध, क्षत्रिय बच्चों की हत्या, प्रभु, रामोशी, जिनगर आदि लोग, परशुराम की हार और उसका जान देना, चिरंजीवी परशुराम को निमंत्रण आदि के बारे में.

धोंडीरावः प्रजापति के मरने के बाद ब्राह्मणों का मुखिया कौन हुआ?

जोतिबाः परशुराम।

धोंडीरावः परशुराम का स्वभाव कैसा था?

जोतिबाः परशुराम स्वभाव से बहुत उदंड, दुस्साहसी, विनाशकारी, निर्दयी, मूर्ख और नीच स्वभाव का आदमी था। उसके तो जन्म देने वाली मां रेणुका का सिर कलम करने में भी रंचमात्र हाथ नहीं कांपे थे। वैसे वह शारीरिक रूप से मजबूत और जबरदस्त तीरंदाज था।

धोंडीरावः उसके शासन काल में क्या-क्या हुआ?

जोतिबाः प्रजापति के मर जाने के बाद बचे हुए महाअरों ने ब्राह्मणों के हाथों से अपने बंधुओं को आजाद करवाने के लिए परशुराम के साथ घनघोर घमासान इक्कीस युद्ध किए, जिस कारण उनका नाम द्वैती और बाद में अपभ्रंश दैत्य बन गया। जब परशुराम ने एक बार सभी महाअरों को हरा दिया तो बहुत सारे महावीर निराश और हताश होकर अपने-अपने दोस्तों के राज्यों की तरफ चले गये और कैसे न कैसे दिन गुजारे। कहा जाता है कि जेजुरी के खंडेराव ने रावण से के पास जाकर आश्रय लिया। इसी प्रकार नौ खंडों और सात आश्रयों ने भी कहीं न कहीं जाकर अपने दिन काटे। इसकारण ब्राह्मणों ने नौ खंडाबों को स्त्रिवाचक नाम देते हुए नऊ खणाची जाणाई और सात आश्रयों का नाम सातीअसरा यानी सात देवियां रखा। बचे हुए जिन महाअरों को परशुराम ने युद्ध के समय बंदी बनाया उनको जैसे कभी ब्राह्मणों को निशानी बांधी थी वैसे ही महारों के गले में काला धागा बांध दिया, और कसम दिलाई कि वह अपने शूद्रों बंधुओं के न छुएं। इसके अलावा परशुराम ने महाअर क्षत्रियों को अतिशूद्र, महार, अंत्यज मांग और चंडाल जैसे संबोधनों से प्रचारित किया। उसने उत्पीड़न की जो परंपरा शुरू की वह यहां के अलावा और कहीं नहीं है। जैसे उस निर्दयी ने ऐसी परंपरा चलाई कि जब उसके किसी आदमी को बड़ी-बड़ी इमारत बनानी होती तो उसकी नींव में जिंदा जी महार महिला और पुरूष को चिन दिया जाता था, वह चीखे और चिल्लाए ना, सुन कर किसी को उस पर दया न आए इसलिए उनके मुंह को तेल और सिंदूर से भर दिया जाता था। ऐसी प्रथाएं जैसे-जैसे मुसलमानों का राज्य मजबूत होता गया वैसे-वैसे अपने आप बंद होती गई। खैर, महाअरों के खिलाफ लड़ते-लड़ते परशुराम के बहुत सारे आमदी मारे गए, नौबत यह आ गई ब्राह्मणों की अपेक्षा उनकी विधवा ब्राह्मणियों की संख्या अधिक हो गई, उनका क्या

किया जाए इसके लिए बहुत बड़ी पंचायत बुलाई गयी। उस में उन्होंने ब्राह्मणों की महिलाओं के लिए पुनर्विवाह प्रतिबंधित कर दिया गया, इससे उनकी कुछ न कुछ समस्या हल हुई।

परशुराम अपने ब्राह्मण लोगों के बड़ी संख्या में मारे जाने से इतना क्रोधित हुआ कि उसने बाणासुर के पूरे राज्य में क्षत्रियों के बीजनाश का बिड़ा उठा लिया। इसके लिए उसने महाअर क्षत्रियों की निर्दोष विधवाएं जो जान बचाकर इधर उधर जंगलों में भाग गई थी उनको पकड़-पकड़ लाने का अभियान शुरू कर दिया ताकि वह औरतों बच्चे पैदा कर दोबारा क्षत्रिय न पैदा कर सकें। भगवान की बड़ी कृपा से इस अभियान से जो मासूम बच्चे बच गए थे उन्होंने कुछ कुल बनाए जो आज परभु लोगों के समाज में मिलते हैं। रामोशी, जिनगर, तुंबडीवाल और कुम्हार आदि जाति के लोग भी परशुराम के इस क्रूर अभियान के शिकार हुए। क्योंकि उनकी बहुत सारी परंपराएं शूद्रों के साथ मिलती हैं।

सार ये हैं कि जिस तरह से हिरण्याकश्यप से लेकर बली राजा के पुत्रों (बाणासुर की कन्या उषा, कृष्णा के प्रद्युम्न नाम के लड़के से ब्यही गई थी।) तक जो विनाश लीला चली और जैसे उनका वंशनाश कर मिट्टी में मिलाया उससे बचे हुए अज्ञानी क्षेत्रपतियों को यह लगने लगा कि ब्राह्मण लोग जादू-विद्या में बहुत माहिर हैं। इसका असर यह हुआ कि वह ब्राह्मणों के मंत्रों से बहुत अधिक डरने लगे। लेकिन तब तक परशुराम की मूर्खता और कारगुजारियों से ब्राह्मणों को बहुत अधिक नुकसान हो चुका था। इसकारण सारे ब्राह्मण लोग उसके कोसने लगे थे, वह इतनी अधिक नफरत उससे करने लगे थे कि एक क्षेत्रपति के लड़के रामचंद्र ने अपनी शादी के समय राजा जनक के घर भरी सभा में उसके धनुष को तोड़ डाला, इससे परशुराम इतना क्रोधित हुआ कि रामचंद्र जब वापिस अपनी घरवाली को लेकर वापिस अपने घर जा रहा था तो रास्ते में ही युद्ध करने पर उतारू हो गया। इस युद्ध में परशुराम को मुंह की खानी पड़ी और वह इतना खज्जल हो गया कि अपने पूरे राजपाठ को त्याग दिया, अपने कुछ सगे-संबंधियों को साथ लेकर वहां से कोंकण के निचले भाग में जाकर बस गया। वहां जाने के बाद उसको अपने जीवन में किए गये तमाम बुरे कर्मों का पश्चातप हुआ और उसने कहां और कब प्राण त्यागे इस बात का किसी को कुछ पता नहीं है।

धोंडीराव: परशुराम विष्णु का अवतार है तो वह अमर हुआ, वह मरेगा कैसे। ये बात ब्राह्मणों के ग्रंथों में भी लिखी हुई है लेकिन आप कहते हैं कि उसने जान दे दी थी, ऐसा कैसे हुआ?

जोतिबा: दो साल पहले मैंने शिवाजी का पावड़ा लिखा था - उसमें सारे ब्राह्मणों को कहा गया था कि वह अपने परशुराम को बुलाओ, मेरी उपस्थिति में आज साबित करो की आज के मांग, महारों के पुरखों के साथ परशुराम ने इक्कीस बार युद्ध किया था या नहीं, उसके खिलाफ लड़ने वाले महाअरी क्षत्रिय थे या नहीं। इसके बारे में ब्राह्मणों को भी चिट्ठी लिखी गई थी। लेकिन उन्होंने परशुराम को नहीं बुलाया। इस से पूरी तरह साबित हो जाता है कि वह किसी विष्णु का अवतार नहीं था न ही अमर था, अगर वह सच होता तो ब्राह्मण कभी का उसको खोज निकालते और मेरी तो क्या इस दुनिया के सारे मुसलमानों, ईसाइयों का समाधान कर देते, मुसलमान लोगों को अपने मंत्रों के दम पर कभी का हरा कर नेस्तनाबूद कर डालते।

धोंडीरावः मेरा मानना है कि आप को एक बार खुद ही परशुराम को बुलाकर देखना चाहिए। अगर वह जिंदा हुआ तो वह निश्चित रूप से बुलाने से आ जाएगा। क्योंकि आज कर ना ब्राह्मण भी पता नहीं कितने तरह का ज्ञान बांटते फिर रहे हैं, अगर परशुराम आ गया तो इनका ज्ञान ध्यान भी ठीक कर देगा। जैसे कई कहते हैं कि शास्त्र विधि विधान के अनुसार करेले नहीं खाने चाहिए, और मालिओं द्वारा उगाई गाजरों को चुराने की उनमें होड़ लगी हुई है।

जोतिबाः ठीक है, ऐसा कर के देख लेते हैं। मैं चिट्ठी लिख देता हूं...

अमर परशुराम उर्फ विष्णु के अवतार के नाम
स्थान – जहां कहीं भी हो
दादा परशुराम,

तू ब्राह्मणों के ग्रंथों के अनुसार तो अमर है। तू चाहे कड़वा हो लेकिन विधीविधान अनुसार आपने करेले खाने पर पाबंदी तो कभी नहीं लगाई थी। अब आपको पहले की तरह मछुओं की लाश से दोबारा नए ब्राह्मण पैदा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि यहां तो इतनी तरह के ज्ञानी-ध्यानी ब्राह्मण पैदा हो गए हैं कि उनको और अधिक ज्ञान भी आपको देने की जरूरत नहीं है। बस तू यहां पर आकर शूद्रों द्वारा उगाई गई गाजरें खाने के जुर्म से छुटकारा देने के लिए उनका चांद्रायण प्रायश्चित करवा दे, पहले की तरह आज भी तु अंग्रेजों, फ्रांसिसी जैसे लोगों को अपने वेदमंत्रों के चमत्कार दिखा दे। तू ऐसे मुंह छुपाए मत घूम। तुम इस नोटिस पर लिखी तारीख के छह महीने के अंदर हाजिर हो जाओ। इसके बाद मैं तो क्या, दुनिया के सारे लोग मान जाएंगे कि तू सचमुच में विष्णु का अवतार है। अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो फिर देखना जो हमारे यहां महार, मांग आदि म्हसोबा के पीछे छुप कर बैठे हैं यह बाहर निकल आएंगे, तुम्हारे ज्ञानी-ध्यानी ब्राह्मणों को खींच कर बाहर निकाल लेंगे और उनकी ऐसी फजिहत करेंगे जो किसी ने देखी न होगी। उनके तानपुरों के न तार रहेगी न तान रहेगी। उनको विश्वामित्र की तरह भूखे मरते कुत्ते खाने पर मजबूर न होना पड़ जाए।

1 अगस्त 1872
जूना गंज, मकान नंबर 527

आपके वास्तविक रूप बटोही
जोतिबा गोविंदराव फुले

अध्याय 9

वेद मंत्र, जादू का प्रभाव, वशीकरण, देवता आना, जप, चार वेद, ब्रह्मजाल, नारद मुनि, नए ग्रंथ, शूद्रों के ज्ञान लेने पर बंदीश, भागवत और मनु संहिता में असमानता आदि के बारे में...

धोंडीरावः आप ने तो उनकी कमर ही तोड़ दी है। आपकी माने तो परशुराम मर खप गया और उसकी माटी हो गयी। लेकिन ये बताओ उस समय के क्षेत्रपतियों पर ब्राह्मणों के मंत्रों का इतना कैसे पड़ा?

जोतिबाः हुए ये कि ब्राह्मण लोग जब भी युद्ध में हथियारों का इस्तेमाल करते थे तो वह मंत्र विधि के साथ अस्त्रों की योग्यता जांचने बिना दुश्मन पर नहीं छोड़ते थे। इस तरह विभिन्न उपायों के साथ जब उन्होंने बाणासुर और उसकी जनता का उसके राज्य और परिवार सहित मटिया मेट कर दिया तो बाकि सारे भोले-भाले क्षेत्रपतियों के दिलो-दिमाग पर ब्राह्मणों के मंत्रों का खोफ घर कर गया। इसका उदाहरण देखो – जब भृगु नामक ऋषि ने विष्णु की छाती पर लात मारी, तब विष्णु ने ऋषि के पांव की मालिश करनी शुरू कर दी कहीं ऋषि को चोट न पहुंची हो। इसका मतलब शुद्ध रूप से स्वार्थीपन है। क्योंकि जब साक्षात आदिनारायण यानी विष्णु लात खाने के बाद भी ब्राह्मण के पांव दबा रहा है तो इसका मतलब ये हुआ कि जो हम शूद्र हैं (उनके हिसाब से क्षुद्र प्राणी), अगर ब्राह्मण हमें लात घूंसों से मार मार कर प्राण भी ले ले तो हमें चूं भी नहीं करनी चाहिए। हमारे मन में ब्राह्मणों की धाक जमाने के लिए यह सब प्रपंच रचे गए हैं।

धोंडीरावः लेकिन हमारे लोगों के पास भी जो कुछ जादू-मंत्र की विद्या है यह उन्होंने कहां से सिखी होगी?

जोतिबाः वर्तमान में लोगों के पास जो काला जादू या कहें मूठीकरण, वशीकरण आदि बंगाली जादूमंत्र विद्या है यह वेदों के जादूमंत्र से ही आई होगी, इसको कोई नहीं नकार सकता। फिर भी इसमें बहुत अधिक फेर बदल हुआ होगा, कुछ अपभ्रंश बने होंगे, फिर भी हम देखते हैं कि काले जादू के ज्यादातर मंत्रों में ओम नमः ओम ही नः आदि वेदमंत्र वाक्य आते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है कि आर्यों के पुरखे जब पहले आए हों तो उन्होंने बंगाल में अपनी पहली बस्ती बसाई हो, वहां से जादूमंत्र विद्या चारों तरफ फेली होगी जिससे इसका नाम बंगाली विद्या या बंगाल का काला जादू पड़ गया होगा। इतना ही नहीं, आर्य लोग पहले आते ही गवारों की तरह देवता आने का खेल खेलते फिरते थे। शुरूआत में उनके अंदर जो लोग देवता आने का खेल खेलते थे उनको ब्राह्मण कहा जाता था। वह सोमरस नाम की दारू पीते थे और पी कर फिर जो बड़-बड़ बकते थे तो कहते थे हमारे अंदर देवता आ गया है, हमारे अंदर देवता बोल रहा है। और इस तरह वह अज्ञानी लोगों को ठगते थे। इसको कितने ही योरोपीय लेखकों ने सिद्ध किया है। वेदों को आधार बना कर आज भी प्रगतिशील युग में ब्राह्मण भट लोग अपना पेट पालने के

लिए जप-तप, अनुष्ठान, जादू-मंत्र आदि करते हैं और अज्ञानी कुणबियों को धागे-ताबिज देकर लूटते हैं। दिन रात मेहनत करने वाले लोगों को कहां उनके छल कपट की जांच करने की फुरसत होती है। सारा दिन तो अपनी खेती-बाड़ी में बाल बच्चों के भरण पोषण के लिए, और सरकार के लिए लगान जमा करने के लिए जिंदगी घिसाते रहते हैं।

धोंडीरावः ब्राह्मण को इस बात की डींगे हांकते रहते हैं कि स्वयंभू ब्रह्मा के मुख से चारों वेद निकले हैं, लेकिन आप कुछ और ही कह रहे हैं?

जोतिबाः यह सब झूठ है। फिर भी अगर उनकी बातों को सच मान लिया जाए तो मुझे ये बताओगे कि ब्रह्मा के मरने के बाद हुए कितने ही ब्रह्म ऋषि और देवऋषियों ने जो सूक्त रचे वह बाद ब्रह्मा के मुख से कैसे निकले होंगे और कैसे वेदों में जुड़े होंगे। इससे सिद्ध होता है कि चारों वेदों की रचना एक ही समय में नहीं हुआ है। बहुत सारे परोपकारी यूरोपीय लेखकों ने भी इस बात की पुष्टि की है।

धोंडीरावः भटों ने यह ब्रह्मजाल आखिर कैसे फैलाया होगा?

जोतिबाः दरअसल, ब्रह्मा मर चुका था और इसके बाद कई सारे ब्रह्मऋषि हुए, उन्होंने ब्रह्मा के लेखों के तीन भेद किया यानी वेद बनाए। उन तीन वेदों में इन ब्रह्मऋषिओं ने पहले से सुनी सुनाई आलतू फालतू की दंतकथाओं के आधार पर कई सारे फेर बदल किए, जोड़ तोड़ की। उन्होंने अपनी जरूरत के मुद्दों के हिसाब से बाद में एक नया और चौथा वेद भी घड़ दिया। उसी दौरान हुआ ये कि परशुराम ने बाणासुर और उसकी जनता को युद्ध में धुल चटा दी, इसके बाद स्वभाविक रूप से ब्राह्मणों के वेदमंत्रों और जादू टोने का प्रभाव उस समय के सारे क्षेत्रपतियों पर पड़ा। बस मौका हाथ लगते ही हिजड़ों की तरह महिलाओं में उठने-बैठने वाला नारद भाई, भोले-भाले क्षेत्रपति रामचंद्र और रावण, कृष्ण और कंस, कौरव और पांडवों के बीच दिन रात घुमते हुए, चर्चा चुगली करते हुए ज्ञान उपदेश बांटता फिरा। वह उनकी महिलाओं के साथ उठता-बैठता, कभी उनको अपनी विणा के तारों से, कभी अपने हाथ की तालियों से उनको रीझाता, कभी नाच-गाना दिखाता। एक दूसरे को आपस में लड़वाकर उसने ब्राह्मणों के सारे झंझटों दूर कर दिए। उसी दौरान जब उन पर किसी की नजर नहीं थी तो ब्राह्मण लेखकों ने उस समय उन्हों ने अपने सारे वेदमंत्र, जादू और उससे जुड़ी गपोड़ काल्पनिक कथाओं को जमा कर, कई तरह की स्मृतियां, संहिताएं, शास्त्र, पुराण आदि लिख मारे। उन्होंने ऐसा कर नए-नए ग्रंथों के माध्यम से सारे शूद्रों पर ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित कर दिया और अपने आप को बचाने के लिए हमारे सैनिक बनने के पेशे को प्रतिबंधित कर दिया और उस पर धार्मिकता का लबादा ओढा दिया। फिर इतना ही नहीं, कभी शूद्रों को उनका ब्रह्मजाल, छलकपट कभी समझ न आ जाए इसलिए बहुत सूझ-बूझ के साथ यह व्यवस्था भी कर दी कि शूद्रों के बच्चों को कोई ज्ञान नहीं देना चाहिए। ऐसा अपवित्र ग्रंथ मनुसंहिता जैसे ग्रंथों में लिखा हुआ है।

धोंडीरावः भागवत उसी समय लिखा गया था या यह बाद की रचना है?

जोतिबाः भागवत उस समय का कैसे हो सकता है। अगर ऐसा होता तो अर्जुन की सबसे बाद की संतान जन्मजेय का नाम इस में कभी नहीं आता।

धोंडीरावः आपका कहना सही है। क्योंकि भागवत कथा में अनेक पुरानी मनगढ़ंत कथाएं ऐसी

है जिससे इसपनीति हजार गुना अच्छी दिखाई देती है। क्योंकि उसमें बच्चों को दिमाग को भ्रष्ट करने वाली कोई बात दिखाई नहीं देती।

जोतिबाः इसी तरह ये भी सिद्ध किया जा सकता है कि मनुसंहिता भी भागवत के बाद लिखी गई थी।

धोंडीरावः क्या? मनुसंहिता भागवत के बाद कैसे लिखी हो सकती हैं?

जोतिबाः क्योंकि भागवत में लिखा गया है कि वशिष्ठ ने कसम खाई थी कि उसने हत्या नहीं की है, तो मनु ने अपने ग्रंथ के 8वें अध्याय के 110वें श्लेक में कैसे ये बात लिखी की उसने राजा सुदमन के सामने कसम खाई। वहीं विश्वामित्र ने मुसीबत के समय कुत्ते का मांस खाया यह बात उसके ग्रंथ के 10 वें अध्याय के 108वें श्लोक में क्यों लिखी है। इससे पता चलता है कि पुस्तक में बहुत सारे बातें विरोधाभासी हैं।

अध्याय 10

दूसरा बलीराजा, ब्राह्मण धर्म की फजीहत, शंकराचार्य की बनावटी बातें, नास्तिक मत, निर्दयीता, प्राकृत ग्रंथकार, कर्म और ज्ञान मार्ग, बाजीराव, मुसलमानों से द्वेष और अमेरिकी, स्काच उपदेशकों द्वारा ब्राह्मणों के बनावटीपन का भंडाफोड़ आदि विषय।

धोंडीरावः ठीक है उनकी हार हुई। क्योंकि आपने शिवाजी के पवाडा में लिखित सबूतों से स्पष्ट रूप से सिद्ध किया है कि चार घरों में चार ब्राह्मण ग्रंथकारों की लड़कियों ने मिलकर, घरों की कोठरियों में लटकों-झटकों का खेल खेला है।

जोतिबाः लेकिन जैसे ही इस दुनिया में एक बार फिर दीनों के दाता, महापवित्र, सत्यज्ञानी, सत्य वक्ता बलीराजा इस दुनिया में पैदा हुई वैसे ही हम सबके उत्पन्नकर्ता और सबके महापिता ने, अपने उद्देश्य को मन में धारण कर अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, सत्यमेव पवित्र ज्ञान और अधिकार सभी समान रूप से मिलें, इसलिए उसने समस्त भटों जैसे बनावटी, दुष्ट और मतलबी लोगों की दासता में जकड़े अपने दीन व दुर्बल बंधुओं को छुड़वा कर भगावान का राज्य स्थापित करने की शुरुआत की, उसने अपने जेष्ठ महिलाओं के भविष्य को किसी न किसी हद तक पूरा किया। और जहां पर मिस्टर टामस पेन्स जैसे वरिष्ठ विद्वानों के पूर्वज बलीराजा के बनकर अपने मार्ग की समस्त कठिनाइयों को दूर कर सुखी हुए। लेकिन आखिर में जैसे ही चार दुष्ट लोगों ने बली राजा को सूली पर चढ़ाया तब एक तरह से पूरे यूरोप महाद्वीप में भारी हलचल हुई और करोड़ों करोड़ लोग उसके धर्म के अनुयायी बन गए. वह अपने उत्पन्नकर्ता की तरह इस दुनिया में उसका राज्य स्थापित करने के लिए दिन रात एक करने लगे।

इस तरह उनके कारण इस देश में जब थोड़ा बहुत सुधार हुआ तो कितने ही बुद्धिमान बलियों ने घर की कोठरियों में छोकरियों द्वारा खेले जा रहे लटके-झटकों के खेल को चकनाचुर कर दिया। मतलब सांख्यमुनि जैसे बुद्धिजीवि सत्यवचनी लोगों ने ब्राह्मणों के वेदमंत्र व जादू टोने से चमत्कार दिखाने, पशुओं का मार कर खाने वाले, जात्रा-यात्रा के नाम पर नियमित गोमांश खाने वाले घमंडी, मतलबी, अनाचारी, दुष्टता आदि दुर्गणों से भरे, ब्राह्मणों द्वारा जादू मंत्रों से भरे ग्रंथों के पन्नों पर कालिख पोत कर बहुत सारे ब्राह्मणों को सुधार कर उसने अपने धर्म का अनुयायी बनाया। लेकिन कितने ही कुतर्की ब्राह्मण कर्नाटक की तरफ भाग गये, उनमें ही घोर वितंडवादी विद्या जानने वाला शंकराचार्य नामक महापंडित पैदा हुआ। उसके यह बिल्कुल भी सहन नहीं हुआ कि ब्राह्मण जाति के दुष्कर्मों के कारण उनकी हर जगह निंदा और फजीहत होने लगी है और बुद्ध धर्म का प्रचार प्रसार जोर पकड़ रहा है। उसने यह भी देखा कि उनके लोगों की जीविका ठीक नहीं चल रही है, जिन दुष्ट कर्मों की वजह से बौद्ध लोगों ने उनके तमाम ग्रंथों की निंदा की थी और जिनको हरा दिया था उसमें से गोमांस खाने और दारू पीना बंद कर, उसने अपने सारे ग्रंथों में संशोधन कर मजबूत बनाया और एक नए नास्तिक मत की स्थापना

की, इसको वर्तमान में वेदांत या फिर ज्ञानमार्ग कहा जाता है।

इसके बाद उसने शिवलिंगों की स्थापना की, इस देश में जो तुर्क आदि आए थे उनको उसने हिंदु लोगों की क्षत्रिय शाखा में शामिल किया और उनकी मदद से, मुसलमानों की तरह हाथ में तलवार लेकर, बुद्ध लोगों को हराया, अपनी जादू मंत्र विद्या और भागवत की झूठी दंतकथाओं को शूद्रों के मनों में बैठा दिया। इस शंकराचार्य के इन हमलों में उनके लोगों ने कितने ही बौद्ध लोगों को तेल के कोल्हुओं में पीड़ कर मार डाला, उनके बहुत सारे अच्छे ग्रंथों को जला डाला। उनमें से अमरकोश जैसे ग्रंथों को अपने उपयोग के लिए बचा कर रख लिया। फिर शंकराचार्य के डरपोक शिष्य दिन में भी मशाल बाल कर चलते थे, भगवान की तरह पालकी में बैठ कर घुमने लगे और सधवा नारी की तरह नाच-नाच कर धरती तोड़ने लगे। इनमें से मुकंदराज, ज्ञानेश्वर, रामदास जैसे अनेक ब्राह्मण ग्रंथकार हुए जो 'लेने एक नी, देने दो' की तरह व्यर्थ गए। उनमें से एक भी ऐसा नहीं हुआ जिसने शूद्रों के गले से दास्तव का पट्टा खोल कर दिखाया हो। उनके दुष्ट कर्मों का भंडाफोड़ न हो जाए इसलिए उनमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। हुए ये कि अपने समस्त दुष्कर्मों वाले कर्ममार्ग और नास्तिक मत के ज्ञानमार्ग से उनके दो भेद हुए और उसके बारे में उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए भारी-भरकम प्राकृत ग्रंथ लिख मारे, और इनके जिरे उन्होंने अज्ञानी शूद्रों को लूट खाया।

लेकिन इसके बाद तो उन्होंने सारी शर्म हया बेच खाई, रात को दुष्ठ कर्म और दिन में भजन-किर्तन, मुसलमानों को दिन से सवा पहर तक नहीं देखना चाहिए, दिन भर महावरी आई महिला की तरह घरों में रहना, बाजीराव की महफिल में आदिभैरव के राग पर जैसे ही समस्त ब्राह्मणों को आनंद आने लगा, उसी समय अंग्रेज बहादरों की डुगडुगी चारों तरफ बोलने लगी, उस समय बहुत और कितने ही शूद्रों को ब्राह्मणों के कपटपूर्ण दासत्व से मुक्ति दिलवाई और उनके गले से दासत्व का पट्टा खींच कर ब्राह्मणों के ग्रंथों के मुंह पर दे मारा। इससे बहुत सारे ब्राह्मणों के मन में यह बैठ गया और वह समझ गए कि ये उपदेशक अब उनके बनावटी दबदबे को शूद्रों के ऊपर चलने नहीं देंगे। इस डर से कि अब बलीराजा के मत अनुयायी उपदेशकों और अज्ञानी शूद्रों के बीच एकता हो जाएगी, बहुत सारे भटों ने बलीराजा के मत अनुयायी उपदेशकों और अंग्रेजों को इस देश से भगाने के लिए तरह-तरह की योजना बनानी शुरू कर दी, कितनो ने अपने पुरखों की ठग विद्या के पक्ष में शूद्रों के अंदर जाकर उपदेश करने लगे और शूद्रों के मनों में अंग्रेज सरकार के खिलाफ रोष भरने लगे। [उमाजी रामोशी व नाना] लेकिन अंग्रेजों के सरकारी और घरेलू कामों में से एक भी ऐसा काम नहीं है जहां कोई नौकर या अन्य किसी न किसी काम में भट लोग भरती न हुए हों।

अध्याय 11

पुराण सुनाने, झगड़ों के परिणाम, शूद्र संस्थानिक, कुलकर्णी, सरस्वती प्रार्थना, जप, अनुष्ठान, देवस्थान, दक्षिणा, बड़े कुलनामों की सभाएं आदि।

धोंडीरावः क्या ये बात सच नहीं है कि इन भट चालाक जादूगरों के मूल दंगे खोर पुरखों ने इस देश में आकर हमारे मूल पुरखों को हरा दिया और उनको अपना दास बना लिया, इसके बाद हमारे दिमागों में अपने प्रजापति होने की बातें ठूंस कर अपने दंगेखोर धर्म को स्थापित कर लिया? इसमें मुझे तो कोई ऐसी बड़ी बात नहीं लगती कि उन्होंने कोई पुरुषार्थ किया होगा। लेकिन, अगर हमारे पुरखों ने भटों के पुरखों को हराया होता तो क्या हमारे पुरखे उनको दास बनाने में कोई कमी करते क्या? या फिर जैसे अभी भट अपने उपद्रवी पुरखों की तरह मौका पाकर अपने धर्म को ईश्वर रूपक देकर अपने बनावटी धर्म को हमारे समस्त अज्ञानी शूद्रों के मनों में बिठा कर दयालु अंग्रेज सरकार के खिलाफ द्वेष भावना भड़काने की योजना बना रहे हैं, वह क्या-क्या कर रहे हैं?

जोतिबाः कितने ही भट हनुमान जैसे मंदिरों में रातों रात जगराते, कर, धार्मिकता का लबादा ओढ़ कर ज्ञान बघारते हैं, भागवत जैसे ग्रंथों में से झूठी बातें, पुराण आदि अज्ञानी शूद्रों को सुनाते हैं और उनके दिलो-दिमाग को भ्रष्ट कर रहे हैं, वह कहते हैं कि बळी के मत अनुयायियों की छाया में भी खड़े होना सही नहीं है। क्या वह मौका देखकर, अपने झूठे धर्म ग्रंथों में से कल्पित दंतकथाएं सुनाकर एक तरह से सारे अज्ञानी लोगों के मनों में अंग्रेज राज्य के खिलाफ द्वेष भरते हुए देश में बहुत बड़ा उपद्रव मचा रहे हैं या नहीं?

धोंडीरावः हां, सही है, क्योंकि आज तक जितने भी बड़े-बड़े उपद्रव हुए उनमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुख्यतः भट ही नेतृत्वकारी रहे। जैसे उमाजी रामोशा उपद्रव में धोंडोपंत को काला पानी की सजा हुई, उसी तरह चपाती गूढ उपद्रव में परदेशी भटपांडे, कोंकोण के नाना, तात्या टोपे आदि अनेक देशस्थ भट शामिल रहे हैं।

जोतिबाः लेकिन, इस तरह शूद्र संस्थानि शिंधे, होलकर आदि का नाना के साथ नौकर-चाकर का संबंध होता था, उन्होंने उपद्रव की तिल मात्र भी परवाह न करते हुए संकट के समय हमारी अंग्रेज सरकार की कितनी एक मदद की थी इसको ही देखो? और ऊपर से भटों द्वारा खड़े किये गये उपद्रव को दबाने के लिए हमारी सरकार ने कर्ज लिया लेकिन उस कर्ज को उतारने के लिए मंदिरों आदि का धन जब्त न करते हुए हमारी सरकार ने नए-नए टैक्स लगा दिए। अपराधी देखा न निर्दोष सारी जनता पर एक समान कर लगा दिए। इतना ही नहीं, शूद्रों पर टैक्स निर्धारित करने का काम भी ज्यादा ही समझदार सरकार ने किस को सोंपा? भट शूद्र लोग शूद्र संस्थानिकों को जी भर कर कोसते हैं क्योंकि उपद्रव में इन्होंने उनकी जाति के नाना की उचित समय पर मदद नहीं की और वह हार गया था, अब अंग्रेजों ने उन कुलकर्णी भटों को टैक्स वसूल करने का काम सौंप दिया है, जो शूद्रों से मिलते ही तीन बार तो स्नान करते हैं, गाली गलौज करते हैं। जब

से इन कर्मनष्ट ग्रामराक्षसों यानी ब्रह्मरक्षसों को सरकारी दफ्तरों का काम सोंपा गया है तब से वह शूद्रों के पीछे पड़े हुए हैं। एक बार जैसे मुसलमान राजाओं ने पूरे गांव के पशु-पक्षिओं के छुरी से गले हलाल करने का काम अपनी जाति के मुल्लाओं को सौंपा था उसी तरह भटों को कलम के जरिए शूद्रों के गले काटने का काम सौंपा गया है। इसलिए सरकार की कोई परवाह न करते हुए इन ग्रामराक्षसों को गांव वालों ने सही नाम दिया है "कलम-कसाई"। ऊपर से हमारी ज्यादा ही समझदार सरकार जो सारे कर्मचारियों की बदली कर सकती है लेकिन इनको ज्यों का त्यों रखा अज्ञानी लोगों पर टैक्स निर्धारित करने के लिए नोटिश भी इन से पूछ कर तैयार होते हैं, इन्हीं कुलकर्णियों को लोगों के घर-घर नोटिश बांटे जाते हैं। जैसे ही लोग नोटिशों को स्वीकार करते हैं कितने ही अज्ञानी लोगों पर सरकार टैक्स लगा देती है। बस इस बारें में और क्या-क्या कहें?

धोंडीराव: ऐसा करने से कुलकर्णियों को भी कुछ फायदा होता है क्या?

जोतिबा: ऐसा करने से कुलकर्णियों को कोई फायदा होता है या नहीं इस बारे उनका मन जाने, लेकिन उन उदंडों को कोई फायदा नहीं होता, लेकिन वे ऐसा नोटिस देते हैं जिसका निदान चार-आठ दिनों बाद होता हो और तब तक वह हाथ पर हाथ धरे बैठ कर अपना काम दूसरों से करवाते रहते हैं। एक बार सारे अनपढ़ बच्चे-बूढ़ों ने शंकराचार्य की तरह लक्ष्मी की प्रार्थना की और कहा कि "हे हमारी सरकारी सरस्वती माता, आप अपने कानूनों के मुताबिक रिश्वतखोरों और मजबूरी में रिश्वत देने वालों को सजा देती हो, आप धन्य हैं" इससे प्रसन्न होकर कितने ही कुलकर्णियों को घरों में रात को रुपयों की वर्षा हुई, कुछ लोगों ने इसके खिलाफ शोर भी मचाया। अगर ऐसा है तो इसकी पूरी जांच होनी चाहिए और हमारी सरकार को चाहिए कि वह ऐसे पुण्यप्रतापि कुलकर्णियों को किसी गधे पर बैठाकर पूरे गांव में घुमाए।

धोंडीराव: वाह, भंटों द्वारा किए गई इस दिल्लगी को पहचान कर कुछ बुद्धिमान लोगों द्वारा उनको पकड़ कर बलिराजा के सेनापति को सोंप दिया, लेकिन वह इसको नजरंदाज करते हुए इन्हीं कलम कसाइयों से खुश है। यानी अब तक शूद्रों पर लगाए गये टैक्स, कर के कारण कितने ही भट विद्वान बन गये हैं लेकिन उनको शूद्रों को कोई परवाह नहीं हैं। वह दो दिनों के बाद खूब मौज मनाते हैं, और अपने ध्यान-स्नान पवित्रता का रोब जमाते हुए यह भी सिद्ध कर रहे हैं कि उनके वेदमंत्र, जादु-तंत्र पूरी तरह सत्य हैं। इस तरह वह तमाम अज्ञानी शूद्रों के मनों में यह बैठा दिया कि उनके द्वारा शादावल और लिंगपिंड के पास बैठ कर गिए गये जप-तप, अनुष्ठान की वजह से ही बरीश हुई है, महामारी में कमी आई है। वह आखिरी दिन भात का बळी बनाते हैं, तमाम अज्ञानी लोगों को भरमाते हैं, लंबी चौड़ी यात्रा निकालते हैं और उसमें सबसे पहले अपने जाति के भटों को यथासंभव भोजन करवाकर उस में से बच्चे बाकि अन्न को तमाम अज्ञानी शूद्रों में बांटते हैं, वह लाइन लगा कर बैठ जाते हैं जिसमें किसी को मुठीभर भात मिली, किसी को दाल का पानी और किसी को बासी रोटियां मिली। सभी को संतुष्ट करने के बाद भटों ने अज्ञानी लोगों को अपने वेदमंत्रों के बारे में उपदेश शुरू किये, लेकिन ऐसे आयोजनों में वह अंग्रेज लोगों को प्रसाद लेने के लिए पता नहीं क्यों नहीं बुलाते?

जोतिबा: अरे, इस तरह चावल के चार दाने फेंक कर और थू-थू कर जमा हुए भटों के भों-भों रूद्र

रूप में, क्या उनकी हिम्मत होगी वह अंग्रेज बहादुरों को प्रसाद के लिए बुलाएं?

धोंडीरावः बस-बस, "समझदार को इशारा ही काफी है", इस बारे में ज्यादा बताने की जरूरत नहीं है, एक बार "दुध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है"।

जोतिबाः चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन अब सुधरे हुए भट अपनी जादू-मंत्र विद्या और उससे संबंधित जप-तप अनुष्ठानों की कितनी भी बड़ाई करें, कितना ही गली-कूचे में भागते फिरे लेकिन इससे अब कुछ नहीं होने वाला। लेकिन अपने कुल को सातारा के किले में कैद रखने वाले नमक हराम बाजी छक्के भट राजा ने दिन रात खेती करने वाले अज्ञानी शूद्रों के श्रम से पैसा कमाकर मुंह दिखाई की तरह जवांमर्द भट सरदारों को सणंदें देकर उनका मालिक बनाया, सणंदों के कारणों को देखकर फर्स्ट सॉर्ट टरकंड साहेब जैसे पवित्र कमिश्नर भी एकाएक देखकर आनंद दंग रह जाएंगे, बाकी लोगों का तो कहना ही क्या? उन्होंने पर्वती जैसी अनेक संस्थाएं बाई है जहां पर तमाम जातियों के अंधे, पागल, विधवा, बूढ़े आदि रहते हैं लेकिन उनकी कोई परवाह नहीं करता, बस अपनी जाति के हष्ट-पुष्ट आलसी भटों को हर रोज नए-नए मिष्ठान भोजन देने की परंपरा चला रखी है। इसी प्रकार अपने स्वार्थी ग्रंथों का अध्ययन करने वाले भटों को भी हर साल यथासंभव दान देने की परंपरा बना रखी है। इन सभी झूठी परंपराओं को हमारी सरकार ने ज्यों का त्यों कायम रखा है। यह कहने में हमें कोई हरज नहीं है कि इससे सरकार ने अपने बुद्धीजीविपन और अपनी राजनीति को ही बट्टा लगाया है। भटों पर की जा रही इस फिजूलखर्ची से अन्य जातियों को रत्ती मात्र भी फायदा नहीं होता। ये मुफ्तखोर बन कर मजे ले रहे हैं और कृतघ्न सांड हैं, उलटा वह अज्ञानी शूद्रों पर अपने धर्म की दुहाई देकर अपने पांव धुलवाते हैं, इतना ही नहीं उस पानी को पीने के लिए भी कहते हैं। अरे, इन कर्मठोक भटों के पुरखों ने अपने धर्म ग्रंथों और मनुसंहिता के कितने ही वाक्यों पर रोक लगाकर ऐसे नीच कर्म कैसे किये हैं? और अपनी शुद्धि के लिए ये अपनी भोली सरकार के पास क्यों नहीं सुनाते, पार्वती जैसी संस्थाओं में शूद्रों द्वारा बनाई गई रोटियां क्यों नहीं खाते। एक बड़ी सार्वजनिक भट सफा स्थापित कर इस का बंदोबस्त करने की बजाये वह अपने ग्रंथों में कहीं न कहीं पुनर्विवाह उत्तेजक मंडळी पर रोक क्यों नहीं लगाते, लेकिन वह ऐसी बड़ी-बड़ी सभाएं गठित कर अपनी आंखों की डीढ निकालने की बजाए सरकार की आंखों की डीढ निकालने की कोशिश कर रही हैं, यानी उल्टा चोर कोतवाल को डांटे या नहीं? इसलिए हमें अपनी गुलामी से छुटकारा पाने के लिए अमेरिकी, स्काच और अंग्रेज भाइयों के साथ मेलमिलाप करना होगा, इसमें कोई अड़चन नहीं आनी चाहिए। अब बहुत हो गया उनकी गुलामी, अब हम उनकी गुलामी को धिक्कारते हैं।

अध्याय 12

[पटवारी भट कुलकर्णी, यूरोपीय लोगों के उपनिवेशों की जरूरतें, शिक्षा विभाग के मुंह पर काला दाग, यूरोपीय कर्मचारियों की अकल गूंगी क्यों होते हैं, आदि के बारे में...।]

धोंडीरावः जैसे आपने पहले बताया है कि, सारे के सारे विभागों में चाहे वह सरकारी हो या प्राइवेट, सब में भट भरे पड़े हैं, लेकिन उन सबमें मुख्य भट कौन है?

जोतिबाः जागीरदार भट कुलकर्णी। इनके छल कपट के बारे में बहुत सारे दयालु यूरोपीय कलेक्टरों को पता चल गया है। इसलिए अज्ञानी शूद्रों पर दया दिखाते हुए उन्होंने सरकार की तरफ से रिपोर्ट पर रिपोर्ट मांगे और कुलकर्णियों को कानून के बंधन में बांधा जा रहा है, इसलिए उन पर तरह-तरह के उपाय कर के उनके मुंह में लगाम डाली जा रही है। तभी तो ये शैतान अपने धर्म की आड़ में कचहरी लगाकर बळी के धर्म की निंदा करते हैं और शूद्रों के मनों को भ्रष्ट करने की कोशिश नहीं कर रहे? और इन कलमकसाई के स्वार्थी धर्म का अज्ञानी शूद्रों पर बहुत प्रभाव भी तो है। अगर ऐसा नहीं है तो फिर क्यों शूद्रों के बच्चे कैसे उनके मत का विरोध करने लग गये और क्यों करने लग गए, क्योंकि उनको तो पढ़ना लिखना नहीं आता? तुझे इसका कोई और कारण नजर आता है तो बता। इतना ही नहीं, मौका देखकर चौपाल में बैठकर वह सरकारी कानूनों के बारे में एकाध कलम लगाकर तरह-तरह के कुतर्क देकर क्या वह चोरी-चोरी सरकार से नफरत करने का पाठ नहीं पढ़ाते होंगे? और इस बात को शूद्र सरकार को बताने के लिए क्या नहीं। [chapter iv, the Sepoy Revolt by Henry Mead.] क्योंकि सरकार के सारे विभागों में तो भट जात वाले भरे पड़े हैं। इसलिए अब तो खुद अपनी सरकार को ही मामला हल करना चाहिए, सबसे पहले तो हरेक गांव में एकाध अंग्रेज या स्कॉच परिवार को, उसकी जीविका के लिए खेत आदि देकर, उसको उपदेशक का काम सौंप देना चाहिए। उसको हर साल गांव की सारी जानकारी रिपोर्ट के माध्यम से सरकार को भेजनी चाहिए। अगर कानूनी रूप से ऐसा बंदोबस्त कर दिया जाए तो फिर कभी किसी नाना जैसे भट द्वारा विद्रोह खड़ा किया जाएगा, या किसी पीर या शिवलिंग की पूजा पाठ कर वहां सभी को सहभोज के बदले कोई गुप्त योजना बनाई, या एक ही बार तमाम गांवों में एक साथ प्रसाद पहुंचकर शूद्रों को अपनी सरकार के खिलाफ इस्तेमाल करने की सोची, तो तब इन जागीरदार कुलकर्णियों की एकता कोई काम की नहीं रहेगी। और यह किये बिना तमाम अज्ञानी शूद्रों के पांव नहीं टिक पाएंगे। इतना ही नहीं, अगर यूरोपीय उपदशकों द्वारा दिए ज्ञान से एक बार तमाम शूद्रों के आंखे खुल जाती हैं तो वह इन ग्राम राक्षसों के पास तक खड़े नहीं होंगे। इसके अलावा सरकार को चाहिए कि वह पाटील सहित कुलकर्णी कार्य के काम की परीक्षा ले, और इस काम को किसी एक जाति को नहीं सौंपना चाहिए, यानी अगर सेना की तरह इस काम का बंदोबस्त किया जाएगा तो सभी लोगों को स्वभाविक रूप से शिक्षा देने की

जरूरत पड़ेगी। इसलिए हमारी दयालू सरकार को चाहिए कि वह शिक्षा विभाग का मोटा खर्च एकदम बंद कर दे और वह सारा कलेक्टर विभाग के पास जमा करवा दे। जॉरविस साहेब जैसे यूरोपीयन कलेक्टर पक्षपात नहीं करते, तमाम जाति के होशियार बच्चों को चुन कर, उनके लिए रुखी-सुखी अन्न-वस्त्र की व्यवस्था कर, कलेक्टर के बंगले के पास की स्कूल खोला जाए। फिर उनमें से पाटिल, कुलकर्णी और पंतों जी जैसे काम के लिए परीक्षा लेकर उनको ऐसा काम सौंपना चाहिए। इससे यह होगा कुलकर्णियों की एकता बदमाश नाना जैसे भटों के काम नहीं आएगी, और अज्ञानी शूद्रों तो तरह-तरह से फंसा कर उनके खेतों को हड़पने और लोगों में तरह-तरह के झगड़े खड़े करने के लिए उनको मौका नहीं मिलेगा। आज तक शिक्षा विभाग द्वारा लाखों रुपये खर्च किए जा चुके हैं, लेकिन फिर भी अब तक कोई महार, मांग या चांभारों में से कोई एक भी शिक्षित कर्मचारी नहीं बन पाया है। और एमए, बीए या डाक्टर की तो बात ही छोड़ दो। अरेरे! अपनी सरकार के इस शिक्षा विभाग के गौरे मुखड़े पर इन काले मुंह वाले भट पंतोजी ने कैसा मोटा काला दाग लगाया है? अरे इन 'कड़वे करेलों' को हमारी सरकार ने कितनी शक्कर की चासनी में घोल कर तला लेकिन इन्होंने अपने जाति स्वभाव को छोड़ा नहीं, और कड़वे करेले आखिर कड़वे ही रहे।

धोंडीरावः ठीक है, लेकिन ये कुलकर्णी आखिर अज्ञानी शूद्रों की जमीनों को कैसे हड़पते होंगे?

जोतिबाः जैसे तुम को पता ही है, शूद्रों बिल्कुल भी पढ़ना-लिखना नहीं जानते, इस तरह कितने ही कुलकर्णी हैं जो अपने आप को साहुकार दिखाकर, जब गहने रखी जमीन के कागज-पत्र बनाते हैं तो उसमें अपने जाति के लेखकों से मिलकर उसमें एक तरह की शर्त लिखवा देते हैं और अज्ञानी शूद्र के आगे उनके भला की बाते पढ़ कर सुना देते हैं, वह उस पर अंगूठा लगा देते हैं, और कुछ दिनों के बाद छल-कपट से लिखी गई शर्तों के कारण वह जमीन हड़प ही जाते होंगे?

धोंडीरावः ओ हो, ये जातिय कलमकसाई, अज्ञानी शूद्रों में और क्या-क्या झगड़े फसाद करवाते हैं?

जोतिबाः खेती-बाड़ी, जमीन-जायदाद, बार-त्यौहार, होली-दिवाली पर होने वाले तमाम झगड़े जो इन अज्ञानी शूद्रों में होते हैं, उनमें से कोई एक भी ऐसा है जिसमें इन भट कुलकर्णियों का हाथ न हो, क्या तुम कोई ऐसा झगड़ा दिखा सकते हो?

धोंडीरावः चलो ये भी ठीक है, लेकिन ऐसे झगड़े फसाद करवा कर इन कसाइयों को क्या फायदा होता होगा?

जोतिबाः अरे जब कितने ही अज्ञानी घरबार वाले शूद्र इनके द्वारा लगाई आग से आपस में लड़ मरते हैं तो क्या इस आग से इन कलम कसाइयों सहित अन्य भट कर्मचारियों के घरों तक आंच नहीं जाती होगी? अरे, इन कसाइयों की नारदशाही के कारण मुलकी फौजदारी और दीवानी विभाग को खर्च बढ़ता जा रहा है, और वहां के सारे मामलेदारों सहित अन्य कर्मचारी अपने असल मूल मंत्र "तत्सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात" को छोड़ कर यवनी मूल मंत्र "चिरी मिरी देव, चिरी मिरी देव" जपने लगे हैं। भटों से मिलने वाली वकीलों की दलाली बहुत बढ़ती जा रही है या नहीं? इसलिए वह कचहरियों में बैठ कर हंस गुल्ले उड़ा रहे हैं या नहीं? इसके कारण मनुसफ नवाबों

के सरंजाम कितने बढ़ गए हैं? इसका जवाब दो। इतना बंदोबस्त होने के बाद भी गरीब लोगों को सस्ता और समय पर न्याय मिलता है या नहीं? इसके कारण ही तो गांव-गांव में यह बात फेल चुकी है कि हर जगह ब्राह्मण कर्मचारी भरे पड़े हैं, जब तक उनके हाथ में कुछ न कुछ दो तो हम गरीबों का काम को कोई हाथ नहीं लगाता। "अगर उनकी मुठी में देने के लिए कुछ है तो तभी घर से बाहर निकलो।"

धोंडीरावः अगर ऐसा होता है तो गांव के शूद्र लोग यूरोपीय कलेक्टरों को एकांत में बैठ कर अपने ग्रह दोष क्यों नहीं बताते?

अरे, जिस को ये नहीं पता किस तरफ मुंह कर बैठना है, वह भोले भगत इतने बड़े नौकरशाहों के सामने कैसे खड़े हो सकते हैं और कैसे किसी की शिकायत कर सकते हैं? फिर भी अगर किसी लंगोट बहादुर ने किसी कलेक्टर के रसोइये से मदद लेकर एकांत में बैठ कर उसने कह दिया कि "हमारी सुनवाई नहीं होती"। ये चार शब्द अगर बोलते हुए किसी कलमकसाई ने सुन लिए या उस तक पहुंच गाए तो उसके तो उस शूद्र के तो समझो कर्म फूट गए। क्योंकि कलेक्टर की कचेहरी से लेकर राजस्व, न्याय सब जगह भट जाति के कर्मचारी हैं जो अपने यवनी गायत्री मंत्र की वर्दी में घूम रहे हैं, इस तरह कलमकसाई तरह-तरह के दस्तावेज लेकर आधे गवाह और आधे उसके खिलाफ खड़े हो जाते हैं, ऐसे-ऐसे दस्तावेज त्यार करते हैं, प्रतिवाद करते हैं, गवाही देते हैं और झगड़े को इतना उलझा देते हैं कि उनमें से सच क्या और झूठ क्या, यह तय करने में यूरोप के बड़े-बड़े विद्वान कलेक्टरों और जजों को अपनी सारी अकल खर्च करनी पड़ जाती है, और हाथ फिर भी कुछ नहीं लगता। आखिर में उनको शिकायत कर्ता को हो यह कहने में कोई शर्म नहीं आती होगी कि - सारे तेरा ही किया धरा है। उसके हाथ में खाली नारियल की टोकरी देतकर उसको घर भेज देते हैं या नहीं? इस तरह भट कर्मचारियों के इस कसाई पाने के कारण कितने हो किसानों को लगा होगा कि सरकार में उनकी कोई सुनवाई नहीं होती, और कितनों ने ही अपनी जान ले ली होगी? कितने ही अपने मन में यह संताप लेकर पागल हो गये होंगे? और कितने ही अपने बाल-दाढ़ी बढ़ाकर आधे पागलों की तरह रास्तों पर मारे-मारे फिरते होंगे और अपनी शिकायतें सुनाते होंगे?

अध्याय 13

[तहसीलदार, कलेक्टर, राजस्व, न्याय और इंजीनियरिंग विभाग के भट कर्मचारी आदि के बारे में।]

धोंडीरावः इसका मतलब यह हुआ कि भट तहसीलदार होने के कारण अज्ञानी शूद्रों को नुकसान पहुंचाते हैं?

धोंडीरावः भट तहसीलदार होने की वजह से अज्ञानी शूद्रों का क्या-क्या नुकसान होता हैं?

जोतिबाः आज तक जितने भट तहसीलदार हुए हैं उनमें से कितने ही लोगों को भ्रष्ट व्यवहार के कारण सरकार ने सजा भी दी है। वे अपने काम में इतने दुष्ट हैं, गरीब लोगों पर इतने जुल्म करते हैं कि इस पर अलग से एक किताब लिखी जा सकती है। अरे यहां पुने जैसे शहर में तो भट तहसीलदार बिना कुलकर्णियों की रसीद के तो बड़े-बड़े साहुकारों की कोई जमानत नहीं लेता तो इन गरीब-गुरबों को तो पूछने वाला ही कौन होगा! और ये कुलकर्णी जब एनओसी देते हैं तो कितनी ही बार अपने घर के चक्कर लगवाते हैं? इसी तरह यहां शहरों की म्युनिसिपलिटी का हाल है, जब तक उस नगर का कुलकर्णी इस बात की जांच न कर ले की ये नया घर क्यों बनावा रहा है तब तक तहसीलदार किसी को अनुमति नहीं देता। उसी कुलकर्णी के पास सारे नगर का नक्शा होता है, जिसमें वह तमाम नए जमीन खरीददारों के नाम दर्ज करता है, लेकिन हर साल उस नक्शें में नये नाम शामिल कर उसको तहसीलदार के दफ्तर में जमा करवाने का कोई प्रावधान नहीं है, न ही कोई कारण भी। फिर यह कैसे मान लिया जाए कि उस जगह के बारे में कुलकर्णी की जांच जरूरी है। इन तमाम कारणों के चलते शक पैदा होता है कि भट तहसीलदार अपने इन कलम-कसाइयों को जिंदा रखने के लिए इस तरह की व्यवस्था बनाते होंगो। खुद ही सोच कर देख सकते हो कि कैसे पूना जैसे शहर में यूरोपियन लोगों की नाक के नीचे अगर भट तहसीलदार इतने भाई-भतिजावाद से काम लेते हैं तो कलम-कसाई अपनी जीविका के लिए क्या न करते होंगे। और गांव-देहात में तो कितना जुलमो जब्र करते होंगे। क्या हमें यह नहीं पता कि कितने ही अज्ञानी शूद्रों के झूंड के झूंड बगल में पोटली दबाए भट कर्मचारियों के आगे-पीछे नहीं घूमते, क्या यह सब कुछ गलत नहीं है? इनमें से कई बताते हैं कि भट कुलकर्णी की गड़बड़ के कारण भट तहसीलदार ने मेरी दरखास समय पर नहीं सुनी, इस कारण प्रतिवादी ने मेरे गवाहों को तोड़ कर उलटा मेरी ही जमीन को हड़प लिया। कोई कहता है कि भट तहसीलदार ने मेरी अर्जी लेकर उसे फाईलों में दबा दिया और अगले दिन मेरे विरोधी की अर्जी लेकर मेरा बनते काम में अड़ंगा डाल मुझे भिखारी बनने की तरफ धकेल दिया। कोई कहता है कि भट तहसीलदार ने वह नहीं लिखा जो मैंने बोला था और अपने अनुसार लिख कर मुझे ऐसे झमेले में फंसाया कि मैं पागल हो जाऊंगा। किसी ने बताया कि मेरे विरोधी ने भट तहसीलदार अपने पक्ष में कर मेरे चलते हुए काम को ठोकर मार कर रोक दिया

मुझे अपे ही खेत से बेदखल कर दिया, मैं भट तहसीलदार के पास गया, बहुत विनम्रता के साथ जमीन पर हाथ रख कर मैंने प्रार्थना की, उसने एक भी शब्द नहीं बोला और बस मेरे हाथ से मेरी अर्जी ले ली, मैं चार-पांच कदम पीछे हटा हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया, मेरी कंपकंपी छूट गयी। वह तुरंत मेरी तरफ घूर कर देखने लगा और अर्जी को मेरे मुंह पर दे मारा और कहा कि तुने कोर्ट की बेअदबी की है। ऐसा कहकर उसने उलटा मुझ पर ही जुर्माना जड़ दिया। मैं जुर्माना भरने की स्थिति में नहीं था इसलिए मुझे कई दिनों तक जेल में रहना पड़ा। इतने में मेरे विरोधी ने मेरी जोतने के लिए तैयार पड़ी जमीन पर हल चला दिया और मेरे खेत पर अपना कब्जा जमा लिया। मैंने इसके खिलाफ क्लेक्टर साहेब को दो-तीन बार दरखास दी लेकिन वह सब भट क्लर्कों ने कहां गोल-मोल की इसका कोई अता पता नहीं है। अब बताओ क्या किया जा सकता है। कोई कहता है कि भट क्लर्कों ने जब मेरी अर्जी को कलेक्टर के सामने पेश करते हुए सुनाया तो मेरी बातों को उसमें से काट कर भट तहसीलदार द्वारा लिखी गई बातों को सुना दिया। एक ने सुनाया कि कलेक्टर ने अपनी जबान से भट क्लर्क को मेरी प्रार्थना पर आदेश लिखवाया था। जब कलेक्टर आदेश लिखवा रहे थे तो उसने मेरे खिलाफ लिखा और जब कलेक्टर को पढ़ कर सुनाया तो कलेक्टर ने जैसे बोला वैसे लिखा। जब मैंने घर जाकर उसको पढ़वाया तो मेरे पास अपना माथा पिटने के अलावा कुछ नहीं बचा था। मैंने मन ही मन कहा है ब्राह्मण देवता तुमको अपने हितों के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता। कोई कहता है कि जब कलेक्टर के पास मेरी सुनाई नहीं हुई तो मैंने रेवन्यू साहेब के पास दो-तीन अर्जियां भेजीं। लेकिन वहां भी भट कर्मचारियों द्वारा गड़बड़ की गई और पुनः उनको कलेक्टर के पास भेज दिया। भट कर्मचारियों ने वह सारे कागज कलेक्टर साहेब को उलटा-पलटा कर के सुनाए और रेवन्यू साहेब को लिख भेज दिया कि यह फालतू का झगड़ालू आदमी है। अब आप ही बताओ ऐसे लोगों के साथ क्या करना चाहिए? मेरा केस शुरू हुआ, शुरूआत में ही वकील द्वारा कुछ बोलने पर कहा गया कि तुम चुप रहो, बीच में मत बोलो। फिर उसने मेरे सारे कागज खुद ही पढ़ लिये। अब उन कागजों में क्या लिखा था। वह सब तो पहले ही कलेक्टर के दफ्तर में भट कर्मचारियों द्वारा, भट कुलकर्णी की दी गई सुचना के आधार पर सब मेरे खिलाफ ही बना दिये गये थे। कोई कहता है कि सारे भट कर्मचारियों के घरों में बनाए गये मंदिर उनके मंत्रोच्चारण से लगातार भरते जा रहे हैं और हमारे घर लगातार खाली हो ते जा रहे हैं, खेत-खलिहान, अनाज की बोरियां सब कुछ उनके घर भरती जा रही है। सारे का सारा उनके घर चला गया। घर वाली के कान सोने की टूटी बाली भी नहीं बची। हम सब भुखे मरने के लिए मजबूर हो गये। तब जाकर हमने कोई कामकाज ढूंडा। मिट्टी-सड़क बाने का काम मिला। वहां दिन भर सड़क काम में मिट्टी की टोकरियां ढोते रहे। वहां पर भट कर्मचारी आते और तिनका तक अपने हाथ से नहीं उठाते। बस रोज सुबह-शाम अपनी हाजिरी भरते रहते। या फिर कोई एकाध मराठी अखबार ले आते, उसमें अंग्रेजी सरकार और अंग्रेजी धर्म की निंदा में लिखा हुआ पढ़ कर हमे सुनाते रहते। लेकिन सरकार ऐसे कर्मचारियों को दिन भर काम करने वाले मजदूरों से डबल तनख्हा देती है जबकि वह एक का दो नहीं करते। दूसरे दिन जब मजदूरों को मजदूरी मिल जाती है तो

इन साहेब लोगों के हाथ गर्म करने पड़ते हैं, अगर किसी मजदूर ने उनको कुछ पैसे नहीं दिये तो उसकी समझो खैर नहीं। अगले दिन उस मजदूर के बारे में बड़े साहेब को गलत-मलत जानकारी देकर उसको दंड दिया जाता है। इतना नहीं कोई, कोई भट उसको कहता है कि सरकारी काम के बाद मेरे घर पर शाम को जाते हुए कुछ पान पत्ते या टहनियां छोड़ कर जाना। कोई कहता है कि आम के पत्ते तोड़ कर लाना और मेरे घर पहुंचा देना। कोई कहता है कि मेरे घास डाल कर जाना। कोई भट कहता है कि आज में रात को विधवा के घर जाऊंगा, इसलिए रात को हमारे घर पर मेरी घरवाली और बच्चों का पहरा देने के लिये आना। और अगले दिन काम पर आना भी मत भूलना। क्योंकि अगले दिन इंजिनियर साहेब खुद काम देखने के लिए आने वाले हैं, राव साहेब ने इसके बारे में खुद चिट्ठी लिख कर भेजी है। भटों द्वारा किस-किस तरह से सताया जाता है, क्या क्या दुख दिये जाते हैं इस बारे में मेरे भाई-बंधु मुझे घर पर आकर सुनाते हैं। उनकी आंखों से आंसू झरते रहते हैं।

हे बड़े भाई हम क्या करें। उनके धर्म ग्रंथ कहते हैं कि वह अठारह वर्षों के गुरु हैं। वह किसी भी तरह का बर्ताव कर सकते हैं लेकिन शूद्रों अपने मुंह से उनको कुछ भी नहीं कहना चाहिए। हमें कोई उपाय नहीं सूझता। अगर हम अंग्रेजी सीख गये होते तो इन तमाम ब्राह्मणों की ठगी बाजी साहेब लोगों को बता सकता था और वह खुद इसका इलाज कर देते। इसके अलावा इंजीनियरिंग विभाग के भट कर्मचारियों की लुच्चेगिरी के बारे में ठेकेदार इतना कुछ बताते हैं कि इस पर अलग से एक किताब बन जाएगी। इसलिए इसको यहीं पर रोक लेते हैं। सारांश यह है कि ऊपर जो लिखा गया है इस पर गंभीरता के साथ शोध करना चाहिए और इसका कोई बंदोबस्त करना चाहिए, यह हमारी सरकार का धर्म है। [इस बारे में इंजीनियरिंग विभाग पर अलग से पवाड़ा लिखा गया है। उसको पढ़िए।]

अध्याय 14

[युरोपीय कर्मचारियों की निष्क्रियता, ब्राह्मण जमींदारों (खोत व्यवस्था) का वर्चस्व, पेंशन भोगी रिटायर्ड यूरोपीय कर्मचारियों द्वारा गांव की हकिकत जमा कर सरकार को बताने की जरूरत, धर्म और जाति घमंड आदि के विषय में।]

धोंडीरावः अगर सारे विभागों में भट कर्मचारियों द्वारा इतना अनर्थ किया जा रहा है तो फिर युरोपीय कलेक्टर क्या कर रहे हैं? वह ब्राह्मणों की लुच्चागिरी के बारे में सरकार को क्यों रिपोर्ट नहीं करते?

जोतिबाः अरे, कर्मचारी उनकी मेज पर कसाईयों की तरह इतना काम फेंक देते हैं कि उसमें से जरूरी काम भी नहीं हो पाते। केवल मराठी कागजातों पर दस्तखत करते-करते उनकी नाक में दम चढ़ जाता है। वह बेचारे इन सब अनर्थ कार्यों का गंभीर शोध कर उसके बारे में सरकार तक रिपोर्ट पहुंचाने का काम करें तो कैसे करें। मैंने तो यह भी सुना है कि कोंकण में बहुत सारे दयालू युरोपीय कलेक्टरों ने अज्ञानी शूद्रों पर भट-खोतों द्वारा किये जा रहे जुल्म के खिलाफ सरकार में केस डाल कर खुद प्रतिवादी बन गए हैं। लेकिन इस सब के खिलाफ सारे भट-खोते एक होकर अमेरिकी स्लेव होलडर्स की तरह अपने स्वार्थी धर्म की सहायता से अज्ञानी शूद्रों के अंदर सरकार के खिलाफ उपदेश करने शुरू कर दिये हैं। बहुत सारे अज्ञानी शूद्र युरोपीय कलेक्टरों के खिलाफ ही कमर बांध कर लड़ने के लिए तैयार हो गये हैं, उन्होंने सरकार से कहा है कि हमारे ऊपर भट गधों को जो अधिकार है उसके वैसा का वैसा रहने दिया जाए। देखो लो शैतान जैसे गधे भटों द्वारा किस तरह से शूद्रों को अपने हाथ की कठपुतली बना लिया है और परोपकारी यूरोपीय कलेक्टरों की कैसी प्यादों जैसी दुर्गति की है।

धोंडीरावः अरे ऐसे कैसे अज्ञानी शूद्र हैं, भटों के उपदेशों में फंस कर अपना चौतरफा नुकसान करवा रहे हैं। अगर वह आगे भी भटों के चक्कर में फंस कर सरकार के खिलाफ उठते हैं तो इससे बहुत बड़ा नुकसान होगा। क्योंकि भटों की गुलामी से आजाद होने का अवसर शूद्रों के पास फिर कभी आना बहुत मुश्किल है। शूद्रों के हाथों कोई अनर्थ न हो इस संबंध में आपको कोई उपाय सूझता है तो बताएं, क्योंकि अज्ञानी शूद्रों को बताने का तो कोई फायदा है नहीं लेकिन अपना दयालू सरकार को तो कुछ बताया ही जा सकता है। इसके बावजूद भी अगर शूद्र कमबख्त बने रहते हैं तो आप क्या कर सकते हो?

जोतिबाः इसका उपाय, सबसे पहले हमारी दयालू सरकार को चाहिए कि वह सारे विभागों में भट समाज की संख्या के हिसाब से नियुक्ति न करे, ऐसा मेरा मत नहीं है। लेकिन उसी तरह से बाकि सारी जातियों में से अगर कर्मचारियों नहीं मिलते हैं तो उनके स्थान पर केवल युरोपीय कर्मचारियों को नियुक्त किया जाए। इस कारण सारे भट कर्माचारी सरकार और शूद्रों का इतना बड़ा नुकसान नहीं कर पाएंगे। इसके अलावा सरकार को चाहिए कि जो-जो यूरोपीय कलेक्टर स्पष्ट रूप से महाराष्ट्र भाषा बोलना जानते हैं, उनको सही

पेंशन देकर गांव में बसने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि अज्ञानी बहुसंख्यक शूद्रों के साथ मिलजुल कर रह सकें, जिससे वहां पर भट कुलकर्णी आदि कर्मचारियों के कसाइपने पर बारीक नजर रख सकें। वहां से उनको पूरी तरह से सच्ची रिपोर्ट लिखकर मंगवानी चाहिए। इससे तमाम सरकारी स्कूलों में भटों द्वारा जो करतूतें की जा रही हैं वह भी उघड़ जाएंगी और कुछ ही दिन में तमाम स्कूलों में पसरी हुई अव्यवस्था भी ठीक हो जाएगी। इससे अज्ञान के अंधेरे में पड़े शूद्रों को ज्ञान मिलेगा और वह कुतर्की भटों के बंधनों को धिक्कारना शुरू कर देंगे। इससे वह कभी भी अपनी रानी की सरकार को बुरा-भला नहीं कहेंगे, ऐसी मेरी प्रतिज्ञा है। क्योंकि हम शूद्रों के गलों में बंधे गुलामी के पट्टों को जल्द ही कोई खोलने वाला नहीं है।

धोंडीराव: तो आप बचपन में किस लिए अखाड़े में दंड बैठक और निशाने पर गोली दागने का अभ्यास किया करते थे?

जोतिबा: अपनी दयालु अंग्रेज सरकार को वापस भगाने के लिए।

धोंडीराव: लेकिन आप को ऐसी दुष्ट सीख कहां से मिली?

जोतिबा: दो-चार सभ्य भट विद्वानों से। (अपने घर के चुल्हे के पास) वह यह बताते हैं कि हमारी बहुत सी जातियों के लोग अपने सनातन धर्म के बारे में भूल चुके हैं, हम सब लोगों के अंदर एकता नहीं रही है इसलिए हमारे बीच बहुत सारे जातिभेद पैदा हो गयी और ऐसी फूट का फायदा उठाकर हमारा राज अंग्रेजों के हाथों में चला गया है। हमारे बहुत सारे अज्ञानी धर्मभिरू लोगों के अंदर देशाभिमान नहीं रहा, और वह अपने अपने स्वार्थी धर्म के आधार पर सिद्ध करते हैं कि हम गुरुभाई हैं। इसलिए जब तक हम अपनी तमाम जातियों के लोगों को एक नहीं कर लेते तब तक हमारे अंदर अपने देश से अंग्रेजों को निकालने की ताकत नहीं आ सकती। अपने अनादिसिद्ध धर्म के अंदर थोड़ बहुत बदलाव किये बिना, अपने तमाम लोगों को अच्छी एकता किये बिना हम अमेरिकी, फ्रांसीसी और रूसी लोगों की बराबरी नहीं कर सकते। ये बाते उन्होंने मेरे सामने टॉम्स पेन जैसे लेखकों की किताबों से उदाहरण ले-लेकर सिद्ध की। इसकी वजह से मैं बचपन में बहुत दिनों तक यह पागलपन करता रहा। लेकिन जैसे ही मैंने गंभीरता के साथ उन किताबों को पढ़ने लगा तो मुझे सभ्य भटों की स्वार्थी सीख के सही अर्थ जान पाया। तब मुझे समझ में आया कि हम सब जब अंग्रेज लोगों के गुरु बंधु के समान बन जाएंगे तो एक तरह से उनके पूर्वजों द्वारा बनाए गये बनावटी ग्रंथों को धिक्कार करेंगे और तब उनके जातीय अभिमान के मुंह पर करारा तमाचा पड़ेगा। उनको हम शूद्रों की मेहनत के दम पर मिलने वाली रोटी नसीब नहीं होगी। और ब्रह्मा का बाप भी यह नहीं कह पाएगा कि शूद्रों की बजाए भट उच्च होते हैं। हमें इस पर आश्चार्य जताने की जरूरत नहीं है कि उन्होंने देशाभिमान का ऐसा अर्थ किया - अरे उनके मूल पुरखों को भी देशाभिमान शब्द का अर्थ नहीं मालूम था। अंग्रेजों ने बलिराजा आना से पहले देशाभिमान का पाठ ग्रीक लोगों के स्कूल से पढ़ा था, लेकिन जब वह बली के मतानुयायी बने तबसे तो उनके अंदर सदगुण इतने बढ़ गये कि स्वदेशाभिमान के मामले में उनकी बराबरी दूसरा कोई धर्म नहीं कर सकता। अगर देखना है तो असल में हमें अमेरिका में बली के मतानुयायी जार्ज वाशिंग्टन को देखना चाहिए। अगर उसके बराबर को कोई महापुरुष नहीं दिखाई

देता तो फ्रांस में बली के मतानुयायी लफेटे को देखना चाहिए। यानी इसमें कोई कुतर्की नहीं है। अरे सभ्य विद्वानों के पुरखे अगर इतने ही स्वदेशाभिमानी होते तो अपने ग्रंथों के अंदर वह अपने ही देशबंधु शूद्रों को पशुओं से भी नीच का दर्जा नहीं देते। अरे गंद खाने वाले पशु का मूत पीकर वह पवित्र और शूद्रों के हाथों से स्वच्छ जल पीकर वह अपने को अपवित्र मानते हैं। देखो इन सभ्य विद्वानों के पुरखे ब्रिशियन लोगों द्वारा पवित्र देशाभिमान के खिलाफ खड़ा किया गया अपवित्र देशाभिमान। अंग्रेज लोगों और उनके परोपकारी लोगों को, जो हमें भटों की गुलामी से मुक्त कवराने वाले लोग हैं, अपने देश से भगाने के लिए सीख देने वाले विद्वान कौन हैं? ऐसा कौन मूर्ख होगा जो अपनी उंगली से अपनी ही आंख फोड़ेगा। लेकिन मैं आप लोगों को बता देना चाहता हूं कि अंग्रेज लोग आज हैं, कल नहीं रहेंगे। ऐसी बात नहीं है कि वह जन्म-जन्म तक हमारे साथ रहेंगे। इसलिए जब तक इस देश में उन लोगों का राज है तब तक हम सब शूद्रों को जल्द से जल्दी भटों की गुलामी से मुक्त हो जाना चाहिए, इसी में बड़ी होशियारी है। देवता ने शूद्रों पर दया करते हुए अंग्रेज बहादुरों के हाथों भट नाना के विद्रोह को कुचल दिया है। नहीं तो अब तक शिवालय में लिंग के इर्द-गिर्द रौंद्र करने वाले सभ्य भटों ने कई महारों को ब्राह्मणी ढंग की धोती पहनकर कीर्तन में संस्कृत के श्लोक बोलने के जुर्म में कालेपानी की सजा सुना दी होती।

अध्याय 15

सरकारी स्कूल, म्युनिसिपलिटी, दक्षणा प्राईज कमेटी व भट, वर्तमान समाचार पत्रों वालों एकता, शूद्रों के बच्चों को विद्या ग्रहण करने जरूरत नहीं और भटों द्वारा रचे गये षड्यंत्रों के बारे में।

धोंडीरावः सरकारी शिक्षा विभाग के भट कर्मचारी कैसी-कैसी चिकनी-चुपड़ी बेईमानी करते हैं?

जोतिबाः हाल ही में जिस बली की पुस्तक के पढ़ने से सारे भट ग्रंथों की बेईमानी उघड़ने वाली थी और जिससे उनके पुरखों की फजीहत होने वाली थी उस पुस्तक को इन्होंने अपनी भोली-भाली सरकार से मिलकर या अखबारों में चिकने-चुपड़े सुझाव देकर सारे स्कूलों में प्रतिबंधित करवा दिया। अरे जिस तरह से आज प्रगतिशील काल में अपने दो-चार स्वार्थी सभ्य माने जाने वाले शिष्यों के चिकने-चुपड़े सुझावों को मान कर सारे सरकारी शिक्षा विभाग में उनके ग्रंथों को प्रतिबंधित करवा दिया इसी तरह पहले भी मूर्ख अधिकारियों ने दो-चार धर्म-भ्रष्ट ढोंगियों के आग्रह पर इन उपदेशों के मालिक (बली) को उन्होंने सूली पर टंगवा दिया था, तो आज हमें ज्यादा हैरान होने की जरूरत नहीं है।

धोंडीरावः लेकिन इसमें सरकार का क्या दोष है?

जोतिबाः अगर इसमें सरकार का दोष नहीं है तो सरकार ने कुछ प्रगतिशील भटों के सुझाव पर अपनी पवित्र पुस्तक को क्यों प्रतिबंधित कर दिया, और क्यों उस पुस्तक के विरोधियों द्वारा तैयार की गई पुस्तकों को सरकारी शिक्षा विभाग के स्कूल में लागू करवाकर उनको ही शूद्र स्कूलों में शिक्षक नियुक्त कर दिया? इस पर विचार करने से यह सिद्ध हो जाता है कि कल तक जिन पुस्तक विरोधियों ने शिक्षा विभाग में किताब प्रतिबंधित करवाई थी, उनके द्वारा तैयार पुस्तक को सरकार द्वारा प्रतिबंधित करने की बजाए उनको सरकारी शिक्षा विभाग की तरफ से अनुदान दिया जा रहा है, उनको तमाम सरकारी स्कूलों में शिक्षक नियुक्त किया जा रहा है, क्यों ऐसा कर उस पवित्र पुस्तक के विरुद्ध शूद्रों के मुंह से उपदेश दिलवाने की तैयारी की जा रही है? अगर हमारी भोली-भाली सरकार उस पवित्र पुस्तक की तरह, एक ही बार सरकारी शिक्षा विभाग के विरोधियों की पुस्तक को प्रतिबंधित नहीं कर सकती तो, सरकार से निवेदन है कि कम से कम सारे स्कूलों को एक ही बार बंद कर दे और घर बैठ जाए ताकि हम शूद्रों पर से करों का बोझ तो कम होगा। क्योंकि विद्या विभाग के एक मुख्य भट कर्मचारी को हर साल कम से कम सात हजार दो सौ रुपये (7200) तनख्वाह देनी पड़ती है। कहीं छप्पर फाड़ के तो इतनी रकम आती नहीं, बताओ कितने ही शूद्र परिवारों को साल भर रात-दिन खेती बाड़ी कर इतनी रकम जुटाते होंगे। कम से कम एक हजार परिवारों को तो लगना ही पड़ता होगा? अब बताओ इन बृहस्पतियों को दिए जाने वाले वेतन से शूद्रों को कोई फायदा होता है या नहीं? अरे शूद्र को तो हर रोज चार आने के बदले दिन भर सूरज की गरमी में मिट्टी की टोकरी ढोनी पड़ती है। उसको एक पल भी इधर-उधर जाने की

मोहलत नहीं दी जाती। लेकिन हर रोज बीस रुपये वेतन लेने वाला भट कर्मचारी स्कूल में खुली जगह पर कुर्सी डाल कर बैठा रहता है, वह म्युनिसिपलिटी का बराती बन बैठता है, हर रोज शाम को थोड़ी धूप ढलने के बाद, सज संवर कर तांगे पर बैठ शहर में घूमने निकल जाता है, लोगों के घरों में ताकझांक करते हैं। उनके वहां जाने का मतलब केवल अपने यार दोस्तों स मिलने जाना होता है, अरे उनको ऐसी फुरसत मिलती कैसे है। वह शहर में इधर-उधर घूमते हैं लेकिन विद्या के क्या फायदे हैं यह किसी अज्ञानी व्यक्ति को बताते हैं नहीं, इससे अच्छे तो वह मिशनरी उपदेशक अच्छे हैं जो हर महीने मात्र दस रुपये वेतन के बदले काम करते हैं और उनको सारा शहर जानता है। लेकिन ये नवाब जिस घर में रहते हैं उसके आस पास वाले भी नहीं जानते की यह आदमी आखिर करता क्या है। इनका तो हर रोज का बस यही काम है कि यूरोपीय कर्मचारियों के पास जाना और वहां इधर-उधर की दो चार बाते हांकना। स्कूल में थोड़ा-बहुत पढ़ाते हैं और साल में दो चार बार स्कूल की रिपोर्ट लिख कर भेज देना, बस हो गया काम। और इन लोगों को दो-चार पढ़े-लिखे बिकाऊ लोग देशभक्त समझते हैं। अरे इन बिकाऊ भट नौकरों ने आज तक स्कूली विभाग के लाखों रुपये चट कर लिये लेकिन इनके हाथ से आज तक कोई अति शूद्र शिक्षा हासिल कर म्युनिसिपलिटी का सदस्य नहीं बन सका। इस बारे में अब तुम ही सोच कर बताओ कि स्कूली विभाग के यह सारे बिकाऊ नौकर अपने देश के अज्ञानी अति शूद्रों से कितनी हमदर्दी रखते होंगे। इतना ही नहीं, पिछले साल जब अकाल पड़ा तो ये म्युनिसिपलिटी में मुख्य अधिकारी थे और इन्होंने सरकारी टैंक से अति शूद्रों को पानी दिलवाने में कोई मदद नहीं। इससे समझ में आता है कि क्यों इस कमेटी में अतिशूद्र सदस्यों की जरूरत है।

धोंडीरावः आपका कहना सही है। लेकिन मैंने सुना है कि कमेटी में अब तक शूद्रों में से कितने सदस्य इतने विद्वान हैं कि जो अपना मत देते समय नंदी बैल की तरह हां में हां नहीं मिलाते। वहां पहले से ही दस्तखत करने वालों की कितनी कमी है, और वहा पर बाकि पूजनीय लोग भी बैठे हैं तो ऐसे में शूद्र सदस्य कमेटी की कुर्सी पर बैठकर, गर्दन हिलाते हुए दस्तखत करने वाले अतिशूद्रों में कहां से मिलेंगे?

जोतिबाः शूद्र सभा सदस्यों की अपेक्षा हजार गुणा अच्छे से पढ़ने और लिखने वाले लोग अतिशूद्रों में से मिल जाएंगे। लेकिन भटों के स्वार्थी ब्रंथों के अनुसार तमाम अतिशूद्रों को छूना मना है। इसी कारण उन बेचारों को शूद्रों की तरह सदस्य बनकर बाकि लोगों की तरह श्रीमंत होने की सुविधा नहीं मिल पा रही है और गधों पर बोरिया-बिस्तर लाद कर अपना पेट भरने के लिए मजबूर हैं।

धोंडीरावः संख्या के हिसाब से कमेटी में किस जाति के सदस्यों की संख्या अधिक दिखाई देती है?

जोतिबाः भट जाति के लोगों की संख्या अधिक है।

धोंडीरावः समझ में आया, इसलिए ही कमेटी में बेगारी और भंगियों को छोड़कर ज्यादा संख्या भट कर्मचारियों की भरी हुई है। इसके अलवा नलजल विभाग में भी भट कामगार होने के चलते वह अपनी जाति के भटों की हौदों मनमाना पानी छोड़ते हैं जिससे उनके आप पास के सारे भट अपने कपड़े आदि खूब धोते, बाकी पानी व्यर्थ बहा देते हैं। लेकिन जिन

नगरों में गरीब शूद्रों की बस्ती है वहां पर उनके हौदों में दोपहर बाद तक तो पानी की बूंद तक नहीं मिलती। फिर नहाने-धोने की तो बात ही मत करो! ऊपर से भटों की बस्तियों में न जाने कितने ही नए हौद बनाए जा चुके हैं लेकिन जुनागंज आदि नई बस्तियों कई वर्षों से लोग हौद की मांग कमेटी के सामने कर रहे हैं। लेकिन भट सभा सदस्य होने के कारण उन गरीब लोगों की वर्षों से कोई नहीं सुन रहा है। आखिर में पिछले साल जब पानी का अकाल पड़ा तो मीठगंज के काले हौद को महार-मतांगों ने छू लिया, और पानी भरने लगे तब जाकर कमेटी द्वारा उनकी मांग पर ध्यान दिया गया। इस म्युनिसिपेलिटी ने इतना फिजूलखर्ची की है कि वह इसके मुख्य सभापति की होशियारी को शोभा नहीं देता। पर मराठी समाचार पत्रों द्वारा भी कमेटी द्वारा किए गये अंधाधुंध खर्च सरकार को आगाह क्यों नहीं किया गया?

जोतिबाः अरे इन तमाम मराठी समाचार पत्रों के कर्ताधर्ता तो सारे भट जाति के लोग ही हैं जिनके अपने जाति के लोगों के विरुद्ध लिखते हुए हाथ रुक जाते हैं। जब सभापति युरोपीय होता तो वह इन तमाम भटों की कुछ नहीं चलने देता था। तब ये सारे जमा होकर उस पर ऐसे आरोप लगाते थे कि वह सारी प्रजा का नुकसान कर रहा है, इस प्रकार तरह-तरह के कुतर्क घड़ कर उसको इतना परेशान कर देते थे कि वह अपने मुख्य सभापति के पद से ही इस्तीफा दे देता था और कभी ऐसी कमेटी का नाम तक नहीं लेता था। लेकिन अपनी दयालु सरकार भी तो इन तमाम स्वार्थी समाचार पत्रों को सही जानकर, उनके लिखे को ऐसा समझती थी कि इसमें तमाम शूद्रों और अतिशूद्रों के विचार भी हैं। ऐसा समझना हमारी भोली सरकार की बहुत बड़ी गलती है, उनको यह नहीं पता है कि ऐसे काम के लिए शूद्रों और भटों का जन्म-जन्म से भी कोई रिश्ता नहीं है। इसलिए बहुत सारे अति शूद्रों के लिए तो समाचार पत्र का मतलब है काला अखर भैंस बराबर। तो ऐसे अनदेखे अतिशूद्रों के विचार इन पवित्र अखबारों में कहां से और कैसे हो सकते हैं? ऐसे पत्र तो केवल पढ़े-लिखों द्वारा अपना पेट पालने की नई तरकीब है कि सरकार का मजाक उड़ाओ और अज्ञानी लोगों के प्रति झूठी हमदर्दी दिखा कर उनके मन को अपनी तरफ आकर्षित कर लो। क्या ऐसा नहीं है कि तमाम विभागों उनकी जाति के ही कर्मचारियों की अधिक भरती होने के चलते तमाम शूद्रों और अति शूद्रों का नुकसान हो रहा है, क्या इस विषय की जांच करने की फुर्सत उनको नहीं है, लेकिन लंदन शहर में रानी सरकार के मुख्य प्रधान को अपने सपने में हिंदुस्तान के बारे में क्या-क्या बड़बड़ाया है, इसको सविस्तार छापने की उनको पूरी फुरसत है? हालांकि एकाध मराठी ईसाई अखबार में कमेटी द्वारा गरीबों की सुनावई नहीं होती छपा हो तो इसको भी अंग्रेजी में अनुवाद कर सरकार को दिखाने की जिम्मेदारी भट सभा सदस्य को ही सौंपी गई है। कमेटी की ऐसी रिपोर्ट जो उसके साथ कंधे से कंधा मिलकर कुर्सी पर बैठने वाले अपने जाति भाईयों के खिलाफ है उसको सरकार को दिखाने की हिम्मत वह कैसे कर सकता है?

धोंडीरावः हर जगह भट सभा सदस्य होने के कारण अगर बाकी सारी जातियों का नुकसान हो रहा है तो आप इस बारे में एक छोटी सी किताब लिखकर दक्षणा-प्राईज कमेटी को सौंप दो, ताकि इससे सरकार की आंखें खुल जाएं।

जोतिबाः भट जोशी अपने स्वार्थी धर्म का डर दिखाकर कैसे अज्ञानी शूद्रों को फंसाते व खाते हैं, इसके विपरीत ईसाइ पादरी कैसे निषपक्ष धर्म के आधार पर अज्ञानी शूद्रों को सच्चा ज्ञान देकर उनको सही मार्ग पर लाते हैं, इस विषय पर मैंने एक छोटा सा नाटक लिखकर 1855 में उसको दक्षणा प्राईज कमेटी को भेजा था। लेकिन वहां पर भी भट सभा सदस्यों का ही बोलबाला था, उन्होंने वहां भी टांग आड़ाई और यूरोपीय सभा सदस्यों की एक न चली। वहां पर मेरी किताब को रद्द कर दिया गया। अरे ये दक्षा प्राईज कमेटी और म्युनिसिपलिटी चौर-चौर मौसेरे भाई ही हैं। चाहिए तो ये था कि शूद्रों को लिखने के लिए प्रेरित करते, लेकिन उन्होंने ऐसा काम किया हो, वह दिवा लेकर ढूंडने से भी नहीं मिलेगा। आखिर में मुझे खुद ही अपने पैसे पर दूसरी एक छोटी सी किताब ब्राह्मणों की चालाकी लिखकर छपवानी पड़ी। तब पुणे में मेरे एक मित्र के आग्रह पर इस किताब की प्रति हरेक सरकारी स्कूल के मुख्य अधिकारी को खरीदने के लिए अधिकारियों द्वारा नोटिस निकाला गया। लेकिन एक भी अधिकारी ने भटों के डर से इस किताब की एक भी प्रति नहीं खरीदी ताकि उनके नाम पर बट्टा न लगे।

धोंडीरावः आप को लोगों को अपने आगे-पीछे घुमाने की आदत नहीं है, इस कारण ही आपकी किताबें नहीं बिकती।

जोतिबाः अरे बाबा, अच्छे काम करने के लिए भ्रष्ट तरीका नहीं अपनाना चाहिए, नहीं तो उस अच्छे काम को ही बट्टा लग जाएगा। अगर मेरी एक किताब नहीं बिकी तो क्या देवता ने मुझे कोई कमी रहने दी? आगे से मैं ऐसे लोगों के पास किसी तरह की अर्जी नहीं दूंगा, इससे मुझे अपने पैदा करने वाले पिता पर निर्भर रहना सिखा है, मैं उसका बार-बार आभारी हूं।

धोंडीरावः देखिए जब आपने भट आदि जाति की बच्चियों के लिए पाठशाला कोली थी तो तब सरकार ने मेहरबान होकर आपका बड़ा सत्कार किया था और एक जोड़ी शाल की भेंट की थी। वहीं जब आपने अन्य अतिशूद्र जाति के बच्चों के लिए स्कूल खोला तो अनेक भट लोगों की मदद भी ली थी। लेकिन अचानक वहां पर शिक्षा काम बंद क्यों हो गया। बाद में आपने कई सालों के बाद सारे यूरोपीय अधिकारियों के घर आना-जाना भी बंद कर दिया। इसका कारण नहीं समझ आया?

जोतिबाः यह सच्च है कि जब मैंने भट आदि जातियों की बच्चियों के लिए स्कूल खोला तो इससे सरकार बहुत खुश हुई थी। जब मैंने अतिशूद्रों के बच्चों के लिए स्कूल खोलना पड़ा तो मुझे अनेक भट सभा सदस्यों की मदद लेनी पड़ी और स्कूल उनको सौंप दिया गया, उस समय सारे यूरोपीय अधिकारियों ने मुझे आर्थिक मदद की थी। उन उदार मददगारों में से एक थे राजस्व अधिकारी रीव्हज साहेब, उन्होंने मेरी जो मदद की उसको मैं कभी भुला नहीं सकता। उन उदार लोगों ने केवल आर्थिक मदद ही नहीं कि बल्कि वह अपने महत्वपूर्ण काम में लगे होने के बावजूद अतिशूद्रों के स्कूल आते थे और इस बात का बराबर ध्यान रखते थे कि इन बच्चों ने कितनी शिक्षा प्राप्त कर ली है, उनके अंदर बच्चों को शिक्षा देने की तीव्र इच्छा थी। उनका उपकार अतिशूद्र बच्चों की हड्डियों में रच-बस गया है। वह इस कर्ज को अपने शरीर की चमड़ी की जूती बनाकर उनको पहना दे तो भी नहीं चुका पाएंगे। इसी तरह अन्य कई यूरोपीय परिवारों ने मेरी मदद की है जिसको

मैं हमेशा याद रखुंगा। इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। उस समय मुझे कुछ भट सभा सदस्यों की मदद की जरूरत पड़ी थी, इसके पीछे के कारण मैं फिर कभी बताऊंगा। लेकिन जैसे ही मैंने स्कूलों में भटों के पूर्वजों के झूठे ग्रंथों की बेईमानी को नंगा करना शूरू कर दिया तब से मेरे और उनके बीच बोलचाल कम होती चली गई। क्योंकि उनका मानना था कि अतिशूद्रों के बच्चों को विद्या देने की जरूरत नहीं है। केवल उनको लिखना-पढ़ना सिखा दो बहुत है। मेरा मानना था कि अगर उनको अच्छी शिक्षा दे दी जाए तो उनके अंदर अपने अच्छे और बुरे को समझने की शक्ति पैदा हो जाएगी। इसलिए अतिशूद्रों के विद्या न देने का आखिर क्या मतलब हो सकता है - कि ये लोग अपने आप या सरकारी मदद से विद्वान हो जाएंगे तो सच्च और झूट में फर्क समझ जाएंगे, सरकार के परमनिष्ठ सेवक बनकर अपने पूर्वजों पर हुए जुल्मों को जानकर भट पुरखों को धिक्कारेंगे। जैसे-जैसे मेरे और उनके अंदर मतभेद बढ़ने लगे मैं दोनों विभागों से दूर हो गया। कई साल पहले जब भट पांडे द्वारा विद्रोह किया गया तो उस दौरान मेरे सारे यूरोपीय सभ्य परिवारों के बीच पहले की तरह मेलजोल नहीं रहा, ठीक से बात नहीं करते थे। इसलिए मैंने यूरोपीय लोगों के घरों में आना जाना भी बंद कर दिया।

धोंडीरावः भट पांडे द्वारा की गई धींगा मस्ती के कारण हम निर्दोष लोगों पर पहले की तरह ध्यान न देना उनकी बुद्धिमानी को शोभा नहीं देता। भट लोग अपनी विधवा महिलाओं के गर्भपात जैसे अघोरी कर्म न करें इसके लिए आपने गुप्त रूप से अपने घर में प्रसुति की सुविधा की। इसके लिए आप ने सरकार से भी कोई मदद नहीं मांगी, नामात्र के भट सदस्यों से भी आपको कुछ मदद न लेकर अपने खर्चे पर ही सब कुछ चलाया है।

जोतिबाः अरे हमारी सरकार का मतलब है जहां मिले वहां पहुंच जाओ। अब देखिए अतिशूद्र अछूत हैं, इसलिए उनको लिए रोजगार के सारे दरवाजे बंद हैं। मजबूरी में उनको अपनी पेट की आग बुझाने के लिए चौरी-मारी करनी पड़ती है। चोरी-डकैती को रोकने के लिए हमारी सरकार ने यह प्रावधान कर दिया है कि वह थानों में हाजिरी देकर जाएं। ठीक है। लेकिन भट लोगों ने बेवा, अनाथ विधवा महिलाओं के विवाह पर प्रतिबंध लगा रखा है, व्याभिचार के कारण उनको गर्भपात व बालहत्या करनी पड़ती है। यह सब हमारी न्याय पसंद सरकार को खुली आंख से दिखाई नहीं देता लेकिन उनको मांग-रामोशा लोगों पर निगरानी रखनी शुरू कर रखी है। यह बहुत हैरानी वाली बात है। क्या हमारी सरकार के लिए गर्भपात व बालहत्या पर निगरानी रखने की बजाए मांग महार जाति के लोगों पर निगरानी रखना जरूरी है। अरे भट लोगों का मतलब है थोथा चणा बाजे घणा। जो लोग अपनी बहन-बेटी के बाल काटने वाले नाई के हाथ से उस्तरा नहीं छीन सकते, उन लोगों को हमारी सभा का सदस्य बनाने का क्या फायदा?

धोंडीरावः हां, बात तो ऐसे ही है। लेकिन आप ने पहले कहा था कि सारे शिक्षा विभाग में अव्यवस्था फैली हुई है, इसका मतलब क्या हुआ?

जोतिबाः अगर उस सबके बारे में लिखा जाएगा तो इसकी भी एक छोटी सी किताब बन जाएगी। इसलिए में एक दो ही उदाहरण देना चाहुंगा। पहली बात तो यह है कि शूद्र और अतिशूद्रों के बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षक तैयार नहीं किये जा रहे हैं।

धोंडीरावः ऐसा क्यों है? सरकार तमाम जातियों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए पंतोजी तैयार

करने के लिए विशेष स्कूल खोला गया है। सरकार के मन में कोई खोट नहीं है।

जोतिबाः अगर ऐसा हो तो मुझे यह बताओ कि आज तक जितने पंतोजी है उन्होंने कितने अतिशूद्र बच्चों को तैयार किया है। अब गर्दन नीचे मत झुकाओ।

धोडीराव – सारे भट पंतोजी कहते हैं कि अगर अतिशूद्रों के बच्चों को स्कूलों में भेज दिया तो हिंदुस्तान में भयानक विद्रोह हो जाएगा, इसलिए सरकार डरती है।

जोतिबाः अरे भाई, जब सरकार फौज में सभी जातियों के लोगों को भर्ती कर रही है तो क्या हिंदुस्तान के लोग विद्रोह खड़ा नहीं करते? यह सब सरकार की लापरवाही है। जब फौज में भर्ती करती तो वह सारा काम खुद अपने आप करती है, उनके लिए पंतोजी तैयार करने का काम किसे ऐरे गैरे नथु खैरे के जिम्मे नहीं छोड़ती। क्या उसे इसके बारे में जानकारी नहीं है। अगर जानकारी है तो पहले अतिशूद्रों के बच्चों के लिए पंतोजी तैयार करने का काम के प्रति लापरवाही क्यों करती है, क्यों स्कूलों में केवल भटों के बच्चों की भरमार की हुई है।

धोंडीरावः तो फिर सरकार के पास इसका क्या तोड़ है?

जोतिबाः इसका तोड़ एक ही है, सरकार दया करे और यह सारा काम यूरोपीय कलेक्टरों के हाथों में दे दे, इसके अलवा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि शूद्र अतिशूद्र लोगों का इन लोगों से रोज का संबंध है और वह भट कर्मचारियों पर भरोसा नहीं करते। इसलिए यूरोपीय कलेक्टरों को चाहिए कि वह एक बार गांव-गांव में जाएं, कुलकर्णियों की जी हजूरी किए बिना पूरे गांव में विद्या प्राप्त करने से क्या-क्या लाभ होंगे इस बारे में समझाएं। तब वह लोग अपने होशियार-होशियार बच्चों को चुन कर कलेक्टर साहेब को सौंप देंगे। यह काम यूरोपीय कलेक्टर ही कर सकते हैं, पंतो जी जैसे लापरवाह लोगों सो यह नहीं होगा और न ही कभी हुआ है। एक कहावत है कि 'जेनो काम तेनो थाय बिजा करे तो गोता खाय'। इसलिए आप ही सोचो कि शूद्र व अतिशूद्र जाति में से पंतोजी तैयार करना कितना जरूरी है। क्योंकि जैसे ही अपनी जाति में से पंतोजी तैयार होगा, वैसे ही अपनी-अपनी जाति पर मन ही मन गर्व भी पैदा होगा। इससे शिक्षा के प्रति ऐसी चोतना पैदा होगी कि लोग अपने बच्चों को पशु चराने के लिए भेजने की बजाए स्कूल में भेजेंगे। वह बच्चे बड़े होकर पशुओं के लिए बारी-बारी अपने में से किसी एक जिम्मेदारी लगाएंगे। बच्चे खेल के मैदान में डांडा-गुल्ली खेलने की बजाए अपने पंतोजी के पास स्कूल में पढ़ने के लिए जाने में कोई आना-कानी नहीं करेंगे। इस प्रगतिशील युग में दुनिया के सबसे प्रगतिशील देश अमेरिका में अपने ही भाईयों के खिलाफ तीन साल जंग लड़ी तब जाकर दास आजाद हुए। ऐसे में गंवार भट पंतोजी स्कूलों के अंदर बच्चों को ऐसी शिक्षा क्यों देंगे कि वह अपनी गुलामी से छुटकारा पाएं। ऐरे जब एक भट प्रोफेसर की पगार के बदले छह शूद्र और नौ अतिशूद्र प्रोफेसर खुद ही मिल सकते हैं तो अपनी सरकार इस काम को भटों को क्यों सौंप रही है और क्यों अपने अज्ञानी बंधुओं की कमाई के पैसों को फीजूल खर्च कर रही है। अगर हम अपनी सरकार को इस बारे में आगाह नहीं कर पाए तो इस का दोष हमारे ही माथे पर आएगा। इसलिए इस बारे में भी बताया जाए कि चौधरियों की हवेलियों के अंदर रसोईयों में कितने अतिशूद्र बच्चे काम कर रहे हैं?

धोंडीरावः हां, जहां शूद्रों के बच्चों की देखभाल के लिए ही कोई नहीं हो तो अतिशूद्रों के बच्चों

के नाम कैसे आ सकते हैं?

जोतिबाः क्यों रे, तू ही तो कहता है सरकार कोई भेदभाव नहीं करती, तो इसका कारण क्या है फिर?

धोंडीरावः इसका कारण एक ही दिखाई देता है कि सारी जगह भट कर्मचारी भरे पड़े हैं। क्योंकि आप ने मुझे एक दिन प्रत्यक्ष रूप से एक घटना बताई थी। वह ये थी कि, जिस भट गृहस्थ को आप ने स्कूल में नौकर रखा तो वह दो बार स्कूल में आकर अतिशूद्र बच्चों को पढ़ाता था और किसी तरह की छुआछूत नहीं करता था, किसी के अंदर भेदभाव नहीं करता था। लेकिन जैसे ही भट जी को रसोइया बनाया गया, तो वह इतना पवित्र हो गया कि उसने एक गरीब सुनार को बीच सड़क में पकड़ कर मारा, क्योंकि उसने उसकी हौदी से पानी पी कर अपनी प्यास बुझा ली थी।

जोतिबाः अरे ये भट शिरोमणियों द्वारा रचे गए गीत आज नए समाज में भी गाए जा रहे हैं, उन्होंने अपने स्वार्थी धर्म की वजह से पत्थर पूजा भी नहीं छोड़ी है। अपनी हवेलियों के हौदों को शूद्रों को छूने नहीं देते तो उनको काशी जाकर काशीवासी बनने की जरूरत है। और हमारे निष्पक्ष म्युनिसिपलिटी भट सभा सदस्यों का ढोंग देखों वैसे का वैसा कायम है, शुक्रवार में शिपियों के हौद के एकदम ऊपर छोटा सा डौद बना दिया, वहां से कितने ही भट जी अपने लिए पानी इस्तेमाल करते हैं, अपने पवित्र चाव पूरे करते हैं, नहाते-धोते हैं। अगर ब्राह्मण के रूप में जन्म लेकर भी ऐसी चालाकियां नहीं की तो फिर क्या ब्राह्मण हुआ!

अध्याय 16

धोंडीरावः आप के साथ की गई सारी बातचीत से यह सिद्ध होता है कि तमाम भटों द्वारा अपने झूठे धर्म की आड़ में हमारी भोली-भाली सरकार की आंखों पर पट्टी बांधी जा रही है। हम सब शूद्रों, अतिशूद्रों को अमेरिका के दासों से भी अधिक पीड़ा दी जा रही है। इसलिए हमें भटों के झूठे धर्म को धिक्कारना चाहिए और अपने भाइयों को जागरूक करना चाहिए।

जोतिबाः मैंने कल शाम की ही इस बारे में एक पत्र तैयार किया है, इसको एक दोस्त को भेजकर विनती की है कि इसमें जो भी वर्तनी की गलतियां हो उनको ठीक कर इसकी एक-एक प्रति सारे भट और ईसाई अखबारों को भेज दी जाए। इस पत्र का मजमून कुछ इस प्रकार है -

शूद्रों को ब्रह्मरक्षासों की गुलामी से इस तरह से मुक्त होना चाहिए

मूल भटों के (ईरानी) पुरखों ने इस देश पर बड़ा हमला किया, यहां पर हमारे मूल क्षेत्रवासियों के पुरखों को युद्ध में हरा कर अपने दास बना लिया। फिर जैसे-जैसे मौका मिलता गया, वैसे-वैसे भटों ने अपनी सत्ता के दम पर अनेक तरह के स्वार्थी ब्रंथ तैयार किये और उनसे एस मजबूत किला बनाकर उसमें सभी को वंशपरंपरा के अनुसार दास बना दिया। वहां पर उनको तरह-तरह की यातनाएं दी गई और आज तक उसी के दाम पर मौज-मस्ती करते आ रहे हैं। अब जब यहां पर अंग्रेज बहादुरों का राज्य इस देश में कायम हुआ है तब से बहुत सारे यूरोपीय और अमेरिकी सत्पुरुषों ने हमारे दुखों को देखा है, उन्होंने हमारे कैदखानों में आकर उपदेश दिया कि - "आओ बंधुओ, आओ, तुम हमारे तरह मनुष्य हो, तुम्हें और हमें पैदा करने वाला एक हैं, हमें पालने वाला एक है। तुम हमारी तरह सारे अधिकारों को पात्र हो, तुम भटों के झूठे अधिकारों को क्यों मानतो हो? आदि " इसप्रकार तरह-तरह की पवित्र बातों पर मैंने विचार किया, मैंने अपने वास्तविक अधिकार समझे और मैंने तब कैदखाने के कृत्रिम किले के मुख्य ब्रह्म कपट दरवाजे पर लात मारी और बाहर निकल पड़ा। मैंने अपने पैदा करने वाले के प्रति आभार प्रकट किया।

अब मैं उन परोपकारी यूरोपीय उपदेशकर्ताओं के आंगन में तंबू लगाकर थोड़ा सा आराम करते हुए प्रतिज्ञा करता हूं कि -

पहली - भटों के जिन मुख्य ब्रंथों के आधार पर हमें भटों का दास बनाया गया है, या इस संबंध में अन्य जिन ब्रंथों में ऐसा लिखा होगा, या जिनका इन ब्रंथों से संबंध है उन तमाम ब्रंथों का हम धिक्कार करते हैं। और जिन ब्रंथों में (चाहे वह किसी भी देश के हों या किसी भी धर्म के विचारवान पुरुष ने लिखे हों) सभी की तरह जीने का अधिकार है, ऐसे ब्रंथकर्ता को मैं अपना सगा भाई मान कर उसके अनुसार अपना व्यवहार करुंगा।

दूसरा, जो लोग अपने आप एकतरफा अपने धर्म के घमंड में दूसरों को नीच मानने का आचरण करते हैं, उनके इस आचरण को सहन कर मैं अनपे जन्मदाता द्वारा निर्मित पवित्र अधिकारों पर बट्टा नहीं लगने दूंग।

तीसरा - जो दास (क्षूद्र) केवल अपने जन्मदाता को मानते हुए उसके अनुसार स्वच्छ उद्योग करने का निश्चय कर रहे हैं, उसके अनुसार अपना आचरण कर रहे हैं, ऐसे लोगों को मैं अपने परिवार के भाई समझुंगा और उनके साथ खान-पान करूंगा चाहे वह किसी भी देश के हों।

एक बात और, अगर घोर अंधकार में डूबे हुए मेरे अज्ञानी शूद्र बंधुओं में से किसी एक को भी भटों की गुलामी से आजाद होने की इच्छा हो तो, वह एक बार अपना नाम-पता लिखकर मुझे पत्र द्वारा सूचित कर दे। इससे मुझे इस काम में बड़ी हिम्मत आएगी, मैं उनका शुक्रगुजार होउंगा।

[इस संबंध में समाचार पत्रों की तरफ से फूले को जो जवाब प्राप्त हुआ था उसको अलग से नीचे छापा जा रहा है।]

5 दिसंबर 1872
पुणे, जुनागंज नं. 527
जोतिबा गोविंदराव फुले.

पत्र का जवाब
जनकल्याण की इच्छा के साथ
पुणे, शनिवार, 4 जनवरी 1873

हमारे प्रसिद्ध महाज्ञानी, महाविषारी और महा शोधकर्ता व दार्शनिक जोतिबा गोविंदराव फुले का एक बड़े गृहस्थ की सिफारिश पर एक अप्रयोजक तरह का आत्मस्तुतियुक्त और ब्राह्मणों की निंदा करने वाला पत्र हमें प्राप्त हुआ है। इस पत्र को हमारे समाचार पत्र में जगह मिलनी असंभव है। इसलिए पत्र लेखक फुले से हम माफी चाहते हैं।

शुभ वर्तमान दर्शक व चर्च संबंधी विभिन्न संग्रह
कोल्हापूर – ता. 1 फरवरी 1873

पुणे के स्थानीय समाचार पत्र इसको अपने पत्रों में प्रकाशित नहीं कर रहे हैं इस लिए यह हमें भेजा गया है। इस पत्र को हर जगह प्रकाशित करने की इच्छा मि. जोती गोविंदराव फुले की इच्छा है, इसलिए इसको इस अंक में स्थान दिया जा रहा है। यह पत्र हमारे हिंदू दोस्तों को थोड़ा-बहुत बदनामी करने जैसा लगेगा लेकिन इसमें जो विचार व्यक्त किये गये हैं वह बहुत ही प्रशंसनीय हैं, ऐसा मुझे लगता है। क्योंकि वास्तविक रूप से ब्राह्मण पहले ही मानते हैं कि जातिभेद नहीं है, ऐसे में मि. जोती ने बिल्कुल ठोक बजाकर कहा है कि वह उनके साथ रोटी-पानी संबंध रखेंगे। ऐसा कहने वाले लोगों की देश में बहुत तीव्रता के साथ जरूरत है।

धोंडीरावः आपके द्वारा दिए गये सूचना-पत्र को मैंने पूरा पढ़ लिया है और यह मुझे बहुत पसंद आया। मैं आगे से इसके अनुसार ही अपना आचरण करुंगा। आज मैं हजारों वर्षों से भटों के झूठे व यातनादायक कैदखाने से मैं आजाद हुआ हूं, इससे मुझे अपार खुशी हुई है। इसके लिए हमें सदा आपका कर्जदार रहूंगा। सारांश यह है कि आपके बताए मुताबिक

हिंदू धर्म के झूठ-फरेब के बारे में मैं सब कुछ जान चुका हूं। लेकिन जिस भगवान को हम मानते हैं उसको ही सारे ज्ञानी लोग भी मानते हैं लेकिन अगर वह सर्वसाक्षी है, सर्वज्ञ है तो क्या आज तक उसे हम शूद्रों अतिशूद्रों की हालात दिखाई नहीं दी?

जोतिबाः इस बारे में मैं फिर कभी तुम्हारे सामने इसका खुलासा करूंगा। जिसको सुन तेरे सारे भ्रम दूर हो जाएंगे।